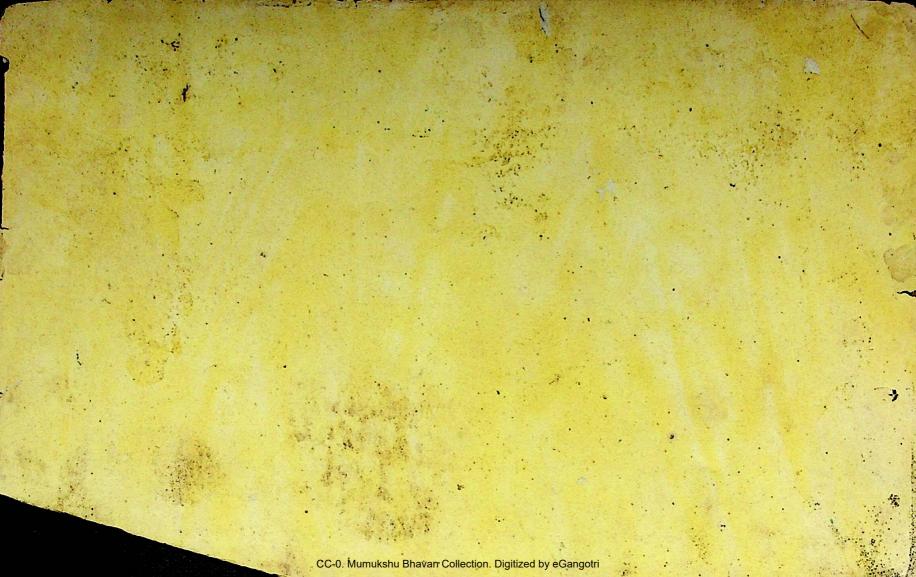
9.9

रप्र

3.06 MG

यज्ञार्कमीय अन्यास मर्भना॥ सङ्गाङ ॥





यकुर्तिम अस्माअम् अली॥ ३॥

उँ इर्अर् ॥ श्रीमात्म भाग्ना ॥ भशामवः एकः नवा डीर्थानम्। श्रुक निनः । भव्यानम् मित्यन नामों ने इन्हिल निर्मेल ग अय धर्विमेग मकाम आव्यक्त ॥ "अक्राम विद्रिः॥" ज्यामी विश्विमाम्भार ॥ विशाल कार्जिक मार्भनीति भात्य काल्यत वा ॥ वर्व ठाव्या य मीलभाम मकाम मका मिका सिवर दिवि ॥ यव मिका मका विक्रोगंगा पकार भग भागमभग था कर्यक ॥ जिला जिला वर्षिक कर्यग्रम् ॥ यथा भारक्षाका जी आत्मे आग्रिक्ड कूर्याए । ज्यादी मूर्स मूर्सिद्धा भाउर्पप्रातः कृष्ठ निक किंगः प्रत् देशाया आग् अज्ञाम्भाम जमनज्ज भारे जाताज किलिए क्षण भारत मिलाल क्राम वा भिष्ठा रिनियं भेरा के की लाखान, हिस्तांद ॥ अवा वासमें प्रदेश देनातं स्था त्रावः क्रियाः भंशाकी जभाषात्र विश्वकृषु आठम कृषाक्ष्मिः भार्तर । उत्राक्षिक कृषामिन् अर्द्धमञ्जू मञ्जूनण-वात्रिणामिका व्यक्ति ॥ जनः भूकीर्यं निवाद । अनेवानि क व्युक्तार ॥ वात्रायेने निवं दर्भाः कुलात्यकाः रेकामि अन्यूका ॥ भीलाग्रात्म वार्मालक्ष करला वा त्मरकाः मूजवार । एकः स्वयम माया किया में सिवाहन श्रक्त भक्ति पूर्णाए ॥ अस्था ॥ वं कर्पत्य रिमान् सम काइ क्र मान अवंग्रह्म सक्राम जारने क्रिक्टिक में जार कि के निकार जवत्या रिकिय का उंभू भार रेजि विकाद ॥ उँ कर्ण कर भिन् भभ करिक भाग भवभर म अकाभ ग्रहने।

विक्रिकार्थन भागानिक कथानि नाक्षि जवत्सा र विक्वक ॥ उँ क्षेत्राचा विकास ॥ भूनः। उँ कर्य कि र जिस्से अभ कि विकास भाग भव्र भर्ग अक्राम प्रदेश कि विकास के साम कि कि सिस् अव खा र धि क्वक । उँ श्रास्ति विकारित वाकाना उँ श्रास्ति रेखा रक्षणवाः श्रास्तिः मूथा विकारमाः श्रास्त्र श्रिकेताधः श्रास्त्र ता वृद्यमि द्वापू ॥ द्वाः उं ॥ ग्रामानासा भर्ग भाविष् द्वा भार शियाताला शिय मिलिए इवामार निधीनाला निधि मिलिए इवामार वामा मम ॥ भारम जाति गर्नथयां व्रभ जामि गर्नथः॥ ।। व धकार्याला दृत्र भूति दिवसु भूष्ठभण्ले वि তি ॥ इत्रश्रेय फ़ालिशः फ़ालि (त्रकः ७ त्या अनः শিव अर्फ ल्या अस्त ॥ १। एनक भाग भाग भं जी खिला याळ कृष् जि विन्राथयू शिताः॥ यम सूर्यन यक्ष भन्नः सजा जा है है जा जा के विज्ञा भनः विविधिक त्मा अस्त ॥ ७॥ ७७: उँ ७ दि स्थाः भव्य भार भारा भगाति भूत्राः दिवात हम् वाण्छ ॥ रेड माविश्वा। उं ७९ भारिके काम् ॥ रें अचन हिल एप में कि वैपाय दिया के वे से की नाय . प्रथा नात्वा शम्बन्न वा गृष्ठीचा ॥ ॐ आदम्कादि अभूक भाषि अभूक आपक अभूक जिल्लो जनाकालाम् वं अकृतिन मर्थं काधिक वार्षिक भागिक आना जान कुल अकृद अकृतिक्रा নিচ্ছা কামাকাম বিহিতা বিহিত সুজা বুঞ পীতা দীত উদাসাতক লফুপাতক সঞ্জবীকরণ অলা শকরণ জাতিপ্র"শকর প্রকার্ণক আংশারিক মকল শাতকানা খধে শ'খাবিত পাতকানা বিনা भार्य द्वामभाद अलान् कल्य सक्केर्य मल्यासन्भू लप मान कल्य आग्रियम् करितका शिक्रिक्ति अधानक ल्य हार्ड।। विश्वक त्यार्। यार्ड माठका दीना भावाक व्यायन क्रिय कार्य क्रिय कर्य कर्यक व्याय

प्रती यज्ञास्त्रम् अनुग्रम् प्रवीत्रा । ।।

অথদানী সক্লাম নিদিত্য র্থণ অনাশ্রমীনা চতু: কৃদ্ধ বিধানাং ॥ আশ্রমিনাক্ত এক কৃদ্ধুমেব বি वीगांख ॥ जर अमाने कालायनः ॥ कृक्षिक क्षूतः कृता भावनार्यभा ना स्रमी। आसमी क्लिस कुछ् (जना स्नीत्माण्यण वास्तर ॥ केविवयनार आग्राक्षिण अस्राध्न त्याप्या चिक्किय के भूका स्मित्रीना नक वस के के बेब के मार्ग किया, कार्य के ।। जाया मार्ग के करें के के विद क्वती।। किया के ।। भाअभिना छ ॥ भून छैन्नसुत्रं भाषापुत्तिक अभूकलाव अभूक त्रमग्री भभक्तिकथाने भरभर्भ अन्याम प्रशासिक्क थे पक्ष एक प्रकृष्ठ नाम भागक्र गार्थ जम न्कल्य पक सन् भूष्ण मान कम् भागान्कणभर् कर्तिक रेजिभ केल्भाः॥ अना अभीना छ ॥ माभाष्ट्राचिक अमेक पात अमेक प्रवस्त्र समा मन क्षिक्र माने भयाप जामका शियकि, क्षे कृष्ट्वाच्यक छाडि कृष्ट्वा भारतेक रात्र भूलण द्वारम कार्था भारी भारत वार्ष अप्यान कार्य आयोगिय भक् कार्तिकः। रेडि भक्तायां॥ अथा अप्रार्दित भक्ताय भूकः भावे । ए साम्रिय रेखा एइयवा वेकामिनाले ।। जन: जे भवाभाता व जिके जि ज्वनानि ठकू में मार जिया । निक त्य भीर-रेव लाति भव यह ॥ रेडि भक्त भारेए॥ जला निक्तिलाए भर्म पूर्णिए। अब्दिनाव शाव पूर्णिए॥ रेणियायानिक ए भगाखा ॥ उठः भूनः भाषा छोठवञ्चापिकः भविद्यापा ठंग भूकात्वा भूनः भागान्छ व्याभ कृषा आवि

CC-0. Mumukshu Bhavan Collection. Digitized by eGangotri

विभूक मिकलोए प्रार्ग प्रक्रिया वधावन विभू निह्माळा वना मिक विशा ॥ अषः भाक भाव भाविष्ठ

ত্রে য়য়্র্যুন্থা লাগান্তরগত্ত, ॥+ ইছি মঞ্চনক আেমল্র, সমার ॥

ত্রে য়য়্যুন্থা লাগান্তরগত্ত, ॥+ ইছি মঞ্চনক আমার, সমার ॥

ত্রে মার্যুন্ধ মঞ্জনক আর্যুন্ধ আর্যুন আর্যুন্ধ আর্যুন্ধ আর্যুন আর্যুন্ধ আর্যুন্ধ আর্যুন্ধ আর্যুন্ধ আর্যুন্ধ আর্যুন্ধ আর্যুন্ধ

পিতর পরিতত্য শার্ম কুর্যাও ॥ পৌনক: বেমান্রে মাত্রর্থ মারে পি অহিংবচনানি অস্টে শারারি भामिकानि नामीभूग विधान भाक कूणए। उए भारीभार्। त्योनकः । तेराकेरार्धकरकेर मिक भान्यायवा प्रधाद मिन्धाद भानुनायाय स्था। अकिक भिन् दित कृषीए अकिक आक्रमर्थ विरं। नामीभूथ विशासन विशित्यस अकीर्जिला ॥ यमि नात्रमभातिशाका भनिश्मादि भाजाय रामि भाक अक ताक जगमि मिरभूताल निर्मेश भिक्की भाजा भर अकि दे कि कि । भाजार मास मास कर्क जमर ॥ भाकार्भभाद ॥ मिलता धर म्हल्मु जय भाजाभारा क्षेत्र। अवित्माधने कर्जक वित्मधा नवक बादि ॥ के विवयन ॥ महास्मेन आकृतिक आह भाक भाक डेक अर कर्क किकीसीया जर्न मिकार्य नथा भाष्ट्रमक्का नव मान्नीना भाषात्र अ वकाननीय भक्क खा (क्यं: । यमान अके मयाह आमह अमान यज्ञाकीय यह भाष्माक निम्य निम्य निम्य कर्यकाथर शेष्डि विश्मिशः॥ आजा आह्म। आजा भिन् भिनायम् रेष्डि नात्रम्भतिद्वाप्रकाम्मिमिशः यथ भिव प्रवाल भि। निर्मा अस्ति। यकान नीय भक्ति। यक प्रान्यू इक्किए। कारिय गरू आवा भारत आंक्या अनुवाच्या भव्याच्या केव्यक काळिन में ।। ।। ।। ।। ।। কিন্ত্ৰ অক্টো আৰু প্ৰথানিক:মিক্স ॥ ।। তাতা দ্বিতীয় দিন কৰ্ত্বক তদাৰ ॥ ভত: তৰ্মণ বিধি ম ज्जः कर्जा आठकं याग् आजः क्ळामिक विधाग नमामी गत्रा भाषा क्र निक कियः भन् आध्रात्मा नृत्रा यत्वामवीवि यवभिष्ठ जाला आक्षापवनाना अभिने क्रिणे ॥ ७७ भारुम मुसिवार्य मूर्किक भारतना कुर्फाए॥ उँभूर्यः त्यात्मा रेजामिक भिष्ठा। ७७: क्याजिल जलात्मामाय मामामू द्वारण मभ करिया

भाग अत्रथ रूथ अञ्चामाश्र श्व आह त्ववाचा वर्मनभर् क्रिक रेकिमकल्य ॥ त्वादीव वार्य मास थातामक गृहीचा धार्थमा ॥ प्रमण जर्मगामि । प्रमण कर्मगामि । प्रमण जर्मगामि ॥ प्रमण कर्मगामि ॥ प्रमण र्भगाम । जें भार्त्याई जर्भगाम ॥ नव मिनाएं ॥ जें प्रवर्धी अर्भगाम । जें वक्षि । जें ताम्वी । ॥ नव श्रुवारम ॥ ঐবস্ ।। ঐক্দা ।। ঐআদিকা ।। এব চতুর্বে। এসনক ।। এসনকল ।। ঐসনকল। ा। ज्व भक्षा ॥ उँ स्थिकामीनि अक्ष अम् पूजानि ७०। एँ ज्वाम्य ठक्ष्वामीनि कत्नानि ७०॥ एँ ठक् विध त्रुविधामः ७ १०। वर् १८१० ॥ ७ मिव्यं ७ ०॥ १ मिवामर् १० । । वर भक्षा । वंभावामर् १०। उँ अमाजामन् १०१ ७ एक अमाजामन् । यज्ञ किमीय भाक् भाक हेक एँ माज्य कर्मणाम यर उँ मिलामही ७ ।॥ उँ अभिजाधरी ७ ।॥ यर भाजाभरी भाका मि । उँभाजाभरी ७ । उँ भुभाजाभरी । उँ रुक्त स्थाजाभरी ७ ।। नवस्य । उँ आक्राम ७ ७। उँ भिन्त १ ७। ०। उँ भिन्नाभर ॥ किट्यू आन्नं भक्त उँ आन्नाम ७ ।। उँ अनुताकान ७ ०। उँ अत्रभाकान जर्भशामि ॥ जला मकिलाए भाग किमावधातन श्रितिर्धन १०-क्षा अर्या नम्भूक गृह्मायक के कि कम्म अभाम्य ।।।।

जला गृष् गाष्ट्रा भारते सक्ताल भाठक सानाग्राम गर्थ कृष्य साक्षेत्र दक्षाम्य निवालयासे गाष्ट्रा श्वात्तवजाः म्याए ॥ उँ नाल मासम्प्राका भक्षात्या नायात्वा त्या नथः॥ रेकातन नायः भन्यक ॥— जला भए भारतः भाविता ज्य गुर्वाभनः भाभाषा जर भावि गुरु भाविष्ठभावि भूत्येन वेभावितावित्र भामा निडिवर्णक एक्ववंग रेक्ष ॥ उत्वादम मान्मिरिक भेड़ी वा एक त्रह । व भारेव्यार आसा । उँभाष्ट्र इथात्म ॥ अर्कशिकात्मा अर्च नु । उँ अर्कग् । अल्डामक्रे म्रक्षभान्य वस्ताना

कारामिनि एक भक्त मिक्न जानू शृंखा मर्छए। उँ छए भक्त एक वामि अभूक भाषि अभूक भाक्ष अभूक जिल्लो अभूक लाख अभूक (म्व भाक्षी सम कित्रिक्षमान भव्म दूंभ अक्राम ग्रहण क्रिक्कण् गर्स खेन जा लर्गणण्य नाह्या महत्त्व नाह्य क्रिक्स क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक व्यक्त भर्वा । एक उँ श्वा १ भी कृष्य । भाक प्रथा विहिन एक कर्म कुत । एक उँ प्रथा জানত: করবাণীভূতের ॥ ততাে গ্রহো উত্তরতাাাে আতার্ফামন সঞ্চাম্য তর্মার -आठार्य देनात गायिषा गन्तामिलित्यक भाभामू चिक् भभकात्रक्रभाने नत्य देभभक्षा आअ अकल कर्या ठाक्ति अ अर्क त्मान जी अर्थक प्रव मार्याण अंत वृत्यां दिन तं अर्थ आठार्कत्वत उवस्थर् शल । आठार्क उँ शला १ भीक्य उत् ॥ मिक्य उँ यथा विहिन आठा र्थकार्यक्त ॥ आठार्थ उँ यथा फानजः করবাণী जूणतः ॥ छङ्कत्रत्। अयाखः ॥ ।

उठ: मामाना के कुर्या । उद्यम भ्रास विकाल १०° इतिभ विलिय उद्यम माधान भ्रम्म ॥
अठ: मामाना के कुर्या । उद्यम भ्रास विकाल १०° इतिभ विलिय उद्यम निर्मान अधान भाषा ।
भाषा अं नम हे आखाल जलाना भूर्या प्रमान कि अधान भाषा । अधान भाषा भाषा ।
निषाम अं नम हे आखाल जलाना भूर्या प्रमान कुर्या मूर्य भाषा । अधान भाषा ।
कि वामाना विकाल कि भाषा । निर्मान भिन्न काराति जला हि स्व ॥ हे कि वार्यमाना ॥
कि वामाना विकाल कि भाषा । निर्मान भिन्न काराति जला हि स्व ॥ हे कि वार्यमाना ॥

थक्तर्सिर्मिश्रकाभन्नि॥ ४॥

भगरवन गञ्जभूक्मामीन जला निः क्षिम्म व॰ देखि धन् भूमि भ्रमर्थ उँ ब्रिडि म्माधा जसा करे रेखि भक्ति। जन्माना दार्भ प्रका द्वाराप्ताः मुनारा ॥ जन्माना ज विश्वारं नमः। जैभ श्रामाख्या नमः। १ मत्रभूति नमः। १ वित्या नाम् नमः। १ तक्त्र भानाम नमः। १ गश्रात्म नशः। उँ धभूतात्र नथः। उँ अञ्चाम नधः। उँ वाक्षमूक्षारं नथः। उँ वक्षाल नधः। उर्जा भूगभाक्तन विक्रम्कीयलाकत्मय विकान विभान हे एमार्थ असाम कार्षि अस्तिन प्राणनात विकान विभान् एभार्य वामभाकिक्षाज्यत्वन त्याम् विधान् एभार्य काएकि भन्धशाप्त विकी त्रणानामाय उँ अभभभक्त ए पूजा य पूजा पूजिम फिजाः। य पूजा विश्व कर्णत् सुनमहत्र मिशाफ्या । रेकातन नायाह भू म्या त्युक अर्यभाग विकादि । अथाअन माक्षिः॥ अम्यथा अल गक्ष भूत्वन हीं आधाद माकि क्यानाध्याम नमः। रेकाभन भण्युक उक्का मारे । आमन मक्स त्यार स्कि श्रीष्ठः भूडल हमः कृत्या दिवल आमताम विभारत वितियागः। उँ सृषिज्या धृजालाका त्विष्ट्व विक्रुनाधृजा । प्रक्ष थात्रं भाः निजः भविनः पूर्व ठाअनः। हेडि अन् भिष्णि जेभविताए। ज्ञः भ्रेटास् र्युन वात्र ग्रास्ट्रान्यः। भत्रम छक्त्या नधः। भत्राभव छक्त्या नभः। भत्रामि छक्त्या नभः। निक्काले गत् भाग्रेन्यमः। भृति भूणभूकार्य देखेत्ववार्य नमः। ७७: किंकि मक्न गंक्रम्काक

पश्चिम् असाम पूर्णन ॥ ने॥

कत्त्रा अ लास छेति के काल जानायं प्रशास्त्रा हिला कि मानिश्वक्र के के ति हैं कि जगधात्या याद्रिश्चकात विध्य पूछ छ कि पूर्णिए ॥ जन्म्या आत्क देशन करते कृता ला १ र रेजि भारत जीवाळाव मैमकलिकाकात भूलाशात छिए कूटालिका अर भूथूया वर्णमा भूलाधात भाषिकान भानिभूतका नाइड विक्षेत्र आष्ठाम्य छट् छकाणि जिल्ला मित्रा वाञ्चित्रार्थाभूय अनुभु म्लक्मल किलिकानुगीय भव्याष्ट्राति भे थाक छत्येव भृषिक भ्र जा वाग्राकाना गञ्जकमत्रम समर्थ नास्त्राभिका जिल्ला ठकू शुक् त्याव वाक् माणिभाम मागृभस् প্রকৃতি মনো বৃদ্ধা ব্রজার শিষ্ঠত শঙ্কুর্বি॰শাতি তথানি নীলগানি বিভাক।। যামাত বাযুবীজ शृंध्याणे वाभनामा भूटि विक्रिस ७४४ साद गवात जामन वागूना पद्धामूर्य नामा भूटि वृष्ट्वा - उग्र ठलु: शक्षितात जामन क्छक कृषा वायक्किम् कृष्ठवर्ग भाग मूक्षिण अन्तर्भ अन्तर्भ उभ द्वाचि भम्वात जामन मिक्किन नाभाश वार् (त्रहास् ॥ ७ एवा मिक्किन नाभाभूटि ते मेडिना वीज तकवर्न विक्रिक ७३० काड् भवात प्राम्न वायूनाई आकृष नामा मूटी शृषा ७३० ठषुः अकि वात जानन कूछक कृषा वाम क्रिक् कृष्ठा वान मूक्तिन (मई क्रिका ७३४ मान गन्यात जानन वाभ नाभ या वार् विठाय ।। है देखि हस्वीज शक्त वर्ग वाभ नामिक्या थाला ज्ञ भाग मान जनारि हन्द्र नीवा व देखि बद्धन शिक क्षत्र वर्ग कावा ज्या ह्यू: धारिवात प्राप्त ज्ञाए नलाटि ह्याए गालिज भू थ्या भावका वर्गा जिक या अध्य पहुर वितह थ

भन्द्रलिमि अञ्चार्यम्थर्ग ॥ >०॥

न रेंछ भृषी वी ज भी उर्न (तक्क वातान शाषा ७३० दानि अन्यात जामन एक मू रृष्ट विचाय मिक्तिन वागु व्हाय ॥ ७७: त्या वृद्धि कूलकुलु लिनि जीवाकार्यिक थ अश्वभागभाग प्रवादम आखान अयग्र ॥ प्रकाहिभमा छ ॥ जानां भाक्का मारा ॥ अभ भाक्का वर्गभ अनार्थि गारात्री इतमा भाक्का भन्भति त वडा इल्ग वीजानि भ्रताः मकत्या भावृका लिभिकात्म विनित्याभः। नित्राम उँ व्यक्त भ धारा नमः। भूत्य उँ गायंथी क्नम्रम नमः। कृषि उँ भाकृका भत्रभुत्कि (मनजारेश नमः। प्रत्य उँ यक्षानिकान्यः। भानत्याः उँ श्रात्यः माकित्यानयः। अर्थात्र उँ अक्राशिकाषु प्रत्य रमे नमः॥ के शिक्षाकियानाः॥ अज कथकामा के किया । वस्ते जा के के मान्या है। जा प्रकृ ॥ २०७० व. व. व. व. प्राधासकाका है। । त. कं कि व. व. व. व. व. व. व. व्याखाता. (वार्के ॥ अन्याना कार आ असंभाग्याः। हेलासि॥ जाता कायन ॥ मधा में भक्षामासिमिति सिन्यः भूथादाः न्याक्रवकः अता । जाभात्यो लि विवह हन् अकला भात्रीव जूनस्त्री । भूषा शक्रान

यञ्चार्किति अञ्चात् अ नवार्ष ॥ ३३ ॥

भूषाठा क्लाअ विकाश व्याभूके विश्वां विवन स्रा विवय स्रा विवय ना विवय ना विवय ना विवय ना विवय ना विवय ना विवय न इंटिकाष्ट्रा जाजा वर्गकाम कुर्यार् । यथा ७० नामा लागारे । आ॰ नामा भूमवृत्व । में नामा मिकिन क्रकृषि। के नह्या वाम क्रकृषि। उ॰ नत्या मिकिन कर्ला। ड॰ नत्या वामकर्ता। अ॰ नत्या निक्कित नाआग्रा । अर् नह्या वासनाआग्रा । २० वासा मिकित गाला । ३० वासा वासगाल । २० नला अस्त । ये नता अस्त । ये नता देशम्स मंद्रों। ये नता असा मस मंद्रों। ये नता अकराक । आः नत्मा भूत्य ॥ क नत्मा मिल्नि वाक्स्मूल । या नयः कूर्णात । मा नत्मा भनिवाक्त या नत्या अश्रुलिश्ला । ४० नत्या अश्रुल्या । यद ठ० नयः। ह् नयः। द्व नयः। द्व नयः। द्व नयः। द्व नयः। याभवाद्वभूत्मभक्तार्म् ॥ यतः दे॰ नभः। ठे॰ नभः। ५० नभः। त॰ नभः। मक्ति। भामभूतम अक्षायाये । चव, वे, परा: । रो, परा: । में, परा: । प्र, परा: । पार नाम श्रीता स्थिति ॥ चेर् भिक्ताः मिक्कित भार्त्ति। क्वत्यः वास्त्रभार्त्ति। यव्यस म्हाक्षे। अवसः वास्ति। सव्यसः केत्र्ता य नामा कृति। त नामा म्किनवाद् भूला। ल नमः क्कृति। य नामा वामवाद्भूक्ता। भ नामा क्रम्थादि पश्चिमेश्वरतः ॥ विभाष्म क्रम्थादि वाश्यक्ततः ॥ अवभाषा क्रम्थादि पश्चिमे भारम । द् नामः ॥ उम्यया ॥ अ॰ आ॰ दे॰ दे॰ दे॰ दे॰ दे॰ से॰ स्वा क्रया मिना । देख क्रिम्मामिश्य ॥ अखादले

1 35 11 12 Later Later 11 25 11

ता ता स्थान मान निया मक्त्रित्स । हृद्ध से से का दृ कि है , पत्र इति वाम देख । निं कि की में कि के कि के कि की की में कि में कि मार्थ । में में सं के के में के में के लें के नम देखियामाना । उठः अभ्याम कर्नामा क्रिक्श में अमामिका मा अर अर केर्या नमः। - बेरे। W: कराजल श्रक्षाच्या असाय करे॥ नव क्षम्यानिय न्यात्मर्॥ जां स्रवातन सानायम प्रकृषा आजाता हराय मीठेकाम क्षेत्॥ इत्यु आधार मकत्य नमः। उ अकृति। े पूर्वाय । उ स्थिति । उ कीदमभभूदाय । उ त्युद्वीमाय । उ भनिधन माय । उ पत्मवृक्षाय । उत्रुखिनकार्य। मिकिनभूत्स उंधर्माय । तामभूत्स उंधायाय । वात्मार्म्मण उत्रेताएय । मिकिला संभूत उँ ने अर्था । भूत्य उँ असमीय । वासमार्य उँ अकानाय । नास्त्र उँ अवेशकाय । माकिन भात्म वे अतिमक्षाम् । मून सम्या वे त्याम् । वे भन्नाम् नमः। ४० अईमन्द्रनाम् नमः। उ लायमत्तारा नमः। म वार्षितत्त्वारा नमः। म मवारा । व वस्ता । क वस्ता । जा वा जात । भ भव्याजात । क्षे जातावात तथः। भमक्ति क्षमा भक्षक भूर्यापि कलावु -आ अभारों नमः। में भागाय । दे जगारों । ये भूकारों। ये विस्कारों । ये निस्ति । उँउ° श्रू भ्रजारो । प्र विकाशः भगान्त ॥ एका क्षिक्तगार्थः नमः । मूनर्थार्थः उँ मत्रभाष्यात्व कम नाभनार्य नथः ॥ वेकिनाभः भगान्तः ॥ एका क्षिक्तनाभः भन्नशः कूर्यात् ॥— वेकि ॥—

यजुर्कि मि अक्राभ मिने॥ ४७

जा गलमादि प्रवण भूज्य । जला लोकि खाड्म आवृका भूजा कूर्या ॥ अश्विराठ न ॥ उंदर्शकाम् धम कविक धान भवध इभ अम्राभ कर्याम् शृष्ट अमला सिम लोर्कादिका जनभाकृका मूजा वामार्श्वा अभाजना भूक भूक जमानि मूर्कक आसे विश्वमा स्मिक भाक जाक्रने नामीभूभ विश्वता भाक्ष कर्याने उँ भूगाव प्रवास १ विक्वस रेडि विर्वाह ॥ उँ भूगा इ॰ वं भून्धाइ॰ वं भून्धाइ॰ हेन्डि याक्काले दाला। कर्णा वं कर्णकामान् सम कार्त्रक भाग भराभकाम अक्रांश क्यांश रूंच अनाना सिन्न लोखीमि (काड्ना भाव्का मूजा वामा बाह्य अभावना गुक्र भूफ जमापि मूर्यक अछ विध्या पूर्विक बाई ७ व्हर्ण नामीय्य विधिना बाई कर्यानि उँ श्रुश्चि उ वाला १ सिक्व का रेखि थि: पंश्वसि पंश्वसि ए श्रीसि हे सिक्य वासानाः॥ कर्ण एं कर्ण वर श्रीमन् भगक्तिक आणे भत्र देश भन्नाम कर्मा अ पूछ भगगा सिम लोकिपि खाड़ न भावुका मूड़ा বাসাধারা সমপাতনাথু প্রসূতি সশাদি পূর্বার্ক অস্ট বিধমাতুদ্দিক আন্ধ তক্ষেণ নান্দীসু অ যিধিনা আন্ধ কর্মানি ঋদ্ধি তবজে ২ ধিক্রবন্ত। বৃতি তি: ও ঋন্ধৃতা ও ঋন্ধৃতা इिंद्याश्वनाः ॥ उँ श्रुष्ठित रेखा वृक्षयाः श्रुष्ठितः मूक्षा विन्धवमाः श्रुष्ठित श्रात्का १ विकेत्यिः সাম্রিনো বৃহস্পতির্দ্ধাতু ॥ ওঁ গানানারা গণপাতি ই বামারে প্রিয়াণারা প্রিয়পতি ই বামারে বিশ্বামার প্রমানিরা নিধীপতি ই বামারে বন্যোমম ওঁ সৃষ্টি ওঁ সৃষ্টি ওঁ সৃষ্টি ॥ বুলি ॥

एकः भ°कल्म कूर्याए॥ पं जर्भिन्युकार्य कुमाय्य जिलकल मूक्त कुलाओ द्वी जल मूर्वामा न थया लात्यात्रमञ्जू वा एशेवा ॥ उँ अक्ट्यामि अभूक्यामि अभूक्यामि अभूक्यामि अभूक्यामि অমুক্র সেত্র: শ্রী অমুক্রদেব শর্মা মম করিষ্ণমাণ পর্ম রংস মন্ত্রগম কর্মাপ্রপূত মণ্যাপিস लोकामि स्वाउन भाष्ट्रका मूजा वत्मां भारता अभ्याजना भूक भूक प्रमामि मूजा मूर्वक अक्षे विश्वा क्रमार्थिक आहा अस्ति। असानीभूग विश्विम आहात्म द कविष्य देखि अकल्या ॥ उपल्लासिमा न्या मिनिकित्यए॥ उं भूकः आधा यथः काणः अत्या न्या ग्रहक्याः। भवता मिक मिर्जिन् कामा अहता १भवाः आका भाभनभाभाग कणभ्यविष् अब्रिधि रेखिमाटो । ए प्रक्राधाला प्रम् দৈতি দৈব তৎস্কাস্ক তালৈবেতি দূর গাম জোতিয়া জোতিরক তন্মেমন: শিব সঞ্চলেমাস্ক । क्षि॥ ७०: आर्थ्या अस्वम्भ यय शान्यः वा मृत्युत्र भागमित तार्मित आकृताः मृत्यार्। जम्मवा ॥ भगन्त मुक्नाक्षण भाषाय उँ भहा शर्म भाजि अह्यात्वा म्याचि उँ पूर्वः अर्थहा शर्मामाल हेशामक देशामक देश जिसे देश जिसे देश जिसी देश आहा शिला-य देखा वाका अस यथा नाकि मुका गृहाने। वेणा दीना भागा वर्षे । अ वेन्याभन भवरंग भवरंग नथः। भरकाभवादंने। अभरको त्रर्गक त्रकाण मुजारार ॥ रेडिकामने राया माका महातिः भ मुक् क्रम् रेडि विमर्कारार ॥ लोकिमि मुजान पू जलभित्राची अश्वम्य येवशान्तेः स्वाङ्यजाम भूथक् मृथक् निर्माय शक्कक में नापार्क कामा प्रायमियाः निर्धांत ॥ तमा सम्मात्मक निर्मा गर्धां मा मार्थित । यू प्रायं मार्थित ।

भारता नियाबि के स्ट्रिंगः भुः तिनिविभाज्य हे द्याग्य हेशा गढ़ हेशानिक हेशानि हेश भारति है। ज्य । उँ तथ गञ्जः (जोत्कियात्य नयः । रेकिकत्यने मण्युक ॥ नविष्यात्य । नात्य । त्यथात्। उँ भावित्क । उँ विष्णाहों । उँ प्रमाहों । उँ प्रवास । उँ भ्रशास । उँ भाकि । उँ मृत्ये । उँ जूकि । नव उँ आका प्रवास । उँ कुलाप्व जारं । नयः ॥ रेक खन भे भूका । जबः कमलाहि विभक्षियर् ॥ जला लायया भाष्मकाग्रा जिलो भारक्य उन्देश्रामावा पृथक् स्थक् अद्यवासिता (स्था प्रवीद्य थ्यान निमार्॥ তর্থথা॥ ওঁ বসো: প্রবিশ্রমানি শতধার প্রসা: প্রবিশ্রমানি সর্ম্বধার । দ্বস্তা প্রবাদ্ वाआः भवित्यने माण्यात्वने भूष्टा काभ्यूष्ट्व ॥ देलिभाक्तने भष्ट भक्ष वा शाजा भूखन मुमार्॥ ७७ धाअ थात्राम् १ (हिम वाज्याका देश गास्त्र देशान्त देश त्वाता वा १ (हिम वाज्यभाव नधाः। रेणानन गन्नामितिः अ॰ श्रुका ॥ उँ ठिमिताक नम स्कुण गाम ग्रास् भग्नामात् । स्कूर मिमाभान् म्वा उ किर्मिताक नत्या १ अल ॥ बेलि धानाम उँ किमिताक राभा कामाश्वालि विभक्तिएए ॥ उल आयुक्ष भक्ष प्राप्त ॥ यजुर्किमिय आयुक्ष भक्ष जल्ल ॥ उँ आग्नितायुक्षान् अ वनभ्गाउतायुक्षा १४५ श्रा -आस्मा आयुम्राङ कहाथि। उँलाश आयुम्रान् अ उसिनि हायुम्रा एउन वृत आयुमा आयुम्राङ कलाश्चि। उँ अभा थाभूषा वाकाली थाभूषा ङाखन जा जाभूषा कलाश्चि। उँ प्रता थाभूषान स नार्धिया दिः ।

थजूर्वामिअनुग्राभ मन्ति॥ १७॥

ठल: आक्ष क्राहि॥ प्रसंभागाता भारिका ॥ आठका मिरालिक्ष भागात्राक वा उन मुजाग़र। यथा उँ यत्व गन्त प्राक्ष गत्ने मामि अथ (मराजारका नयः। यर आविकामि नर प्रश्न । रेसामिन मार्निक भाणान् अ भूषा । এव उँचास्त भूक्षायं नयः। उँ छिन्तिकाः भन्नयः अमा भागानि भू त्यः मित्रीत ठक्ष्रताण्ड । क्षि भाषिषा ॥ उं ७९अमिक्ट्रकार्य उं थाक मत्राम श्री विकात नथः ॥ क्षि ताक अर्थे, भे किसे। विक: १ अक्षामं पत्र: ॥ राश्ची भे किसे ॥ विक: जा ह्यां ग्रामिकारी ने स्टीर है जनग्या भत्नकीरा प्राथी छए ७ए आधित भूल्डमर्थ वा देनभन्न उँ या हुआ कि मिक्सा नथः॥ अ देख माश्चामायनाग नकार ॥ त्रका यक्षा क्रका क्रका ।। त्रवः व्यान्यमीय माश्चारकः केर्यार ।। है अय यज्ञालियोग माक कर्या मूर्वभूय डेमिनिया। अय प्रत्यासक भास्त्र्यः निष्मालक श्री

CC-0. Mumukshu Bhavan Collection. Digitized by eGangotri

माउन्थः ॥ उच्याया भवीजी भाजिङ मिक्किन जातः । अजू कूनायायन यातामाक्क प्रव जीर्यन क्यारि ॥ जला मिस्र मन्द्रिशाम्ल यायामक साम्धिक साम्यामर्जक्य युकाञन विकारं बाह्में में वर्षे विकार में में में मिलाया में मिला में मिला में मिला में मिला में मिला में मिला में में यूका म्डम्याभन मिन्द्रां डेम्डभूय मर्जारे मिन्स विश्व निसास जिल्मा कि मिन्स देख दारामा मर्ज युकाअत विखार विन्यत्व दिवामि आङ्ग आला साह मर्कनुशा भनवरं मर्जर्र वृशे निशार ॥ अथय भण्यम् भं फ्रका विम्हामन दिन आहत जामन वृग । यन काम विकास अधि आहि आम न ब्रंग ॥ पृथिय दिस् माल प्राभव क्रंग ॥ हजूर्य धर्म माह प्राभव क्रंग ॥ मकाम प्रमाह गार्यु नवभ आह्मण किङ अल्बा मास भ्रमाने भागते वसामसीय महता नवभ मार्थिए অন্তর্থ । বৃত্তি) এব প্রকারেশ আমন হুয় । নিধায় ॥(এফালি অকান্য প্রাক্ত মাতামর্মকে নেক্র ভথাপি। শিভরো যথ সূজাক্র ভগ্রমাভাম হা প্রদেশ । অবিশেষেশ কর্তব্যু বিশেষারুর क्याज्य ॥ देखि॥ यथ आलाभर् भाक्ष रिमि जिलेश भिक्ति देख यथ बिर भूताल रिमि।

र्शिल थार्रिशिस सिन वी आर्रिश आर्रिशांच अस्त्रिश । ते सिन्द आर्रिशांच स्थानि । ते अर्थेच आर्रिशांच स्थानि । ते सिन्द आर्रिशांच अस्त्रिशांच स्थानि आर्रिशांच स्थानि । ते सिन्द आर्रिशांच सिन वी आर्रिशांच सिन वी आर्रिशांच सिन वी आर्रिशांच सिन वी आर्रिशांच स्थानि । ते सिन्द आर्रिशांच सिन वी आर्रिशांच सिन वि सिन

প্রত্ন আই কুর্যার্থ । সর্বেশ্বর্যা সাহিত্য । পাচক্র নির্বাহিত্য নাল নাম বিদ্ধানি । প্রত্ন আই কুর্যার্থ আই কিন্তু আই । প্রত্ন আই লাভিত্য নির্বাহিত্য নির্বাহিত্য নির্বাহিত্য নির্বাহিত্য নির্বাহিত্য । প্রত্ন আই কুর্যার্থ আই কিন্তু আই লাভিত্য নির্বাহিত্য ন

थपुर्काम अञ्चाभ मर्मन ॥ ১१॥

आर्थ्यः॥ डेर्याया भरीछी भाषित मिक्ति जातः। अजू कृणयराने यातामकन पर जीत्यंत क्यारि ॥ जला देख मिन्ध्यादाल यावादक खाक्कि साम्य दर्भ यूकाअन विकारं मार्क्ष्य मर्च्य विकार अभाग मिक्किनायाचेय माक्किने मिनामाहाक मार्क्य्य यक नर्न यूका मध्याया प्रमा दिवार देमध्याय मर्चतरे दिवश निसाय जलमानिय दिन दिना पर् युका अत क्लिए विम्बान्य दिवानि आइटा आला साह नर्थन्या अन्वरं मर्टर् हरी निशाम ॥ अथाय अकार्यम् अंश्विता विन्यमिर मिन माहि जामन वृत्। अने मायन विकास अधि माहि जास न वृग् ॥ पृक्षिय दिक माल प्राप्त वृग् ॥ हजूर्य अनुष्ठ माह प्राप्त वृग् ॥ शक्षाम पृष्टमाह গাবের নবম লাজান্য কিন্ত অন্তম লাজ ভামান প্রামান্ত বিধাননীয় লাজতো নবম লাজমুক্ত ্তৰেছয় । ইছি এব প্ৰকারেণ আমন ইয় । নিধায় ॥ (মৃদ্দি অক্যাক প্রাক্তি মাতামর্পক্তে लिए ज्यामि। मिल्दा यथ मूक्ता जयभाषाभ स् यूर्व। अवित्यासन कर्पराः वित्यसात्र्य क अल्ल ॥ शेष्ड ॥ यद आलाभर अल्क रिम जिलेश आहित देख यद ब्लिस भू साला रिम ।

यज्यकि अग्राभ मर्भने ॥ ४৮॥ विस्थान वाकी भूण जातक अवद्या कर्नाः अभामनी भः। वेडि अवद्योव विक्रिक्त ॥ ७

भागभगाजक आक्त नाम भागभगाम्यः॥ नेकूकः॥ अथ स्थात विन्तित्त वाद वाका राम ज्लाम क्षण म्या। उँ अमाभूकः । अभ्य भूक माक रथभू जिलो अभूकणा नः वी अभूक (मव गर्भा क्षण भक्षाभ कर्भा पूर्या थि उं भण वम् भ प्रकारा नामी भूगा না বিশ্বেদেবানা প্রস্কা বিষ্ণু মহেশ্বরাণা মমকার্য্য মাণ প্রমর্থ্য মক্রামাপ্ত ভূত नानीभूय आह्मकर्णक विल्यमः प्यानः आस्मिर्धिक आई म्र्यम वास्रेशेशा तर् करिए। इक्टि भे एकर । यू के देखे देखि साख राष्ट्र ॥ १॥ (श्रीग क्यों मि यू यो से या से अभा स्तर्भा रः॥) अवः कामने वासने दास जल रात्युक्ष न्या।) हिनीय अधिआहि उपमा भूक भाभ भूक भाक्त रूथाभू जिल्लो अभूक लायः श्री अभू प्रव गर्भा श्रुष्ट भग्नाभ कर्भा क्रियार्थ व भामीभूगाना (प्विधि असि वास्त्रीना भगवाविक्राने भवम देश भग्नामा अन्य नानीभूग आह कर्याक आर्यमिक आह न्यमा प्रामित माह कार्या के स्राह्मर । उँक्रम रेडि अडि वहन ॥ १॥ वृजील निक आत वाक्षने रख जनमानुष नृपा उँ भ माभूकिया भ भूक भाक्ष १ अभू जिल्लो अभूकताा अश्व अभूक एव भर्मा अन अग्राम कर्मा स्पर्गार्थ ওঁ নান্দীম্থানা বসুক্দ্রাদিতানা মমকরিষ্ট মাণ প্রমর্থ মক্রামাপতুত নান্দীম্থ শ্রাদ্ধে কর্তকে

। को ।। सम्हान क्ष्यं अवस्ति का निर्मात निर्मा

धज्यिमि असुग्रं मुक्ति॥ रेत्र॥

आर्यम्यिक साझ मर्यम् वाक्षणेत्रा वद कार्यका ॥ देखि स्टिल् । क्रामुखि धाउवठन ॥ ॥०॥ छ्यार्थ भनेक ज्ञाक वाक्ष्ण इस जलकु न्या । वे अका मुक्या भक्ष भक्ष १०भूक जिल्लो अभूक लायः श्री अभूक (द्वराभी स्व अश्राभ कभी कृप्यार्थ उँ नासी धूगाता अनक अनक्त अनाजनान अभक्तिक मार्ग भवभक्त अक्राआक पृष्ठना सीमूर्य आहा कर्षक आर्यम् गिक आह मर्थमं वाक्षारेगां व कार्यक रेडि श्रास्त्। तू केंग्रेकी देश जाहर प्रयन् ॥ । अकाम रेव ज्ञास रासन इसि स्वाराद्रिक, परी उँ अमाभूकभाभा भूकभाक १ अभूक जिल्यो अभूतायः श्री अभूक प्रश्नामी सुजभूमा अ कर्भा भूम्यार्थं प्रामीभ्याना भृषिकामीना भक्षभश्युकाना अकाम्म ठक्रुतामीना क्रमाना हर्षिधपृष् प्रामाना भभक्षियाने भवभक्ष मञ्जामा अपृष्ठ नानीभूय ल्लाक कर्यक आर्केस्रांक साथ सेन्श्रां तास्थानां वर्ड कथिक ईस केल्कि । तूर् केंकेरे-केलि अखिनक्य ॥ ए॥ सरके भिष्मास्त्र दासने इसि प्रनामकृष्ठः म्या। जे ज्याम्यूरक्याम भूक मास्क र्'अभूक जिल्लो अभूक लाव: खी/अभूक त्व मर्था मुरु भक्षाय कर्या पूर्व गर्थ ওঁ নান্দীপুথানা পিতৃ পিতামহ প্রাপিতামহানা মমকরিঞ্চ মাণ প্রমহ্মসক্রামান্ত্র

कर । यू केंक के इकि मिल्य रूप, ॥१॥ भक्त मार्क नाय यास यास असाम हिल्हे म्या। अका भूरक्याम् भूक वाल्क १ अभूक जिल्ला अभूक लावः खी अभूक त्व नार्था राज अकाम कर्मा सुम्यार्थ उँ नानी भूयाना भाव विवाध ही सिवाध होना भयकारी क्र भाग ठाउंस ई सभक्षासाअ र्वेव गार्थी मेंग त्राष्ट्र एक्ष लार्केर्याय जार रेत्रतं वा सानियां व कार्याक इं निर्देश निर्देश के मिल्या मार्थ । अस्ति मार्था मार्थ निर्देश मार्थ मार्थ वाक्षन रख नलाएं व न्या। उ अमाभूक्याभ्यभूक्याक र्थभूक लिये अभूक लायः দ্রী অমুক দেবসার্মা শ্রত মন্ত্রাম কংগ্রা কুদ্য়ার্থ ওঁ নান্দ্রামুখানা মাতামর প্রমাতামর হত্ত लिमाबाना रापा, नन एकि नाम अवसर्ति समामामा रेव पासी मैंत मार्थ स्त्र कार्य होते य साक्ष, स्नुशरं तान्स्यारंग यंरं, कार्याका द्राव् प्राव्ध । तू केंक्री द्राव साव प्रप्य, ॥०॥ नद्भ बास्त वास्त्र रहा जलागणुक म्या। अं अमाभूतक्याभ भूक शस्त्र रे अभूक जिल्लो अ भेष्य पानः चार्त्रेय प्रव नामा मान भकाम क्यान्येत्राज्य व पान्ये में माना नामा स्थान निर्वास्थाना, भम क्षिक मान अवंशर्भ भयामा अर्ब नामा मेरा चार्ष क्र्य वा क्रम्यिक बाह्य नेर्मा

आला भरक आजा निष् निलाभश हे नाग्न भाग बाजाक निवभूताले निर्भा प्राक्षी अकामनीय भक्षले प्रकृष् मुक्क रहे

अज्राकिनिअक्राभ मुर्जा ॥ २० १।

र्व नान्धार्थेश ज्ञास्य कत्यक व्याक्तिस्थिक ज्ञास् मेन्यतं तास्य प्राथं क्षिक्त व्हर । उर्देश्वे हेलि साल्यप्य, ॥१ ॥ भक्ता मार्के नाष्ट्र यास्परास सामार्के न्या। अमाभूरकभाभ्यभूकभाक्ष १ अभूक जिल्ला अभूक लावः खी अभूक एव भार्या रह अक्राभक्षी सूम्यार्थ उँ नामी भूयाना भाव जिलाधरी स्रिणिशरीना भयकारी क्र भाग अवस इ. भ भक्षामा अ रेंव पार्श्वामें मास्य प्रकृतिक लासे तेन्मतं वा सानियार के कार्यास के के के कि जिल्ली । जू के के के कि काश्वित्रक्ष ॥ । ॥ अस्रिय माजाय व्यादि वाक्रन रख जलरात् व प्या । उँ अमा भूक्र आभ भूक्र माक रूथभूक लिये अभूक लायः त्री अभूक त्वमार्था मुन अक्राभ कर्मा कुरगार्थ उँ नान्तीभूगाना भाजाभर स्थालाभर एक মিমাতাসাহানা, সমক্ষিকামান অথমর্মমামাম্মরিত পান্ধার্মক মাই কর্যকে মাক্রমির্ य जाह, स्नुभगं तान्सनारंगं यंदे, राधाका द्राह क्राप्टर । यू वें के से द्राह जाह वक्ष्य, ॥ र ॥ नदभ शास्त्र आसान रख जलागाणू क म्या । ७ अमामूरक माभ्य भूक भास्त र अभूक लियो अ भूक लायः ब्रीभूक प्रव नर्मा ग्रन्थ अक्रांभ कर्मा ग्रूप्यार्थ उं नान्त्र भूयाता आख्र मिष् मिनायत्वा भन्न क्षिक नाम अवंगर्भ भयामा अर्ब नामार्ग नाइम क्व्य आर्केर्शिक माथ स्ट्रान

आका भाक्ष आवा मिक् मिलायहा हे नि नार्म भार आहत निवम्हाले निर्ण मिल्की अकामनी से महत्ले प्रकृष् मुक्क । हे

थजुर्वित अक्राअ नर्मले ॥ २३॥

वाक्षनियात्र कतिया दे विष्ट्रिश्य क्षेत्र मुख्य । ये प्रक्ष दे विष्टि वहन ॥ ये। देखा निमक्य ते म्राप्त्य दिवभाव कामन प्रथक प्रथक लक्ष प्रार्थिए।। प्रथा उँ आकाधितः लोठम রে: সতত এক্ষডারিভি: । শবিতক শবাহিস্ট ময়াএ শাহ্র কারিণা । গা ওঁ বিস্লৌত্র न्यांनार भूके कींग्रं भाभवायां । राम्नार अअनारा इ वर्कनाम् कुल भम् ॥२॥ आधिकाधि द्रं भूगा भूक्यामात्रिय नायान । श्री भूषि कीर्यिम वस्म श्रिस्थी भाष् भक्कि। ॥७॥ इडि॥ छला विश्वाप्य दियाम्य आक्रामका स्थक् स्थक् धार्कामका रू क्रिं। यथा त्रे त्रकामाज्यरं, ज्ञाक्ष वैश्किक हिस्यत्राः। त्रच्या, ज्ञाक त्रीयाक सिक्षिः ग्राम्प्राश्च भाग्वेशः॥१॥ अञ्चाम नग्राद्धीवः विग्रावामयग्राम् वि। यद्यः स्व क्रिजिस्मि भर् अम्भनाभर् ॥ १॥(निरम्साल केलाअभ दिवारा असे कार)। मभस् भ मर्भ्यवाधि द्वरः भयू विवा मर्कू यू भ क्वरः। अभार अभार अभू क মেত্র: পুরক্ত মাণ্রাক্রপাদ পাণ নিব: ॥>॥ আপদ্যুর ধরাক্ত সহ্স তানব: সমীহি हार्जिन्या नाभ्यका आकार्य श्विम्तिवर् । भिषाण आर्थ्यणः माध्याः भाष्रासु पूर्वण आवत्॥०॥

यज्रस्किनिभक्राभ नर्भने॥ २७॥

स्थिकानीति मक्ष भरास्वाति अकामन ठक्तानीति कर्माति छव्सिसप्व छैं। वाजरा न्यायन नाम परमा अने: ध्रमाम्त्रीय:॥ ७॥ शरके निष्णाद्भवाद्भवाद्भवाद्भ आ म्या। ये नामाभूयाः भिव भिजायर समिजायरा यण्य नर्जायन नाया उर ह्या॰ अत्री अभारतीयः ॥ ५॥ अखत्य आवृत्राद्ध वक्षन राम जल द्वा । उ नासीयू गा भाक भिर्मित्री वाभिरात्री अवस्य म्राभित नेत्रा । अस्ति । अस्ति । असम्बीराः ॥ १॥ अस्टिक मानाभर मास्त वाक्षन रख जन म्या। जम्मीभूमा मानाभर म्यानाभर वृक्ष भ्रमाणागरा अवस्य मर्जामन नत्या अवसा कर्मः भ्रमामनीयः । नयस आखा आहा वासा रखा प्रा । अवं नासीयूगा आवा मिल् मिलायरा याला प्रांभन" नत्मा जवद्या करोः समामनीयः ॥ भा ७ त्वा स्थाम त्येन्यत्य देन्यत्म वात्र आगळ रुख ययान् गृरीष्ट्रा आवार्त्य ।। यथा अक्य अभक्ष कान् नानीम्यान् विश्वान त्यान अक्ष विक भारत्याम् अभिन् आह आहाइशिक रेडिम्ट्रिक् आंवाइश रेडिम्डि यहन ॥ उपनिश्व म्याः भ आगाज गृत्रेजा भ रेभ दर देन समिति निक्षीम् उ नेभ रेक्ष्या क्री वाक् प्रकी धवान् दिकारिए। जिं कृतास् अतं मारेए। यथा व वित्याप्ताः स्नू खा

थज्रिकिमकाभ मर्नन।। २४॥

र्व (य स्य र्जुरीत्क य डेमस्विक) य अभिक्षिका डेड वा यज्ञा आआस्य सिक वा म्यस्य रेडियन मारेट्रं। दिनाय अधियाद्य उँ नाम्नाम्यान् त्विधि न्याचि वाज्यीन् अभिन् आहा आता र्शिक रेडि श्वाहर उँ आतार्य रेडि अडि रठन ॥ उँ अमर्डा भूता शका भि तिमि भन विकिशस्त्रभाशनात् विकीर्वर ॥१॥ वृष्टीर्य पिक्रभाष्त्र प्रभान्यम्थान् वभूक्षमिणान् प्रभिन्भाष्त्र आवा नाग्रिक ने कि श्राब्द्र जे आवार्य ने कि अबि वठन । जें अमन्त्रभूता नकी मि विमिन्न ने कि यवान् विकीखर ॥७॥ ठरू विभान्भ आहा पं नानी भूगान् अनक अनन्तन अनाजनान् आश्वान अहा भाराक्षिण के भिष्य (१ माराक्य के आताक्य के आक रहतः। ए अभवाजा भूश तका भिरतिभम के ्यराम् किकीरत् ॥ ४॥ मथाय पूष चास्त प्रनामीभूयान् श्रियमिन् मथ्यम् यूषान् यकाम म ठक्रुग्रामिन कर्णान छबु किश शृष् प्रामान् थामान् यास धारा हिए के के श्रास्त्र । ए था वार्य रेषि प्राष्ट्र वयन । १० अभव्षा भूता वक्षा भि विमिश्रम रेषि धवान् विकास्ट्रा । ।। वासे निष्याद उँ नामीभूगान निष् निषाभर अनिषाभरान आफ्रिन शाद आवा राम्हा रेखि 'आवार्ग माडिवठन'। एँ अमर्वा भ्रात्यका जिविष्म रेडि , यवान् विकीत्र ।।।। अम्रात्र भाव चाह्म उँ नान्त्रीभूगोः भाज् मिलाभरी अभिलाभरीः आश्रीत् आहत् थारास्थि पेलि आयार्थ अस्वितर्

যদ্ধেদি সক্লাস দ্পণ।। ২৫॥

ত অপ্ৰতা স্থা বক্ষামি বেদিসদ ইতি মহান্ বিকীরেং।। এবং মাতামহ প্রাদ্ধে ওঁনা নীমুখান্ মাতামৰ্ প্ৰমাতামৰ বৃদ্ধপ্ৰাতামবান্ আমিন্ প্ৰান্ধে থাবাৰ্থিয়ে ইছিআবা व्य प्राष्ट्रवेठन । ए अभव्षा भूता तका मि विमिन्न वेणियवान् विकीत्व । प्रवास आखा भारक उँ नानीभू थान पाछा मिल् मिलाभदान आस्रिन भारक आयाद्यिक रेडिश क्षिए॥ उँ आवाव्य देखि अछिवछन ॥ उँडेमा अधा निशेषमुम्न : आ अधीमहिडेमन শত আবৰ নানীমুখান্ পিতৃন্ ব্বিষে অথবে বৈতাবাক কৃতাপ্তালিः। ওঁ আয়াক্ত নো नामीभूगाः मिल्यः (जोम्माओं अप्रिश्वाणः मिल्डि दिवधाते शिम्ब यस मुखेर भम्छा १ सिक्य के एक १ वस्तु अप्राप्ति जिल्हा। जें अभर्जा अूता त्रका भि विमिश्म रें जि ग्यान विकी तिए॥ जला विभवत्तव जामा बाकान मात्मे भूषा देम भतिए॥ एथा उँ नामी भूथाः . अळ्यू अ जका विल्याम्या अका विक्थू अत्युद्धाः श्वाग्छ । १ अश्वाग्छ रेषि श्राहिवछन ॥ पर विकास अधियात्क उँ नामीभूगा दिवसियमि ताजिशः भागल । उँ भूभागल भेवा जुजीय निरुधात्व उं नानीभूगाः वभूकपानिकाः भुगाल । वंभूभागल । वंडि॥ ठपूर्ण अनुक आरक्ष उँ नासी भूगाः अनक अवन्तन अनाजनाः भागक । उँ भूभागक। से मक्त्य पूछ शास्त्र उं नासीभूयाः सृषिकामीनि मक्ष्यश् पृषानि यकाम्य वक्ष् रामीनि

भक्ताकिम्भक्राभ मर्मान ॥ २७

क्रियान क्रिक्स न्वयायाः श्रामक । जैस्यामक रेडि ॥ सक्षे मिवृद्याद्व उँ नानीयू याः मिन् मिनाभर् अमिनाभराः भागक । उभ्भागक र्षे । असे आ आ खाहि उंगा सीभूगीः भाव मिलाभदी अमिलाभदीः सामालः। उँ भूभागलः। वेहि। अस्टिय भाषात्रात्र माह्म उँ नासीभूगाः भाषाभर स्थाजाभर वृक्ष स्थाषाभराः भागाकः। जैभूभागकः शेक नयस आजा आक्र व नानीभूगा आजानिक मिलायवाः श्वापक । प्रभागक निका তियकन ॥ उछा विश्वप्रति देश जागानु जल श्रीषा प्रथाय दिस्याह्म वं नामीग्याः अख यभू अष्ठका विल्यान्या आक्षा विकूथाव्यवाः देम यः भाम् भाग् न अष्ट्रां किलेश अधि माहिएँ नामीभूगाः दिवसिवसार्थि वाजसंग् हेम वः लाम भ्राहान यथ ॥२॥ जुडीता दिस साह्य उँ ना क्रीभूगाः वभूक्ष्वामिका देव वः नाम श्राम् व अभ ॥७॥ ठवूल्य भन्य वात्र पं वानी भ्रामाः अ नक अनम् अ अना जना देवेंगः भाष श्वाश न अअ ॥ ४॥ अश्वा शृष्ट आहि एँ ना सीश्रा अ चिकामीचि अक्थभना प्रवासि अकाममा ठाकू वामीनि कर्णानि ठलू विश् गृव गांभा नेन वः भाम भाशन भग ॥७॥ सक मिन् आत्म उँ जानी भूगाः मिन् मिनाभन समिनाभना प्रकर्र पा मु आश्वन यथ ॥ ।।। अखरा याकृ आह् जै वासीयूओ याकृ विकाय ही आविवास ही अवर दः वास भारान्यम । १। अस्टिम मालायर आद्वि वासीभूगाः मालायर प्रभानायर पृद्वस्थानायरा -

यज्ञासिक्षित्रकाम मुर्भने॥ २१॥

न्ज प्यः भाम भारानभा ॥ ।।। नया आजा आह्म जैनामीभूया आजा भिवृ भिवासरा अवन् वः भाषु भारा न अभ ॥ न ॥ (भाश नभभ रेडि प्य ध्यालेशार् निव भूताले ॥ त्वामि *ह ठपूर्या नाम भूमा कर भ पूर । उम गृशिषा श्वादि (म्याया स कार् १ म्नः।। न भ कि विम् ज भरी नायः विधि कथः॥॥ अकानकीय मक्तले अनि आहानका रेक्ट इसेकः॥)॥ 'जला विश्वाप्त दियमारुणः 'आष्य मकातः' अछि आक्षनाण चूलो असूयाणान् कूनान् आश्चीर्य जिंधाभूमात्र अश्व विश्वाच आर्य मायानि अभाम्य। उत्वा विश्वादिव आगावा भागिकें भग भग देंगे, के आप्यायाय । यक शिकी चामान भगीति द्वायाय देवायाय स्व्याय विका म्काग् कृत्मा भारत भागानि अभाष्य । उँ भविवाको विकालो रेकतमा नेयानिः-उँ विस्ववर्धनमा भूल म् रेक्टानन खाकिक भविन 'सेन्य्रादेशिक कामे न के कामिन मात्य नितंक वित्रभ रज्यू मात्ययू भाष्यक उँ भारता दिवा जिसे या जामा ज्यस मीलएं मा लाग्छ भवसं नः देखि भक्षणे विश्वामन देवा निकायने आका मकातः प्रमा मकाए॥ जला दिख ययान गर्रीष्ठा। अथवा भि ययग्रा भाष्ट्राक्षा ययग्रा राजि विजि अल्ब ने यवान विकीख़ ॥ ७७: नियापि भाष्यभू उँ यवा भि त्याम सेवत्वा तग्रम् तव निर्मिणः

यक्र स्विति अल्याभ मुखेल ॥२५

मुन्नभद्धिः स्टक स्रेक्षा आसीभूयान् मिवृन लाकान् मीगारिनः भाग रेजि भाव्यक ध वार मकार अर्क्य भक्तारे:॥ जाजा रिन्शमव देवामि कत्यन पूर्वी गक्तमूक्न म्या कूमा अवाम प्र अहिं सेनि अर्था भावानि अस रेख वश्य शर्ए । प्रमा रेखि अकुरि दिवामि आसलियू आरागानि पार्वियानि म्या भूकाख्यने म्या जलाख्य के म्या भूकाख्यने नितः अश्वि भर्क भाट्य त्या यथः। विकि विन्यामव दिवापि कत्यान आखा मकारा भे मूक ॥ ज्ञा विम्यत्व देवादि भाषा वाग्रव्स कृषा दक्षिन व्यस्ताकाम उँ या दिका आमः श्यमा भ व प्रूर्ण अनुशिक्षा डेड भार्नि रामि द्विण वर्गा याजिया आन आमः निवाः স'লোনা: সূৰ্বাত্বন্ত ॥ইতিস্টিত্বা ॥ প্রথমে দ্বৈশ্রাদ্ধ অর্চ্চার্রণ ধৃদ্ধা ওঁ নাদ্দীম্থা: अण्यम् अञ्चल विल्वान्य अक्षले अव त्वा विष्ठाः भाषा न भग वेचि अर्थये। विविधं विक् सिव अर्थ भाग वृद्धा । उँ या दिया विषयन भिष्धा उँ नान्त्रभूया अख्यम् अ कक विन्दाद्य विका यम (वा कार्कः भारा न समा। वृद्धीरंग मादन्त्र देखा कर्म माय श्वा केंग मिका हैंडि निष्या। उं नाक्षाभूभ अण्यभूभ क्रक विल्हाम्य भार्त्य मस्वा र्थाः भारा न यम । रेडिः

यजुर्रामि अक्राअ मर्गन।। २२

मिकी ए अधि आहि अधार अधीर भारत श्वा एँ या निका शेष मस अधिवा । एँ नामीयू या विश्व ্ৰপ্ৰ বা ২ ঠা: স্থাবান মৰ্ম ॥ দ্বিতীয় পৰিপ্ৰান্ধে অৰ্থ্য প্ৰতে ধৃত্বা ওঁ যা দিকা কৈ মন্ত্ৰ मिर्या त्राम्मार्गातस्मक्तं चिर्षा निक्ः भीता न नम्। देश्वात असि चाष्ट्र ठाक्तात. भृजा उँ या निका रेडिशन भिष्ठिय उँ नानीभूग शंक्ष्यं प्रध ता रेकः भारान श्रम ॥ अं। তৃতীয়ে দিক শ্রান্ধে প্রথম অর্ক্ত সাত্র পৃত্বাওঁয়া দিকা বডিমন্ত্র সাঠিত্বাওঁ নানী মুখা: বসব मस (वा १ का: श्वाश न भग ॥)। विकीएं रिक शास्त्र क्षाक्ष क्ष्रिमा वेषु प्रमिका वेषि मस भ किया उँ नासीभूभाः समा यस खा १ थ्रीः भारा न सम ॥२॥ पुकीय अर्थ मान ध्रुपाउँ था मि का रेडि थक् निविद्वा उँ नाकीभूगा आर्मिका अश्वा रेकः भारा न भग ॥७॥१ः। ठजूली भन्य आहत स्थम था था भारा श्वा या निका शेष मसे भारिवा व नामी स्था अनक अस (वा रे की: भारा न अस ॥)॥ दिनीय पळ भाया वृत्वा उंथा दिवा रेचि मंस मण्या उँ नाकीभूग अनम्ब असला १क्षः श्रादान अम ॥२। पृष्ठीग अर्थमाय पृष्ठा उँ या निका रेजियन भिष्या उँ नाकीभू य भनाजन यस वा रे की: भारा न भम्।।।।।।।।। नक्षान्य बाह्य स्थान अक्ष्माय धृषा उँ या मिका रेडि भन्ने मिक्रिय उँ नामीभूयाः स्विकारमः स्थानम् स्वा प्रका प्रका १ काः भाषा मा। ।। दिवार प्रका प्रका प्रका

पज्रकि भनाय म्यनिना ७०॥

रेखि भर्त भिष्टिया उँ नान्तीभूणा अकामना ठभू व्रमिनिक व्रनीनि अरु त्वा र्थाः आर्ग न भभ ॥१। वृजीय अर्था भाव धृषा उँ या निका ने विश्व महिषा उँ नानी भूगाः हजू विश र्जमाथाः पर्य रेसान्य अम्य दक्षिमाम्यः यस व्या दक्षः श्राव व सम ॥०॥१:॥ नेवास निवयाक्ष मुद्भा ॥ ज्वः सरके निव्याद्ध यथम अर्क्ष मार्थ शृता उँ या दिका रेषि अस् भिष्ठिया उँ नासीअूगः भिष्ठः अस ए रुक्षः श्वारान अस ॥३। दिशेष प्रार्थनावः भुष्ठा उँथा दिका रेजिशन्त भक्षिता उँ नामीयूया मिलायर यस ए १थर्कः भ्राशन समय॥१॥ তৃতীয় অঞ্চলত ধৃত্বা ওঁয়া দিকা বৈতি মন্ত্ৰ পঠিত্বা ওঁ নানীমুম্য প্ৰাণিতামৰ প্ৰশ্ব তে ২৯%; भारा न श्रम ॥ ७॥ १:॥ अछारा माकृ आहा भाषा अवार अर्थ मार्थ थृषा जेंगा दिया रेखि अस भिष्टिया ज्यानी भूमि भाड यह ए १ थ्यः श्वारा य अभ ॥ भ विकी ये माय पृष्टी ज्या निका रेष्टि भन्न भाग्या जैनाकीभूमि भिजाभोहै पश्च रेक्टः श्वाहा न भग ॥२॥ वृजीय अर्थ भाग शृजा उं या दिया रेडियन मारिजा उँ ना सीअ्थि आमिनायरि श्वय छ रेथ्यः श्वारा न त्रम ॥०॥३॥ लाइ । जाइ मालामर बाह्य सन्म लामाना महिता है हि मस् अधिवा देनानी में जा मावासर जह एक रक्ष: स्वारा न सम्।।। हिलांग लक्ष्मां -

यज्रकित्र अग्राभ सर्मन ॥ ७३॥

म्हीवा उँ था दिया देखि अन भाष्टिवा उँ नामीभूय सिमानाभर यह त देखाः आहा न भग ॥२॥ ज्ञीरा अर्था नाया गृहीत्रा उँ भा मिका देखि भक्त मणिता उँ नासीस्थ थ्य समाजाभव नर एक रेकाः भावा नमम ॥७॥३:। नवम आव्य साह समान धर्म भाय ग्रीप्रा उँ या दिका रेडि मक भाषिषा उँ नानीभूग आजान नख रह र्थः श्वाशन भय ॥ ३॥ दिनीय अळामाय ग्रीषा उँ या दिया रेडि भन्न भाष्ट्रिया उँ या नीभूग निज: यस ज १ थर्फ: भारा न अध ॥ वृजीय थर्क मार्थ एरीवा उँ भा मिका देखि अक्त मिछिता उँ ना मी भूग्य भिषाभद् यस ए १ थईः भारा न धम ॥७। ंछः॥ अला बाक्षालालकः म्या मन्य प्रत्यम्ब मायः लावेव मामारार्। यवः साक्यकः प्रतः अस्की विजाभरामि असे त्या यथा यथा यथ प्रका अध्यय जलअकि भाषानि यथा भारा अभाग मित्रमाद्य भागामि मायम् जल अभाग भ्रामिकाभर भाषाने मिश्राभ कर्ष काम माल्य अमूलदर्ख जरमा अव महिज मायः जें नानी भूत्य जाः भिष्ठजः अर्गनभंभी जातन मूर्कि क्र्यार ॥ शेषि अर्थ्य मान भंभा छ ॥॥॥— जला जल अर्थे दिस्तर देशिय क्रियार आजा भकार भन्नामि मान क्र्यार ॥—

भजूर्किमिक्रकाभ मर्थन।। ७२॥

जमाथा स्थात विकासित गत्रा गत्र स्था वसारिक घटना भवीजक ग्रीत्र उं नानी भूमा भजवभू भंक का वित्याद्वा अक विकृध हर्ष्यता अजानि वा गन्न भूका शूमिन धाला পবীত আহ্বাদ্নানি স্বাহান গ্রম ॥ ইকুৎস্ক এয় বো শস্ত্র: এতত্ব: প্রধাণ এয় বো ধূপ: এয় वा मानः यज्ञः भयकामवीज आस्त्रम् वेकान निवम्एए ॥३॥ विजीएं क्षे विचाक गञ्जा रिक° ग्रीजा उँनामीभूगा प्वसि वश्वसि वाजर्याः ग्रानिता गन्न भूष्म शूम रीम भणकाम वीज आक्म नात्र भाश न अअं ॥ रेकूरभुक यस रवा गक्ष रेकामि करमन मगर ॥ 'वृजीरम मिस्याक मक्तामिक गृशिष्टा उँ नाकीभूगा वभूकमामिकाः वजानि वा मक्त भूका शृभिनेम भथत्वामरीज आक्रांचाचि श्वादा नभभ ॥ रेक्ट्रभूक यम ता गक्त रेकामि कत्यले महाट् १५१ ठपूर्ण अनुका आहा गङ्गापिक गृशिषा अं नानीभूमा अनक अनन्न अनावना अवानि ला भक्ष भूष्म धूम मिम भगत्का मरील आक्षान्यानि श्वारान भभ ॥ रेकू (भूष अस वा गक् क्यामि मत्यने मकाए॥४॥ भक्षत्य युख्याद्म ग्रामिक एक्विया ये नास्री भूगा सृचिका मीनि

अञ्चलिति अञ्चल अन्ति ॥ १०१० ॥

अक्षभश्चूणानि अकामम ठक्षुत्रिमानि कर्गानि ठेषु विध चूण्यामा अजानि का गञ्च मुक्त शूममीम अयाकामनीज आकामनि श्वारा न अभ ॥ रेक्ट्रिय यस ला गान रेकामि कत्यन नकाए॥ ७॥ यत्थे निज्ञास गकार्किक गृशेषा उँ नामी भूषा निज् निजाभर भ जिलायका यलानि वा गञ्ज भ्रमा धूमिनीम अथका भवील आक्राम्यानि आक्षा न अभ ॥ रेक्ट्रमुक व्यव रवा गन्न रेकारिकाभने निमाए॥५॥ अखाय वृभावृ वात्स गन्निक ग्रीष्ट्रा े जानीयार्थि थाउः मिलाभि धामिलाभि मिलाभि विज्ञानि क गामभूका धूमिनीम भएकामिरील थाक् म्नानि श्वारा न सम् । रेक्ट्रिक यस त्र गन्नः यहत्व म्रस्म यस त्र धूमः यस त्र मिमः यहत्व भथकामरीज आव्हान रेडि मिलनत्यर् ॥ यर अस्ति भाजायर् आह गक्कामिक गृहीषा । उँ ना की भूगा भाषाभन् अभाषाभन् वृत्र समाषाभन् यणानि ता गत्र म्यम धूम दी म भ गत्वा भनी उ आखारनाति श्वादान अस । रेजूरभ्ज यस ाठ गन्न रेजादि कामने दमाए ॥ ४॥ भवाभ आव्य आक्ष मन्तामिक एशेषा एँ नानीभूया आव्य भृष् भिष्यभश अवि ता गन्त व्यक्ष ध्वनिव अथरका वरीए आक्तानानि भागन अभ ॥ रेकूरभुक वर्ष गन्न रेकारि क्राम नमाए।। न।। उत्पार्वं गक्तानि मान रेम आक्रिय भक्त रेक्य शार्था। गक्तानिमन अभावि।। यज्राकिमिश्रकाभ मार्गा। ७४॥

ज्यः जुकी देश्वाम्य तेवामि कामने वासनामा स्विक कृतामिक भगम भवा मेनीय श्राम भिल्पाका। ज्ञानीभावक मिक्किनायक्तां प्रलख्यां ह्यू किकाने महोत्न अर्थक वंग्रह्म जान्य अकान्न रिष्ठा जरूभारी विश्वास्या कत्याने अवश्य देश देश (जासन मार्यः मेराक मे थक अभाग्य। ७७: अभ्वधन्यामाय उँ अल्पो कर्न भर् करित्य रेषि शक्षने भृत्यर - उं क्रिक के कि खाल्यकर । जाला जाला जं श्वादा रेक्युता आहाल नमाए ॥ जं अग्रात्य क क्यान्नाय श्राना नेषि जाला आद्वाणि ममाए। ये त्यायाय मिष्यत्व श्वाना यर निर्वा उठ सकी। वार्यमं देवी देवलान राज्यस्य प्रयाप्त कारान वार्यमं निवेन्दा वार्यमः नव भाव भावाभर भाव वाव वाव का आवा भावा वाव वाव वा भिन्दार्थ किलिक भारार् ॥ 'डय हाकादि वन्ताभणकाभ् दशादीनाः सामास् आत्र श्र सहूत्र भृष्ठ अध्नार्। जला देग्यत्य देशारि कत्यने अनुवान् रुमान्य रुपा व श्विरी ल भाय काः मिशान बाक्सनाअ भूत्य १ भूख १ भूख पूर्वाभ भावा । देखि आवा मकात भरते । भित्य १ मुणान रुसान्मा भाव भूषा उँ स्थिती ता माद्य देखि भर्छ ॥ जता तेन्त्रत्वाम् क्रांभन जलामिक यथा अस्तर दाकासलक मृलादि विष्य साख्यव मिरिस्य स्व वन्यानि ्यवाः यह अर्थमञ्चादिकः भाषाखिति वृक्षान्याः द्वामे भाषाच्या अप्राप्त भावतिवाराष्ट्र॥ ग्राक, र

भीभकां ग्रंभ भाषाने र छे । कुन कुन कुन कुन भू भू भाग भाषानि वर्ष्ट्र ॥ अन्न भाषि जायादिमा व्यान्त्रमानि त्रज्य नाय पाय ॥ ७७: अर्थय मज्ल कृषा विश्वान्य मित र्यो भी खासा जें दिल्ला रकामिन राक्षम् । जें रेम दिल्ल विटकत्य त्यशा निम्ति अमें अमेट मा अन स्ता । रेडि मार्टिया नामाय नयमश्रुके निविमाय ॥ देव प्रकी धरान विकीर्छ। वियापि भासे विस्था क्य मिन रक्षम उँ रेन विक्र विकास रेडि भरिषा । भित्य उँ अभ रण भूता शका मि त्यिष सम रेजिययान विकीत्वर ॥ अस् । विना आत्र भश्नभार्मि आमिळ जन जात एक म्या । जला विश्वापय दिवादि कत्यने आकाभकार वाक्षनाय प्रतासक म्या म अन्य काक्षा किना गार्गी अति ॥ उँ भर् भर् भर्षि प्राप्ति । उर देवता में प्रा राभव्यान्त्र भाव भुषा अपूक्रा वाराने अयम विनम्पत्र वाह्य में नामीभूयाः मक वभू अध्यक्त विल्याम्या वार्क विकृष्भाव न्याया वाज्या व्याप्त व्याप्त कर्ने भारा व सम् । रेकुर्भ क्या यव दिनाय अधि आहि आहि यं नामीभूगा त्विधि अकि वाजर्थ या यन द्वा र्भे भागक त्मि भारा न भभ ॥१॥ रेकूरभ्क ॥ पृषीय निक शाहि न नामीयूगा वस्क्रमानिका अवस्ता १ स आभक्तन अादान भये। रेप्र्रम्भा ठपूर्ण धन्यमाद उँ गामीभूगाः भनक अमन्त अनाजना প্রতার হল প্রাপ্ত প্রার্থ ন মম ।। ইতুৎ সৃজ্য। প্রকাশে প্রতানে ওঁনানী মুখা: পৃথিকা
দিনি পঞ্চ মহাপ্তানি একাদশ তক্ষ্রাদীনি ততু বিধি প্রতামান প্রতার হর পোশকরণ শ্বাহান মম ।।-

धजुर्विषि अञ्चाम मर्थेन॥ ७४॥

ज्यः जुक्की लेग्याम्य त्याम् कामन याक्षणामा स्विक कूमामिक भगस भिराभिनीय शाम मन्ताका। नेनानीभाषक मिक्किनायक्तां प्रलाखकांग हर्षेक्थान महम्बर, मस्वर, रंभर्थे, जान्य मकाछः कृषा जरूमारी रोन्यरिया कत्यने अवर्य द्यं द्यं वरं जासन मायः मृथक मृ थक् भाभाषा। ७७: अअष्ठभन्नभामाय पं प्राप्ती कर्नि भन् करिए रेषि यासने भारति पॅ प्रक्षम रेखि शिवियद्य । 'अला जाता प्रें भारा रेक्षुता आत्राक नमार ॥ पं आप्राग क क वाद्वाय श्रादा देखि जला आदुष्टि ममाए। जें भागाय मिष्धात श्रादा वर दिवा उठ स्मर्थी। वात्रव्यः द्रुषा द्रुष्टला व विन्याम्य देवाम् कत्यने वात्रव्यः मिनुनेत्य वात्रव्यः नव भाव भावाभर भाव गाय गाय क। आवा भाव गाय गाय गाय भा भिन्दार्थ कि कि स्था भरार ॥ ७ य वाकादि वन् राभणकाम प्रधानीना भागमु आत्र मु थहू रा थृ क क नमार्। जला विन्यत्य देशामि कताने अनुवान् रुआला रुपा वें श्राची ल माय कोः मिशान याकाभ्य भूत्य १भूत १भूज पूत्रामि भारा। रेजि आका मकात मतिर। मित्य १ मूणन रुखाना भाव भूषा पें स्थियी ता माय देशि भरहेल ॥ जला देन्यत्याम् कत्यने जुलामिक यथा अस्तर दाकासलक भूलामि विष्य आक्राब्य मशिस्य युष्ठ राम्यानि ्यरा॰ "ह भर्तवभ्रामिक भाषाखरिण वृक्षाणा॰ वृत्यो भ भाषण प्रकारा भूग भवितिगाराए॥ ग्राक्री

भीभकांग्रम भाषानाका भून कृत जग्न मृत्राय भाषानि वर्द्राय ॥ जन्नमानि जम्मादिमा এত্রিলপমাসি রজত সাত্র প্রাক্ত ॥ ততঃ সর্বাহ্য সজল কৃষ্ণা বৈশ্বদেব দৈবে ইন্নত সংপ্রোক্ত उँ विस्था इक्रामिन त्रक्षम् । उँ देन विक्रु विक्रम् एका निम्ति अमे अमेर भम आ स्त्राला । बेर्डि मार्टिया नामाय नयमश्रुके निर्वापिए ॥ दिव प्रकी धरान विकीर्छ। वियादि भारके विकार् कर सिम रक्षमु उँ रेम विकारिक विकार रेखि भिरिष्टा । विराम उँधान रुषा भूता तुका भि त्यि सम रेषि ययान् विकीत्वर ॥ अङ्गिता आत्र भश्नभिकि अन जात गुड़ नद्या । जला तेन्यापव तिवादि कत्याने आकामकातः वाक्सनाय प्रतासक्ष नद्या अ अनिव काक्षिका गांग्रेश भारे । ज असू असू असू असू असू जिल्ला । जल देवताले मूला वाभव्यान्त्र माय वृद्धा अंजूक्रायांग ध्रथमात्रकात्व याह्म उँ नामीभूथाः भक्ष वस् भाषाका विल्यापया व क्य विष्णु भाष्यया अख्या व व्याभाषा व व भाषा व स्था विष्णु एम कृ ॥ यद दिनित्य अधियात् उँ नामीभूगा त्विधियक्षि ताष्र्रं गा यन द्वा रूप भागक त्मि श्वाचा न भभ ॥१॥ रेक्ट्भ्क ॥ प्रिया मिक साहि व नामीभूमा वस्त प्राप्तिका अवस्ता रेसे आभक्तने शादान भये। रेप्र्रम्भ । ठप्रार्थ भन्धमाद ७ गामीभूगाः भनक अमन्त अनाजनाः প্রতার १ র° মোপকরণ প্রাহা নমম । १क्ए भृष्ण । প্রকাশেপৃত প্রাহ্মে ওঁ নানীমুখা: পৃথিকা দানি পঞ্চমহাপ্রামি একাদশ তক্ষ্রাদানি তত্ বিধিপৃত প্রামা এতার १র° মোপকরণ প্রাহানমম।

यज्ञाम म्याम म्याम ॥ ७७॥

रेपूरश्का। शकि मिष् आहा वें नामीश्याः मिष् मिषाभर मिणिशभरा येजल रेज आ মাক্রন প্রায় ন মম ॥ रेक्ट्रिक ॥ সম্ভবে মাতৃ আদ্ধে ওঁ নাকীমুখি মাতৃ দিতামধী মা मिलामही जला र में आधारपंत्र अवश्य मार्थ म रेक्ट्रम्क ॥ अस्त्र मालामह मास्त्र प्रेनानीभ्रा प्राणाभन् धमालाभन् श्रम्थालाभन् वलल १२° (माभक्तने॰ श्रानान भम् रेक्ट भूक ॥ नवस्य आवा आहा प्रंनाकीयूया आवा मिल् मिलायश यलद्वा र व्रं सामकर पे॰ श्राहा न श्रम । हेक्ट श्रेक ॥ त्यः जाक्य क, लाक्य कारू अक्ट तास्त्राप् स्वारात्त्रिक, स्वी । সম্ভাব কাঞ্চিকা, মার্চা, ত্রি: সর্ব্ধা মড়েও। তেও: এ, মর্ম মর্মান্ত তার্ব্ধা। जाल विकास्वती वार्षितात्य आवा अकारा आक्रक प्राचित्र ए नामीभूगाः अक्रवस्थात काः वित्यवानवा अक्षविक् आवृष्ठवाः अण्वा १ भृत्वा मार्डे वर्ग भिन जल आवा व भभ ॥ उँ भागांग आरा उँ जानाम् आरा उँ कानाम् आरा उँ दिनानाम् आरा उँ अभानाम् आरा । रेटि आक्रकः प्रमः म्मार ॥ जला मुखात्मस्वाक्रालेषु अ सर्वे काक्षिका भागमी विः अकृता मारोर्॥ ्उं भधू पालकृष्ठ भधू भधू भिष्ठि ह प्रसा ॥ जला तैन्त्रत्व देति गांचा कृषाकृतिः अञ्ज्या শীখুখা: মত্তবংশু মণজকা বিশ্বেদেয়া বৃক্ষা বিষ্ণু মাছেশ্বরা তানের নানীমুখ শ্রাঙ্কের মত্যাদ্য:

यजूरकिमिअकाअ म्जन।। ७ १॥

भीगता देनभन्भगृङ कृत देनभन्नभगृङ पृष्या पर आजा पकांत गृंजुता । प्रि के अछ वहन ॥ जा उँ अन होन किया होन विधिहीन थे पद्धाव । जिल्मार्किम জিদ্র মস্ত্র ইতি কৃত্যপ্তালি: পঠিত্বা শ্রাক পঠেए॥ তদ্যথা ম প্রণর কার্রাভিরাণ গায়তী "-भध्यालाजि अक् यंगे यद भध् भध् भाष्ट्राजि हज्ञा ॥ उँ पाक शादा द्व भभ्य कर हाएता क्यांका र्तिवान्यता १० ७९ असिधाना मन्यांक आका त्रका भ लांधा के भूता महभावी ॥ उँचा नीन्यत् था जरका भ स्फ भूनचा क्रव् । वर्ण श्राक क्राका क्राक्शिया व लिस्ड अनु छ विस्व रात्रीड धाफवण्का भाना र भिताः। यथा मसुसू असुर्याः कालाग्न उर्भित । भवागार काम मङ्ग निगिता न्या ताता । माता उत्मा विभिक्षे मह शर्म শাশ্র প্রযোজকা: ॥ ইভিস্চিত্তা ॥ ওঁতাহিঞ্জে: পর্য শদ সদা সম্পত্তি সূর্য: দিবী व ठकु शाउउ ॥ उँ इत्या क्षता अनू अत्या शशस्यः भ्रम्भ कर्नः मकृति सुभए भागा इः मार्भनः प्रस्थाकला अभाक भूल' शाज शृजवाखि भनीषी। । ये यक्षिकिता धर्मभागा भग्रक्यः अत्या १ र्राता अधायाता १ भण्याया भाष्टी भूको भूका अवाद भूका कृत्का अक्ष ठ आक्षाना नह । हेलि प्राम् । जल भेडा मार्थ । यथा जै त त्वा त्या प्रिक काममामः अधिकाम दि काममामः। आश्रम् । किला भारित काममामः। ल प्रवा ला

यज्वर्दिन अन्याभ न्वींगे॥७৮॥

यक्षिय प्रविक्ष । उँ व्यक्तभागि श्रांड भूकं भागा । । अभूताः भक्तः भुशामा हत् । भूता मुखांनि मुखां ए उठि अ को लाकार मन्मर प्रभार । उँ यक भूजा ह नात्माका उत्भा यज कियानियू। नूरन अभ्यक्षाण थावि अका वत्मेष्ठभक्षण ॥ यव याह्नकाल भ्रमात्यात्कावनि थए मार्वे कर्यकः। जारायमीला वकाममाधाराः भारे रेजाम्॥ यं वासा विस्था स्रीप्र पृष् भ्रायक्ष्य जा क निक्ताः। जीत् लाकात् काष्ट्रपुजाका पूर्डक विन्यपूर् करः॥ ४ वृतिर्माज वृतिर्दाका वृति राज्ञ स्राक्षाणिः ग्रां विस महीराभा प्रिक व्यापम्य ग्रहः॥ ७ ठव् विन्ह वर्षिन्ह द्वाजाः भक जित्वठ जून द्वाचा भ तम दिकः अभीम्बि॥ उवः उभाम्बाका रेकामि। उत्थायः राजानः वरंगभाग्न भन्नाव्याभार आमिक विकू क्षेत्र व कार्गक वृह्यमार्ज रेजि मार्कर ॥ ङा विश्वास्य देख गञ्चा कृषाञ्चालि : अव् ॐ छे अयम्भवः । ॐ छे भयम्भवा ग्रं° ॥ रेडि भ्रहि वठनः ॥ मार्डिवाक्रणाताः आव्याभकातः वेका ॥ भून विश्वादितात गर्वा जलः गृहीवा । उँ नान्द्री भूगाः अळ वभू अकता विल्हात्वा अक्ष विकू अत्यक्षा देनशाठभनीय भाषानभय। न्य । आका मकायः अविवासाध् त्रण ममार ॥ वृद्धि अर्थमायः ममासि ॥ १ वर्षार ॥

यज्ञान अनुगम मुम्ता ॥ ५ ॥

ज्ञा शिममा कूर्याए॥ जमाथा भागपान् कूमान् आसीर्य ग्रायम्यन अ भाका अर्य भरा त्यात्र भूकुण भगवायकी कृष्य गार्विनाञ्च्या । उँ धार्मि मृत्वा ग्रह त्य की वा त्य भय माप्ताः कृत्व यम । पूर्ती म्लन कुम्म कुमा यास भवा भाषि ॥३॥ उँ यक्ष न भाषा न भिषा न वस्ति वाच सिद्धि न् विवास मिसि वर्मितं इसे चैविम् । प्रवि सिवास प्रायं में वारं विवेत ॥ देख अकाणा अम्य क्ला मूक्ति कूला भारत विकीत्वर ॥ जाता व्यु अक्ताला कथ आक्रममा भारती (ठ० । मक्तिन कार्यान अन्यक्षा रावि अपृत्वा ॥ 'जाता विन्यत्मय केवानि कत्यानी का अकास था स्मान्यः झळक मन्याल्यः नया न्यंवर्गायनी भर्यालक्र मध्मस् भाषीत्रिस्या। विश्वादिवरियामि कत्यने आक्राभकासः प्र लाथयत् कुत्याचा भ्राक्ति। व क्रिक्टला मिएका मिलि अफि वडन ॥ उँ भिएमानभइ कितिक देखि आखर एँ कुरुष्त्रिक । लिक्षक मुस्रीछ भुगः। विश्वास्व दिशामि कार्याणाळा भकारा भक्तारा भक्तारा क्रिश्वा भणा विश्वामा अर्थं यम त्यक्ष वस्ति स्वा न्ह अर्थ १ अूर्व मान दा भया त्रका भि धकाः अभिगाठ अध्या वृज्यभ्या थाजू धाना न्ह अर्थ । वृज्य भरक्ष विभान्यामात्र मिकिता रार्टिन भागाम् भर्तन कृता। अस् कित ज्या विसम्भर्म मण्डा ज्या आपिन्यान भाम केन नाम हन रहिष्ठा वाम बरमा इन्यायका मिकिन इसिस भएका मराम्यात

यकुर्व्हाम् अक्राअ मुर्जेको। ४०॥

स्कारा दिया दिया है। दे विश्व शक्त है विश्व का विश्व का विश्व के विश्व का विश्व का विश्व के व अञ्चर क्रमाध्य दृशं भूउद्रभण दिनि क्रिल्स ॥ जला द्राला सदि अभूत्यान् आयान्यतायान द्रमाना श्रीर्थ ॥ सून रिन्यम्बर आगान उँ प्रवानाः निव्यान्य भराशाणिय वर छ। नमः मूर्व्धि भ्राराशि नि ज्ञाभव जवित्रिणि। आक्रामकातुः चिः भागेर्। जला विश्वामवित्व वाक्ष्णामक मध्य भूक्ष्मप्ताः পৃহীত্বা বামহস্তাদ্দিল হস্তেন সংশৃষ্ ওঁ নানীমুখা: সতাবসুসক্তনা বিশেষদেবা এক বিশু মহে भग्रता अवत्य निक्षु श्वाश् न ध्रम । रेखात्मन दूरमाधूला म्माए ॥ द्विषीत्। अधि ग्राह्म प्रल॰ गृरीषु । ত্র নান্ধ্যমূত্য দেবর্ষি প্রজাষি রাজধংয়া অবনে নিশ্ব শ্বাহান মম ॥ তৃতিয়ে দিফ প্রাহ্ম দল পৃথিত্বা। र्वनाकीभूमा वभूक्ष मारिका अवत निक्ष भाश न भभ॥ ठलूर्व भन्क मारि पर्नेषा। यं नाकी भूगाः भनक भनक्त भनाजना अवत निक्षभाश्य भभ ॥ भक्षभ पृष्ठ आह प्राप्त प्राप्त । भूगाः शृचिकामिति अश्वधार्णाति यकाम्म क्ष्म्रामिति कर्गाति क्र्वाकिश्यून्याभा अवत निकु श्रादा न भ्रभा थरके भिवृ आह्म ज्ल गृहीवा । एं नानीभूमाः मिवृ निजाभद् आसिकाभदा অবনে নিস্তু শ্বাহ্ ন মম ।। সম্ভয়ে মাতৃ শ্ৰাহ্ম দশ গৃহীত্বা ও নানী মূন্য মাত্ৰ মহা প্ৰায় প্ৰায় ব প্ৰমা

यज्रकिमि अञ्चाअ मर्जन ॥ ४३॥

जाभइ वृक्षध्याजाका अवत्व तिकुश्वाका न्या । नवस्य आका मात्क जन्न गृहीजा। अवासीभूया থাতা সিতৃ সিতামহা অবনে নিশ্ব স্বাহান মধ ॥ বুলমূলে দ্টা । ততা হ দৌকরন লেকার'
পিন্তা রেন মিত্রিত সকাবিশিক্তা রেন বিশ্ব প্রমাণান্ ্রিকিংলাভি সিন্তান্ নির্মাণ বাম হয় भृशिक जनामायाम् किने वृद्धन निष्धायक भृशिषा अथय विश्व प्रवित्व यात् व नामीयूग अख বাস্প্রমান বিদেবদের ব্রহ্মণ্ এত তে নিল্ড প্রায় নমম ॥ দ্বিতীয় নিং গৃহীত্বা ওঁলানীযুগ্য সক্তবস্পান করে বিদেবদের বিশেষ এত তে পিল্ড প্রায় নমম ॥ তৃতীয় দিল্ড পৃহীত্বা ওঁলানীযুগ্য ওঁলানীযুগ্য সক্তবস্পান করে বিশেষদের বিশেষদের মধেশ্বর প্রতাপেলিল্ড স্বায়া নমম ॥ ১॥ শৃহীত্বা ওঁলানীযুগ্য সক্তবস্পান করে। ওঁলানীযুগ্য সক্তবস্পান করে বিশেষদের মধেশ্বর প্রতাপেলিল্ড স্বায়া নমম ॥ ১॥ শৃহীত্বা ওঁলানীযুগ্য প্রতাপিল্ড স্বায়া নমম ॥ ১॥ শৃহীত্বা তিলানীযুগ্য প্রমান করে প্রতাপিল্ড স্বায়া নমম ॥ ১॥ শৃহীত্বা তিলানীযুগ্য প্রতাপিল্ড প্রায়া নমম ॥ বিশ্ব প্রতাপিল্ড প্রায়া নমম ॥ ১॥ শৃহীত্বা তিলানীযুগ্য প্রতাপিল্ড স্বায়া নমম ॥ ১॥ শৃহীত্বা তিলানীযুগ্য প্রতাপিল্ড স্বায়া নমম ॥ ১॥ শৃহীত্বা তিলানীযুগ্য প্রতাপিল্ড স্বায়া নমম ॥ বিশ্ব প্রতাপ্রতাপ্রতাপিল্ড স্বায়া নমম ॥ বিশ্ব প্রতাপ্রতাপ্ दिजीएं अधि आहा सम्म निए गृतिवा उँ नानीभूमा एवर्षणा उठ हैं निए भाश न भग ॥ दिनोगं नितः गृहीवा उ नाकीभूगा अकर्यां अवहः अगवभाकामकः नितः श्वारा न भग ॥ ज्वींग लिलः गृहीवा उँ नानीभूमा त्राप्यांगा ववहः भगर मानाम्सं नि प्तः श्वारा न अभ ॥ २ ॥ १ ॥ १ छोत्। निक चाह्य अथभ भिष्यं एक्षेत्रा प्रे नासीस्थाः वस्रवः अववः । भिष्यं श्वारा न अभ ॥ २ ॥ हिक्का भिष्यं एक्षेत्रा प्रे नासीस्थाः क्ष्माः वस्त्रः श्वारा न अभ ॥ २॥ ्रेकांग चित्रः गृहीका जै नासीभूगा भामिका भावतः अथव गास्त्रामकः चित्रः न भग ॥७ ॥१।

भज्रासिमि अञ्चास मार्यन ॥ ४२॥

ठब्ल भन्य आहा अण्य मिल एहीजा ए ना मीभूगः भनक यज् ए भयव गालामक मिल भारा न यय ॥३॥ त्रिकीय मिन्छ गृरीका उँ नासी भूगः अनस्य प्रवाध भगवगत्त्राम्क मिन्छ -खाशन भय ॥१॥ वृत्रीय मिल ग्रीया व नामीम्यः भवावन वक्त भगव गाक्षान्सः मिल श्रा रान भग ॥७॥इ:॥ मकारम रूष आरक्ष भणभ मिल्ल गृहीब्रा उं नामीभूगाः सृश्विताम्गः अक्षभत् रूषाः भण हः भगवभात्रा मकः मिद्यः श्वाहा न भभ ॥ ॥ हिलीयं मिद्यः गृहीष्ट्रा उँ नाकी भूगा वका म्याहकूशामि क्रांनी विष्यः अथव मासाम्स मिए भागा व ध्रध ॥२॥ वृषीय मिए गृशेक्वा व नासीभूगाः ठक् विश्व कृष्टाभाः प्रामुद्धाया त्युम्द वेस्ति वेस्ति मगः यवमः भगव गाली नकः जिल् श्राहान मम ॥ ७॥ १:॥ मार्क मिल् मार्क मार्थ मिल् मार्थ मार्थ मिलः प्राथ भगव गास्त्रा मरु मिल भाग व भग। वृक्षिं विल ग्रीचा उ वासीम्यः अभिकामन चकरा भगव गाली नक मिल श्वाहा न अस ॥ १॥ १॥ अस्य भाकृता अच्या अच्या मिल गृहीका उनाकीभूगि भाषः यन् १० अयव गरक्षान्सः निष्धे श्वादान सम ॥३॥ दिन् निष्धे ए श्रेषा उनाकी भूमि भिजामि यजल भग्य गालामक भिल्ड भाश मध्य ॥ र॥ वृत्रीयं भिल्ड गृहीवा लें नामी

गर्ज्सिम् अन्य अ दर्भा ॥ ४७॥

मूर्यि अभिजाभित येजरा भगवरास्त्रामकः मिखं श्वारा न श्रम ॥७॥०:॥ अस्रेस भाषात् आह्न सम्मा मिल ग्रीजा वं नाकीभूग भागमर प्रवा भगर गालामक मिल भारा न भाग।।। विजीय नित्य गरीषा उँ नानीमूर्य अभाषाभद् अवर्य भयव गत्थाम्क नित्य भाश न भम ॥२॥ वृजीय मिल गृरीषा जैनाकी भूग यह सभाजा भर वाज ल अयर गरशाम्स मिल भारा न मम ॥७॥१। नवसम आका साद स्थम भिल ग्रेशका ज नामीमून आवार् जवल भगवगत्मा दर, जिल, श्राहा न भग ॥ हिन्री जिल, ग्रेडीवी व् गामीर्ये मिछः यज्य भयर गामा भवः भिष्यः भागा न भय ॥१॥ पृष्ठीय भिष्यः भृतीवा उनानी भूग निजायद् याजवा अथव गाला मुक भिष्धं श्रादा न भश। ।।।।। । । जिष्ठः भिष्ठा वि ल्लां विकाय ॥ जा आसीर् क्यम्लाव् जं लामयूजा नामीभूगः विवतः भीय सामिति के सिलामा । सिर्मिका कमा दार्य, भीती। दुर्यस्ति लागका द्वि स्नामलैक भीद्रीती े कि विकास रा वात हरें जिन्य यस यस असे आका भकात मद्रा। जे अय नान्दीभू थाः भि ज्ञा माम् स्था गणाजाम मा गृका स्थापिक जिस् राभा वर्षाता मुक्षा पूर्वा भारत सर्भतः श्वाभ भृषा তितिव अथा भवावर्षभानः असीत् भाक्षभ्रत्वान् जाभूतं भृषिकान् कायन उ

ग्जूर्सिम् अन्याभ दर्भन ॥ ४४॥

ेउँ अभीभवत नानीभूभाः भिष्ठाता भ्या जामभानुभाग्निष रेषि नभन् साभः खादि॥ जन्म विकास्वित्य भाषा भूकीवैति जय विभिक्षे ५ में भूशेषा पँ गानीभूगाः भण्यभू अ का वित्यपद्या प्रमादिक भारत्ययाः भाषा यत्वा मिक भाषा न भग ॥ ।। विकास अधि भाषि साह प्रण गृत्रीक्षा उं नानीभूगा त्वर्ष वक्षियान्विंगः घ्रांच वत्न निष्ठभाश्च न अभ ॥१॥ पूजीसं मिरा वाद्य जल गृश्वी प्रें नामीभूगा: राभुरुम निकाः भक्क प्रानिक्ष भारा न धम ॥७॥ ठवूर्ण धनुस भारत ५०० एहीवा प्रे नाकीभूगाः भनक भनक्त भनाषनाः <u>भक्त शति क्षिभाश</u> न भभ ग भक्षा युष्याद्ध जलग्र श्रीषा उँ आक्रीयूगाः अधिकामानि अथ भश्रपूषानि अक्म अक्म श्रीनि कर्मानि ठषु विश्यू जगाधाः अकाराजिक श्वाहान भध ॥७॥ अरके किव्याद्ध दल भहीवा जे नासीसूगाः श्रव পিতামৰ প্রাপিতামহা: প্রত্যবনে নিঞ্চ শ্বাহা ন ময় ॥ ও॥ মস্তব্যে মাতৃপ্রান্তে দলে মৃহীত্বা र्जनासीभूगा भाषु भिषाभि अभिषाभि अखरास निक भारासभाग। अक्षेत्र भाषाभर भारत जल एहीचा उँ भाषाभन् भ्रभाषाभन् वृत्त स्रभाषान्। स्वापतानिक भ्राज्ञानभ्रभाषा। नवाम पाषा आक्त अल भूशेषा उँ नामिश्रूया पाषाणिषु निष्यम् अखरानानिष्क भारान ্ময়॥ ন।(रेक्स्तन প্রভাবনে দ্ব দল্প পিন্ডো পরি দ্বন্ত।) ততা নীরী বিশ্রুপ্যাত্ম্য॥ ওঁ বসরা ते पत्र मिन्द्र ग्रीसीतं १ पत्राचतः। यस्यो अध्यक्ष अवंद्र १ अवः भवः। व्यसीतं पत्र मिन्द्र

यकुर्विदि अम्राभ दर्भन्।। ४७॥

नभस्त मिमिदाय ह आजा अश्रूर अदिकारण मिरामिका निकारण निकार ॥ रेक्टरम अर्थेकून निवासिकार॥ उं नामा ता नासीभूयाः निष्ठ्ः सभाग् उँ नामा ता नासीभूयाः निष्य भुभाग उँ नामा ता नासीभूयाः जिल्हा यक्कीव छ ते अध्या त्वा ना सी भूत्याः जिल्हा त्या ये नत्या त्वा नि नी भूत्याः जिल्हा त्या ्यांग मकाव के स्टि (वा चासीभूगाः निकरंश नम (के कि क्षेत्राणिनाः त्मोड़ीग्रामा भवः)।-्जला नव सन्भा सक्त्र स्मा जर भूय एक्षेषा विन्यत्मवामिकत्यने आख्य भक्षा स वाभाभिम्सार्॥ ्या वंभणवभूमञ्ज्ञाः अण्हा नासीभूगाः वित्यत्मवाः अस विकू भाव्याः वाभः भाग् न भय॥ ३ १६-- विकीशं क्रीसि आत्क भूक गृत्रीया उँ काका नाकीभूगाः त्विधि प्रक्षि त्राफ्षेंगः राभः श्वाहान समार। किशां स्किलाइ भैंच, प्रावेशित प्रवाश गारी गैंगाः वर्षक्री स्थाः वासः भीशं न राम ॥ १ हरूर्ण भन्य भारत भूभ एशेषा उँ भणका ना सीभूयाः भनक भनक्त भनावनाः गभः अत्र न्यसम् मक्षराय्वभाक भूय गृत्रीषा उ यवका नामीस्थाः श्विकामीनि भक्षसम्य है नि वकाम्न रुकू वामीनि क्रांभिति रुक्सिक्य्यामाः भवाः भारान भगाए॥ अस्थितिष् महिम्य भरीष्ठा उं यह दा वाकी भ्रा मिल मिलाभर समिलाभाराः वाभः भारा व सभ ॥७।

पज्रक्तिम्भन्गाभ म्वर्ण ॥ ४८

भराम प्राव् आह भूय गृतिवा उ या का नानी भूमि भाष् मिला भारि अभिला भरि वाभः भारा न भम ॥ न॥ अस्रोत भाजाभर साह भूव भूरीका उँ प्रवक्षा नानीभूया भाजाभर् अभाजाशह र्क्ष सभाजाशहा वाशः श्वाहान श्रेश ॥४॥ नराम आका भाक भूव गृहीक्षा - ॐ अण्डा नामीभूभा आद्या मिल् मिलाशका वाभः श्वाका न ध्रम ॥ २॥ विकासकादि आद्या मकात नित्याभाई ममार्॥ ७। जा विन्याम्यादि आवाभकात मन्नामिन् पृथ्वान निव न्यानिक निल्यान महामिना मूफारार ॥ 'वरवारिन्यम्वामि मावा जल एहीवार अर्थ तथी ক্ষিত্ত মান্ত্রিতি অম প্রতিবচন ॥ ওঁ নিবা আপ: মন্ত্র ।ওঁ সক্ত বৃত্তি। ওত: ম্ফাণ্যবীদ্বা ওঁ स्का भारत मास त्राम देख। जाता रक्षक भरीवी त्रामक का सिक्र आ में त्रिका में क्छ ॥ यय भाषा मन्काल नकाल नकाल । जाता विन्द्रात्व गत्वा भवाक भयू अप्यूक जल एक्विवा ॥ (ওঁ সতাবসু সংক্রকা বিশেষেরা নাক্ষীখু খা: এক্ষবিক্সান্ত্ শ্ররা: প্রীয়ন্তা ওঁ প্রীতামি বর্ণমিত।) न्व आखा अकास अक्र अक्र म्मार्ग)॥ उठा विकास मात्रा अवस्थल भारीता॥ उँ नाकीभूगाना° भण्यत्रभू अकताना° विल्युत्याना° व्याविक् भएक्ष्यताना° कृत्व राम्रान्या एक अर्ति म्छिन्धन मानामिक अक्ष्य अस्त बेडिबाक्षन ब्रास्ट म्मार्णे अक्ष स्राहित्य न्या ।।।

यज्रिकिम्बाय म्योग ४ १॥

ार्रिकीएं सामि ज्ञास अक्षर्य गृरीका उँ नानीभूगाना दिवसि वक्षि राज्यीना कुछ १ भ्रिन् भारक भर्य म्याभिमधान भाना दिन भक्तक भर्य । जे जार्य रेडि ॥२॥ जुडीर्य दिक भारक अक्रक एरीया। उँ नाकीभूयाना वभूक्षमारिकाना कृत्व रामिन् आह भक्ष म्विभिम्भन भागादिक शक्सर्यभक्त जेंजम् ।शेषि॥७॥ छ्लूर्लि भन्क आह्म श्राह्म एश्रेष्ट्राउँ नानीमू थाना भनक भनन्त भनाजनाना क्लिशियन चाह्न भक् म्यियियन मानादिक भक्ष यमस् । ज्यास रेखि॥ अथवा पूर्ण आक्त रक्षण ग्रेश्वा जे नानी सूथाना भारियामि थ भराप्य यकामना ककूतामिक तन क्यू विश्व या भागाना काल व भिन् आह अवन म्उभिन्यत्र भागानिक भक्ष्य भक्षा । उँ अक्ष देखि ॥ छ। छ। छ। छ। छ। भिष्णाः रक्ष्य ग्रहीष्ट्रा उँ नामीभूयाना भिव् भिवायद अभिवायदाना कृत्वर मिन् आक मर्व मर्व मिन्य स भागितक अक्षिय अक्षी अक्ष रेडिं। अक्षा आवृ शाह्य रक्षय गृरीवा। पंगदीयूगीना भाज जिल्बादि माणिलायदीना कुल ने जित्र मास अर्थ म् जिन्सेन माना मिक शक्त या भी स । उपम नि ॥१॥ अस्य भाजाभर माह्म रक्षण गृरीपा उँ नाकीभूमाना भाजाभर हैं चिमाणाभर र्क समाण भराना॰ कृत्व रामिन् सात्क भर्वि॰ म्व मिम्भन सानामिक भस्त ।

यक्त रिक्सिम्रम्भाभ म्र्येन। ४ ८॥

नवार जाना आवा आवा र अक प्रीवा में नामी भूगाना आवा निवृ निवास राजा कृत्व रामिन् आहत भर्यन म्यामिम मन मार्गामिक भक्षण भक्ष । याक्षल हस्य म्मार । अस ने हिमा हिन हमा। जला विनवत्तर तिर्व राष्ट्रा कृता क्षानाः अत् भार्यास्य र आधाराः नानीसूर्याः अस्य वसू भण्डका विलय त्या वस विकू भत्यवाः भन् । जे भन् । वे जिए। विकाश विकास वे आत्यावा त्वि विकास ता कि यः अक । ज्या क रेषि ॥ ज्यारा निकमास एँ आधाता नासीभूगाः वभूतमानिकाः अक । ज्या असे रेषि। ।। हर्य अनुका आद्व जे जाजाता नाभीभूगाः अनक अनन्दन अनाखनाः अद्ध । जे अन्त शेषि ॥ अकाश पृष माह्न उं पात्मात्रा नामीभूगाः शृषिकामिन शक्षभ्राश्वानि वकादना उभू क्रमिन कर्गानि ठरू सिथ्यून प्राथाः मस । ए अस केन्याद ॥ अ स्किन्य साह्य प्रे प्राथा ताः नानीयुगाः मितृ मिलाभर समिलाभरा: अक । जंभकरेलि ॥४॥ अस्य भाकृ साह जं आत्मात्रा नारीधार्य गानु मिनाभिर समिनाभिर् अक्षार्थ असी। असेता भानाभर साह एँ पाणारा ना नामीभूगा भाजायर् समाजायर् एक समाजायशः भक्त १० भक्त रेलि ॥०॥ नराय आह्यसा कि उल्लाबा रासीभूया आहा मिल मिलायहा भन् । जे भन् हेल अस्तिरहन । नि

यज्ञासिम्ब्रास म्यान । ४ ने॥

जला विश्वत्त्व गष्ठा क्लाक्षां निः अन् भारे ।। उत्ताव त्या वर्ज्जा मिलि वत्त्। । व वर्ज जां गिर् शिर्व वहन ॥ आका मकातः ॥ जला वेन्त्रत्व गल्य क्लाक्षां । अत नेद भारेद। তদ্যায় ওঁ যতাে যাতা বিলিয়সে ভতাে ভতাে নাে ভতাত্য পুরু শর: কুরু প্রদান্ত:। পাতা সক্ষান্ত সাওং । ততঃ প্রার্থ্য। কৃত্যপ্রালি: সন স্মনা স্কর্মমপুত্রা শিতৃন বর্ यार्छ । आमित्वा तम स्रमीयंसा मिडि यत्त् । जे आमिसः स्राडि ग्र एका मिक्युंग्रः॥ उमाजात्वा (ना र उवक्रिका विमा अक्र कि एवं है। या क्रा ह (ना भा कार्या इसूप्रे के ता र स रेडि। अन का ता यह जलमिया नह लाल भिर । याहिवार नह नः अस भा ত খ্যাতিপ্রা কঞ্চন। তার প্রবর্দ্ধতা নিত্য দাতা শত দীবতু। যেতা: মর্বনন্দিতা দি जा स्थित्र अक्षा वृधिवस्त । यवाः अवा लिषः अक मिव्यव समापा रस रेखि साक्ष्।। র্ব সত্র ভাতিবছন ॥ আত্রা লক্ষাত্র পঠেए॥ ভিতা বৈশ্বদের মার্ক্স আত্রা লক্ষাত্র প্রতি जिल्डा आई दू नात् आ शुक्षे ये नानी भू या न जिलून् वा का गिरा ये ता का प्राचित का वा न भून विम्वत्व देश विष्य राष्ट्रा ये नामीभूथाः भक्यभू भक्त किला दिला दिना अक्ष विक्ष्मद्र कहाः खीय स

যজুর্বেদ্সরাস দর্শন। তে।। ই না নীম্যেত: প্রতামন্তে: প্রীয়ন্ত।।।

हे हि दिव वास्तरे । अधिका कि । अधिकार कि वासी भूगा वसिक दिव मिर्मिस्राः होत्याः। त्र्राज्यात्वा । विश्रां प्रक्रमास्य त्राप्तार्था वर्त्राप्तः होवसः॥ क्रवेदि भरेक नार्थ प्राप्तिकाः भिष्यानेतः स्राज्यः कृति। जिकास रेक नार्थित् प्राप्तीयकाः প্রতিকার: স্থানা প্রাপ্ত ।। মধ্যে প্রতিক্লাপ্তে ব্রুপার্শালা না: মিনিক: ম্বারিশায়িছে ।। সম্রশো मार्काष्ट्र ज्यानीभूराम भाषा । श्रीमंखामिष ॥ भक्षा भाषामर साह्य ज्यानीभूरमध्य भाजाभाक्यः श्रीयञा॰ वेषि ॥ ऍनानीस्थिणः श्रमानाभाक्यः श्रीयञा॰ वेषि॥ ऍनामीस्थाणा विश्व समाखामार्कतः श्रीमसा । कृतिकर्ता । जुनिस्त के प्रमास । जनसम आव्य सार्थ त्रासीम् माः लाला मिन् मिलामर्गः मीनंताः दृष्ट हार्षरात् मोनंता मिनंति ।। वला व्याप्त भाषा त्रिक्ट वर्ष्यायंत्रेव. लेव. अंतः श्वासास, अशिक्तव. मेंक्यमं विभंगव एव प्रायमिगाय सि पूर्व केलि जिएक ।। जन अधान जिन्नान मिलानु श्रीयूगा खाग हेन्याभवाद ॥ जान नू की क्ष লামগ্রাম ক্তা। তথা দক্ষিণান্ত কুর্মাণ । তথা যা প্রথম দৈবেশারে। ওঁ অফেতাদি अभेक रमानः म्या अर्थेय प्रयास्य अर्थास्य भ्यास्य भ्यास्य भ्यास्य स्थान्त्र त्रा स्थानित स्थान्त्र स्थान्त्र स्थ ना दिल्यत्याचा वस्ति वस्त्र वाता अयक्तियाल भयक्ष द अअया वात्र विकाल क्षेत्र

थज्रवरिषि अनुगम नुर्मेश ॥ ५ ।।

ত্তিক আৰু কর্মণ: স্রান্তিক্তার্থণ দক্ষিণ মি কাঞ্চনত পাশ্রিদৈবত তন্মলত্বা ফ্যালাক্ত দ্রান্ধারা लक भूल वा वनभ्या किवजानि॥ अथवा विकृदियण यथा असु वतायाग् वासनाग्राङ् म्प् ॥ ।। यर मिनिय अधियां । उँ अत्यकामि म्रक्तिक वर् उँ नामी मूर्याका प्रारी বন্ধার্থিরাজ প্রানাণ ময়কর্ষিষ্ঠ মাল পর্ম বৃৎম সমাসাপ্রভাতুদ্যিক আরু কর্মল: প্রতিষ্ঠা र्यः मस्तिन प्रिमः कार्यानः अग्नितिवनः जम्मूनणः वा विश्वतिवनः यथा अस्तव लाद्यायं बस्तानाय अर् नत्न ॥२॥ वृजीत्य निक मास्त्र उ अत्म्लामि भूत्किकत् । उं नासी भूयाना वसूरमामि न्यानाः भभक खिक्रमान् व्यवभर्भ भक्षाभा अपूर्णपूरम्पिक व्यक्तिकार्यः अखिक्रार्यः मकिल मिन कार्थन अग्नितियङ जम्म विकूतियङ प्रथा अस्त लाशाय्याक्र नामा र म्त् ॥ ७॥ ठजूर्वि अन्य भारत् व व्यास्त्रामि स्कित्। व नानीस्थाना अनक अनमन भयवयाया, भभ थांबका मान कार्मक भभका भासकियाति कार्य माक्रिनाधियः काक्षनः आग्नितेयण जन्मूनणः विकूतियण गणा मस्यवागाया वाक्षनीयारः मत्म ॥ ।। भक्षा पृष्ठ भारत ए अव्युकार्य स्वर्ग वर्। जै मनीयूगाना स्विकार्य भक्ष

धक्रिम अज्ञाअ मर्जना ७१॥

भग्रन्व वकामम ठक्तामि कर्ने ठक्किं प्राणामाना भग करिक्याने सर्भर्भभ कामाअविवाकित्राक्ष कार्थ कार्य श्राम् हार्यकारी सार्वकारी सार्य नार्या के नार्या के नार्या के नार्या के नार्या वा विकेद्विक जनमन्त्र पाजान तस्माना रे, निर्मा ता भगक्षिक्रभाग अवंभर्भ भभाभा अविवायून्यिक मास् कर्मानः प्राहिक्यार्ण निस्तिना (भजाति माकाभनक भूनाति यत्रभगि दिवजाति जसून्ये वा विकूर्दवज गणाभश्चव प्राचारं तास्त्रांमा रूपत ॥५॥ महत्य मार्चात्र १ व्यक्तार् मृस्रि। प्राचीम्यीना भाव भिवाशश्चे भाभिवाशशैना भभ करियाभागेः भर्भश्भ भन्नाभा अपूर्वायुम्धिक भाक्ष तथीनः প্राठिकार्यः मिक्सने थियः कार्यायः अयवा मिक्सनात्यनाति माक्साथानक भू नार्य त्योक्त या विके प्रवेद त्राजा मार्थ प्राचार रास्त्रा रा रे ते त्रा ॥ गा अखेल भाजा भर द्यारङ्ग उँ आरम्जामि भूकिर ॥ उँ नानीभू थाना भाजाभर् समाजाभर् রিপ্র রামাতামর্থানা, সমক্ত্রিফালা অর্থ রুম মন্মামার্থ বিতার্নির্মার্থ লাই কাম্ব্র প্রান্ত প্রতি প্রক্রিণামেতানি দ্রাস্ক্রাখলক মূলানিবনম্পতি দৈবতানি ভর্মুলত বা বিষ্ণু

यज्यिति अक्रायम्बर्भ ॥ ५७॥

स्वक तना मन्त्र पाचारं वास्थ्यां ग्रंड नत् ॥ त्या अथरा आव्य सार्थ व्राव्यकारि स्क्वर । त्रासीमंगाया, लावा लिवं जिवामरीया, नाम स्थार्क मान स्थार्भ मक्राभा म्यूजियूमिशिक चाम् कर्मनेः खिल्किर्या मिकिनायिकार्न आक्राभणक मृलानि वनभग छितिवजानि जम्ल वा विकु तिवज यथा अस्व तााजा श शक्ता भारत पत्न ॥ न।। शक्यक निक्रिला ममाए।। मिक्रलेख अधासु ११- ७ ला विकास्य देख गर्या कत्यनाज्य अक्षात वाक्षात स्था जलागक्य निमार । जला वित्याद्याः श्रीयंत्रा रेडिवाक्षन स् व्यत ॥ य स्रोधंसाम्बेर्व । । वाता तू प्रवाकाः चिविका प्र मर्गातासिक प्रवा । यशः मित्र आगरों निकत्यव चवा किछि। आका शकास विः भरिए। उँ वास्त्रवास १ वर्ष वा सिता त्वा ध्यक् विद्या अभूवा अवसा अञ्च भक्ष निवन भामग्रं सं पृष्ठायान माणि (म्वयातेः। बेनियान कूमातान (वेस्वामवर्ते वार्मिकाभने आक्रा भक्तास्व वास्त्रने विश्वक क्रमश्लाम एव वास्त्रने विश्वक्रिए। जिं एं आमारांक्म समावा काम्मा दिया कारा कृषियी विन्यसान आमाराउ निवंदा भावता यूव भाभा (भाषा १ भ्रज्याम भभाए ॥ रेजियक्तने समक्तिलेन वामावर्धन वार्त्रिशत्मा अकल साङ्ग व केंग्रिया थिः समिकिनी कृष्य पृथ्ये आकात्म्रत सन्थ्य क्रुवाक्ष्मि र्भन्यमः अन् अन्यायान् किंग्रीग्रिशः

यज्रत्विषि अनुगभ नर्भने।। ए।।

ज्याखा प्रयाज्य भक्षाआर्यः भग्रा याङ्क कृष्ठ भिष्ठ हिस्तिष्याः। अनुस्तिः याक्ष्येशाङः सिहिः या काश नामकी। व्यान्यामनग्राहील: भनाम ग्रांक स्या। छत् स्वक्रे शिक्षाश मृत मम्भना भरा ॥ भजामिति नम्मत ते अक्षारिक्ष भावन्त्रता । निर्माम्यः निष्क्राम्या भाकामिभाष् प्रत्याः। वाक्ष्याः अकलात्त्वा पृत्रानिश्वाभिष्ण भिष्ठाः। त्व नागाश्च्या भिक्षा गञ्जका व्यवस्थान्यतः। वजावर काल मर्गान कृष्ण गर् मुकामिक । पूकाक लग मालाग गामामि म्यम मर ॥ भा म ত্যাশাও পারিত্যক্র আশীর্ভির ভিনম্য চ পুথেন মনসা নুজাও যক্তর্ধে বিশ্ব হারিলীও। ওঁ ধন্যো হর্ किंव के राजा इंडे, त्या नाराता ईई, त्यावरता। त्याकाकी ति मन्त्राये, युक्त मांता विर्णाहित। सामुका মি পর পার । মন্ত্রা ন রিবর্ততে ॥ এ শক্তকামিতি প্রতিবছন ॥ প্রাক্তিয়ে ॥ শিভূ শিতামবাদিতর ल त्यानमः। यरं भाजाभगतिमः ठइलात्यानमः॥ उ वित्युत्या त्यत्या नमः। ने भिनात्म ॥ पृथक् पृथक् प्रकार दिन्द्रत्यास भक्त वाक्षनाम् विभूक कूनवन्न दिवाय कून परिवास क्र मासि मत्त्रन त्याय मसमायमा शित्कार ॥ त्रामण मास केव जिमा लाम मा विस्तियं मेरि शक्त भित्र भाषायत अक्षमायः त्रात्म अन्यार त्राताः साम देव वर्तायकं में विक्रियम देवि रिम्यामय दिशानि भाष्यक्रा स्र अधर्मात्र ॥ एकः भिष्यात् तमा १५ विष्यात्म मकार । अण्य वा काल कित्यार्॥ चाश्रीरं त्रक, वास्थारं वकारं। तथाया क्षण्यरा । तथा छसायाक ग्रांसीयं तक, प्रधास्थान माध्यक्तं

यक्तिन्य क्राध्य नर्भना । ७७॥

नित्वम् नभभूख भभर्थ भभर्थ अस्त विभाष धिकात् विभाषि वा वास्तानाता रूप भूमे लिशा भाषान् अकाल आभात डेभारामाणिक्वा गकामिना भम्यूका मिक्षाता दि जिस्कि मार्किलाछि: मार्किका साम्रा कि छ: अकाआनू फा॰ ग्रेशिया धानेका विभूका के का ब्रास प्रान्ति वा जें भग भाभागि गर नामीभूग याक्षानिक क्ष अर भक्त प्रकार्भन भक्त रेक्का ॥— जाना नाम मारा । उँ क्यान । मियाना मियाना मिया ठनु थे ये चि: भारे ।। अभागा। उँ क्यान न्हित्वक्रिक भरा वाम प्रकाशिष किवारं भागकी स्म रेत्स प्रका मानि कर्मान जान विभित्यानः । जें क्यान किंव आयूर्य मूकी अमार्थः अध्यक्ता अठी क्या गुका ॥ जें द्रभा । जा भमाना भारिका भएभ मस्ताम पृष्टा हिमा एक वसू ॥ एँ आठी सूनीः भगीना भविषा पारिकुना गाठ खरा अर्थ । अर्थ । अर्थि व रेस्सा वृक्ष्यवाः श्वासिवः भ्रक्षा विन्य विद्याः श्वासिव आत्की शहके तार्यः श्रुष्ठि ता वृद्रभगिष्टियाषु ॥ उत्रास्त्रियेष्ठि वेष्ठि विः मार्रेष् ॥ यज्ञान मिकिकार ॥ जला निक्ति भागिना मीभ अक्स्य रासी अक्षाणा द्या। एँ अप्रणामि क्रांचे जम्म स्माम का क्र कर्मा क्रियमस नेक दशार्थ ॥ वं व्यक्कामि कृति जमासूमार्थक साक्ष क्रम गर्द राज लाज लादास समाययां ये हा विक्रमाय मह कार्य है किय काला ॥

यज्ञकिम् असा अ मर्जन ॥ ७८॥

काम ज्यानी ।। क्रमशम सित्य कर्मिक, श्रिमक मानारोह ।। बाह्य पुनक प्रिय काम क्रमण केंग्यह । श्रिक माश्च क्रेयं श्रिक क्रमण विक काः। माश्च क्रिक माथिसि ।। बाह्य क्रिक्य क्रयंभक्त क्रिक्ट । श्रिक माश्चि क्रयं हिय क्रके वाकक ॥ क्रि युक्क माथिसि ।।

मेक् भ्राम । सामत, लार्जेस्विक नास, भमामि ॥ मृक् ॥ मृक्षियों पशः ॥

শ্রীদলে শার্মথা তিও: শ্রাহান্ত বদান কুর্যাত। প্রদ্বিধি বৌহায়ন:॥ কৃত্বা শ্রাহান।
বিশ্বা কিলাদিতা হস্তক শ্র্মান তিনি দিলে বাদরে । দিলে বাদরে । দিলার্থ মুদ্রিদর্গ করা বিধায় নথানি
বিশ্ব থকা বিধি সালা । কাজার্ম গতে মন্ত্রাপ্ত কেশামাদি বদান বিহায় নথানি
কিলা ত মা প্রাধি সালা । কাজার্ম গতে মন্ত্রাপ্ত কেশামাদি বদান বিহায় নথানি
কিলাকা কৌর কর্মাদি কক্ষোলম্ম্ বিজিলিত। কেশামান্ত ক্যাবালি বিশ্বাতা।
বিশোকা কৌর কর্মাদি কক্ষোলম্ম্ বিকিলিত। কেশামান্ত নথাকের কর্মাবালি বিশ্বাতা।
সম্রাপ্তকেশন্ বিধিবং কার্যিলা বিধানত। খ্রালাকাত দেও: শ্রাক্তে দির্লাত্র্যাথ বার্য্যারত।
সম্রাপ্তকেশন্ বিধিবং কার্যিলা বিধানত। খ্রালাকাত দেও: শ্রাক্তে দির্লাত্র্যাথ বার্য্যারত।
সম্রাপ্তকেশন্ বিধিবং কার্যিলা বিধানত। খ্রালাকাত দেও: শ্রাক্তে দির্লাত্র্যাথ বার্য্যারত।
সম্রাপ্তকেশন্ বিধিবং কার্যিলা বিধানত। খ্রালাকাত দেও: শ্রাক্তে দির্লাত্র্যাথ বার্য্যারত।

यज्राकिम्ब्राय नर्मना। द्रन्।।

जभा अकार्य विश्विता कृत्या भूनेगर्वाठन । एवन भ त्याक्रन भाम्य सङ्ग्र पर्य श्रु वाराषः॥ देखि॥ उपग ह त्योनकः। त्यालियः। भण्यम्। य विमः। काळायनः स्विजीनाण्याल यक वाका नर्यनार्॥ भव्छ कालायन यल विलाका र भि । जमाया। आत्मा विका रेखि द्वाच्या ने भारत द्वाध ने गानि ह लामानिक विधातन अस्त्रे असानि त्याक्षा ।-अखाके क्यान क्यार्थ अप्रायशिश । मेहि स्थार्थ ।। विव: आझाख गामिलगार्ये विका म्यारिक, र्येक्सेप्स श्रीमेशवार्ये जिस्थालातिवा मे आकारका विवासमायानामं मामामू प्रिक भभकारिकामान भवेग रूपम न्याभाअ युव अका अष्टाके वा क्यान् विश्यं अर्कभूत्यभ र कविष्णा रेडिमक्ष्मा-ততा भव्य विशि:। अयभ निरंशि भार्क (भर्भा क्रिया जे आत्मा विश्वी भर्ग चूर क्षान देखी न्धायन भार्त्वामं हक्तान । येथा वः निवज्या त्रम स्मानम् व्यक्त তীরিব মাতর:।ওঁত্রমাতার স্ব মাম বো মম্মন্ধ্যায় জিন্তুর আলোজন যুগা তন:। हेरियद्मिन निविधि भार्काएए।। एकामिएपिया भारतन भाषा स्थाप वस्मानिक भारत

मल्किन् अन्याभ नर्जन।। ७ ८॥

थान्य अम्मकार्मिक विश्वक भरेण्यकारक ॥ रेडि कोव्कर्य विशि । ।।-তত: শাস্ত্রোক্ত বৈনবদশ্রমেক সম্পান্য থথাকোমাদি দ্রক কাজিরিক দ্রক স্থা नित्या नेष्ट्रा । अय त्वागातं अग्रामातं अनेजितं त्यात्के अवले ऋहित्तान्त वा डिमाविका॥ यथा भारक्रारक मृत्यं वक्षभूद्यामिक विविष् अस्ति वश्वा भारक्ष्यम्तिक লার সঁকর সঁথে কল্লথার মড্লেখকোত্র মত্রারমভিদ্রিকা সংস্থানা ॥ व्ययम्त्याक्षत्रात्। व्याचः॥ शावरं देवयः म्तुः व मृत्यः व द्वातः विया। उभ वाता व मृत्य व रान्त् ज्युन व शावरथए।। कि व्यानि यह त्यी वा मर्थनगानि भभा विछ: । मण्ड भ्रिया (भोभण अषु ए अभ मर्विक भूर्णभ्रांत अभूर भाने नाताक न्मायु लगाजिन ॥ अमाम भर्ज कीरिः अर्कप्रान् विवाषिन । भ्रुयं प्रज्ञाम का भागा वर्ष्मभूष मुक् ।। नाभानभू मित्रमुल्य क्वार्य विवृशान्या ।। ने जिला ग्रेमा भाष्ट्राय क्रम्यूल् विशियाव ॥ भर्:। भ्रमाय जलाय मास्यय विभाव केलि॥ छल: कमलां प्रभाम दाममधा भ्षत्रतेनः भ शक्तान दाममधा धनायन मालाक मान्याका। माना माल्याक लाव द्रमे क्याना द्रमे वर्षिया द्रमे क्याल द्र क पानार रेखे। सनवित्र म, ब्याहा म, श्रीका मार्थेश, नेग क्ये कालि क्यी, वा स, मार्क

नविवादश्यांभ नम्य। तिश

्याभामर्थ मुकानि भे गृष्ट दिवालगादी गद्या दाददल गद्या भागानाथि भे भूमि वार मूजा विधाय मिकिन साम सूर्ः अरु अल्यान स्विन स्विरम् स्विरम् अभ्यान भें में क्याप्राधिता हाक् भें भी ज्यातिवी में कियाप करं , भन्न भाषि, भी भें भी को क्या मन भारत आभन भारताक भारता जरूमार मूर्यभूता भारत परिका दिवारक मा নায়াম এয় বিধায় কেন্সত্যাত ওঁবাদ্ধ দুরুষায়নম:।ওঁএম্বলে নম:। ওত: প্রণবেন দিফাবলোকনেন দিফান্ বিশ্বান্ নি: সার্য । অস্ত্রায় কড়ি ক্রনেন জলমেচনেন अस्री काल विश्वान उर्भार्य वृत्तिकव एले वायमास्त्रि भाउ वायन जियान विश्वान - उरमार्य फिडिंड अत्वने अक्षान् ग्रीषा उँ अन्मर्भक त्यपूंचा त्यपूंचा त्यपूंचा यूरी भाषियाः। राज्ञा विभू कर्णा स्थित मास मियाक्या रेजियास्त्र अक्षणत् विकीत्र ॥ जला वात्म छक्त्यानमः। ध्रम छक्त्यानमः। उभ्राभ्य छक्त्यानमः। उभ्राभ्य छि गुरुष्णात्रथः । मिक्सलि जैनलिनाय नथः। सृद्धि उँ देशे प्रवासिनथः॥ जनः कालकाराज मास व्यक्तभाका कार्श भागास है कर देखि देखी र से जाना यस नवा त्वारिकार्डिम्यादिग्यक्रम् पूर्यार् १-

यज्रकिमिअञ्चाम मर्मल॥ ५०॥

उठः भाल ग्रामात्ने मलभादि नक त्वान् आदिवादि नव ग्रान् हेसादिन्य . सिंग माला अह में में हो पर्ये ने सिंह का के मार्थ कार्य कार्य कार्य के में तर के में वित्व विशाय अस्मार्स मिक्किन रस्र अस्थाभूयः कृत्वा भन्न से में जलाए। यथा व नता व स लि जें नहार गुर्य कलाकी जिवाद आदी कञ्चा भन्कादिन अनभा पत्मर । उत्वा दिवा दीन् मुजारार। यथा व विकास नयः। एँ क्षमाय नयः। एँ भूकाय नयः। एँ आसाय नयः। उँ भाषात नयः। १०ँथन्त्राचात नयः। १०ँ भव भाषात नयः। १०ँ का नाषात नयः। रेक्स विभागित्र जिल्ला। भुगाल्या भनिसमः भागेषा । उत्तः आग्राद्वार भूकं य हिता दिन अखु म्थानिक अर्के मेकि जर्मे, त्रक्षिय कि: त्राम्य ॥ (क्रा त्रियान मार्व ॥ प्यापकः ॥ भवन्थाकि स्वाराय सामा आदश माले!। र्यान सिरास्था ।। मिर स्वालिशमि॥ भारमाजानभाषिड अनेवामः नामार सक्त । छत्र केत नामित्राय भक्त स्थि अगृश् छ। आन्याय अ नेवितिव दिवाहभाषाभाभ्यम् ॥ नाजि भक्तान् तक्त्यानान् धनेवामान्या रचकान् ॥ भाजन অন্তরাকান জানাকান পর প্র: ॥ আজান ৠ সমুস্তার্য প্রদেশতি মত: শর ॥ খাহান্তান असलार कार्या विया निया किया । विवाद स्वापतिय सामारक दिशा भूनः ॥ सामान्य

यज्ञान अञ्चात्र भनागाउँ।।

क्रिमारिक्षाचा मानाग्राम नरं हर्यं ॥ ब्रिमानुमेरः॥ त्रवः सर्कर्मेक्षः सन्दिन मान्क आहशा नात्मेश्य म्या रेम मारोर्॥ यथा उँ उ आकात श्वाहा । उँ थ अनुतानात श्वाहा॥ उँ भा भावभाषात्व भावा ॥ उञ्चामाणा भावा ॥ उठः भारमा भूष त्यकीकृषा विचामा क्यिक वक जाए एशेका। अत्यय अस्त्रने मितिराभका यथा १ वि वृद्धी विषय । व्यवस्थी कि दिन्ये । व्यवस्थी कि किया कि । विव व्यापः स्वासि कि मस्य जन भागाठमा जमन पथा । जे जानः भूनक श्रिकी मुनी स्वा भूतावृगा । त्र्वस्थान्त्रभिष् विक्षत्र्वा त्र्वाष्ट्रभाष्ट स्नस् भाभात्मा रभवाक मिल ग्रह भारा॥ रेखिभास पल मीखा आउभा भ छड: मानाग्राध मग्ने विशाग ॥ आस्ट्राउतं गाउ भागमि अस्य समन्भाम्याक्रम स्व: मा नागाम এয় পুৰুষ ।। (কেচি রাভে আম্মান্ সময়ে সামগ্রী প্রকেশ নমুক্ত তদ্ মুক্ত আমাধানাদি अर्थकर्थात्व भाग्नी भरवन्तर कर्यकः। अर समानेभन् नार्ममहिवाकरका मिनियमि नवः सिवभूताले॥ . अमाना मक्को ॥ त्यात्व ते स्वनत् अभाक् अस्वतिम अमिकिताः। अभान्निभाषा मात्राच्य प्राक्षनः व्यवल् भृश्र । भावित्री व्यथम भान भावित्री विक्रित्र ह । व्यव नशाधिन काल पृत्ति विक्र

ग्युत्वर्धिकाम्याम्बन्ति १। ५२॥

वासर ॥ देखि व्यक्त्यासामार्म कर्मात्य गारंशी आरम्भनः कर्वकागत ॥ 'खनः मूर्ण १ समागार भूकं यक्षा आहिज गिलामहानीएं। यकागिलहरे भामनाणी । असारी हरिलांकि क रात्रों। विश्वान्हर भूका एक मृत्यों मिरि विशासन रेजा मिला रात्रों अन्वर्ग अनि आले कर्मियो में छ। १ मार्ग। इंडि से इंग्रार । जे बिस बी शाय ॥ अव (वो झार्ग :। म्यायगः। लोनकः। जावाल क्षिः। यतः। क्षित्रं भूषि स्थालेन विधिना ग्राथानारिकृष्णि। निव मुझार १ मि॥ भुगाया कथाल बुवा अधिन ब्राप्त छन्छः। अद्गानि छव्कि भुभ क्र नथस्वः॥ देख । त्र्यात्मारक क्रमलिका त्रीका मक्षन्ः भन्भात मृत्रिकः भलेला महि आर्थि कार्किकारुए॥ अस्था श्वाता श्वाता स्थाति व्यालिन विषित् निर्मार अर्मात शाले रासे रासे मल मान विलिक उक्र कर्तिका उत्पूलिश सूर्य कृति शास्त्र में मान्य प्राय नार नार देखिशाक्त शस भूक्तामिना प्रतान अ भूका ॥ देखि॥

and the state of the same profession in the second of the second of the second of

MINTERSON TO THE PARKET ONLY FOR THE PARKET

अथ गर्स्क्रीय क्नकण्डिकाक विद्यम्यन क्यारि॥ ४० क्यः॥ कर्ण व्यक्रिय मिन्यू भारिका ॥ कूनायराने व्य भारतिष्ठ ठजूर्य दृष्टि जिः जुसी भारतिमध्य कृता न् येगाना विः किया लाभशाम्करना मालिया ग्रह्म स्वर्थालान । महन् वार्यस् विष्ण व्यागन मस मसाभू लागु विषा कत्यले प्रकाण विषायम सादल स्वा। अमाश्चिम अस्थान्याः भ्रम्भूक्ष्णः विः राजाः अम्यिकिः वेमान्यः मिनि अविद्याना वित দেশে ওঁ নিরম্ব: শরাবমু রিজনেন ক্ষিপেৎ ॥ ওতাে বারিণা ও দেশম ভিকিঞ্চ ॥ওত আত্রা দক্ষিণে কা ফলাত্রে অগ্নিমানীয় ।ওতাে, দ্বলদিদ্ধনং গৃদিদ্বা ওঁক্রকাদ্যাগ্রিং প্রহিনামি দূর্ণ) यभं वाकि राक्ष्य विश्ववादः। देखि महन्त्रं प्रक्रिना क्या मिन कर्णमा ना क्रिस् ॥ भूतवार्रि गृदेखा। उँ देवियाय भिष्ठाता पाछ विमा दिखा इरा वर्षे अपन्न । । वेष्ट्र्यः भः। नेष्णतान भारता । । आछि भूग वृष्टीगं दिलाभाति अग्निमादाभाग् ॥ १ मिश्रकः भाम किमाश को ता रेकनेः क्राग्यः भाक्यभूत्वाराष्ट्रः भक्षाळिः नालि शाउकः। रेजि काच्चा। विन्यक्त्माधश्य ग्रिः छ्रेनीजः भक्तकर्मम् । आत्मेषु विकासमा नामाभि ए मूर्वः स्र्राप्तन् विकासम नामाला देशमङ्गरेशमङ्

रेर जिस्रे रेर जिस्रे अवाधिस्रान पूर भाषामक निम्ना भूजा भूजा रेजि गमामिछि: भ भूका ॥ छाला आक्षा वर्तन ॥ अस्कर्णक अभूक कर्मा अपूष असकर्म ख्रित श्वाम द्वाम द्वाम द्वाम विश्वार भी विश्व विषय ।। देविभे कल्मः॥ उतार त्या दिक्षिणे : यह मार्या प्रमार्थ भागभान् कूमाना श्वीर्का प्रान् यव वक्षाणावारि धार्य पंजवान् रेडि लिताल आग्नि सम्किन का রাইজ্বারক্ষাণ তথ্যে অবিষয়।। তথ্যত বন্ধা পাতারে সঞ্চামত কুমারিছিত আমুক্তরত: आड्यूयभाभीन भ्राम् द्रम् जाभीता १ नू लायन स्रम्भागण व्या लड्ड्याम् अस्ट्रम् अस्ट्रम् कर्यार् कार्याय जय त्य प्रभम्क लायाम्क अयवा मूक मर्यान वाक्काल वक्का जाति कृता जवाभीकूर्वसभूभावमा भ्रम्भाव देक: आए॥ जला बाक्षण गृशिशाता आहिला राष्ट्रसण्यका मिकिनाक गावा । ए आर देशी अत्वा मुख सिको भ्रा अम् अमृत और ता रुआए भाकावर ॥ हेलिभात्मने अक्षा आअन हकी।। उ निव्धः भाभ्या भद् लन थए दिशः। हेलिभात्मने वाभ द साना मिका कुकारण आश्चीर्न कुमार्गाः कुमार्ग्यायक गृहिला मिक्किन मिक प्राक्तियह ॥ ४ देनशब् वृत्रभातः अम् भि भीमाधि अभूता दिवन अविवा अम्मारं अविवाधि अविवाधि अविवाधि केलि मस् भारत्यका देनारिमारि॥ एकः याकान मर्कार्य ॥ एक मित्र मेथा सकार्यामान द्रमार्थामार ॥ उत्तः स्रमाला भाव भूतकः कृषा प्राच्या मूर्य कृत्यां स्थाना भू

गमां त्राप्तिमायायः तस्या । त्राप्ति भक्षः प्रमुक्ति क्षेत्रा । विष्ठः भविस्त्र विष्ठे क्षेत्राम मार्गिका निर्मान तिका र प्रीक्ष करातः नाम्क्रमिनि निर्विव प्रिन्नार्थः प्रभावयं म यियकर्तार्क भागमाया रिक् केंगान्य हतं, ज्याक्ष्यी नावं, लाक्ष्यीन प्रक्रियी-अमार्जिन कुनाः। डेनाययन कूनाः धार्मनायिष मानाम भाग्य भाग्य भाग्य भागः। धारम यह अवेगमद्वर अज्ञान भूकि भव इयं अतियिक अंग्राई वद्भभूत्या शत् आति यिन वा जिल्ल भूदाभाय जिलभूमा भिया अल्पूलाः भूलभाया भजानि भविय क्षित्व कूमाना मूर्स दिनिक स्मिनाभामनीयानि। ७इ०३७: व्यापादि मायापन मुस् माकिनामित्वा यथाक्रयमाभाम्त्र ॥ रेखि॥

था थकाणि खाङ्गाल कंभीनि हरू रहा भा र सि उमा भिन् यर भभए। भूकि प्रश्ना निक रिक्षा य हर्व्याभारार् ॥ जला रुत्रः भाष्ठभाषा मकिने जाता यामायान् कूनाना शीर्य प्रका लिङ वाक्रती इंग्रान भूमा वित्वभूमे हमभ् प्रान्त एमकिङ भ भामा वीहिन् धवान बर्देनार् या मृष्ट्रिसिंग मेकि मेरंन, केम्प्रि ॥ वस्त्रता व्र विकाय वी तेषु. भै सामा म्राया । जे विकार या प्रमें । निसं भागी हि हक म्रान्ण निसं भए। जे विकार या पृष्टे

त्त्राक्षणेत्री हिम्मस दल्पन त्याकरार ॥ नव उनका वा पर्य भूता भूता भूता । खँ नकाल- प्रा प्रश्रीवर्तिभागीति हर्ममां लग निर्माश । जंबकाल प्राप्त ए प्राक्रमाभीति हमभम् हिल्म स्थान्सराह ॥ १ व्याग श्रा मुखे गृह्याचे १ व्याग श्रा मुखे । जिसे भाषि १ कराम या जाकमामि । ए अप्रायंत्रा में के भेड़ामि व अप्रायं विस्कृ । निस्नामि ए अ गुरंग त्रा कि है । हा करा थि ।। यर अं जाताय श्वा कि है भित्रा थि । विकासि । त्याका याथि।। उवाराव का अकि भेडा । चिक्रमार्थ। त्यास्याधि॥ उवस्वावा सक्र भेडा । चिस् लाम। ज्यासगाम ।। जुर्मकांत्र ब्रायेक, र्ययाम । एक् नाम । ज्याम ।। जुर्मे भाषा है। असे मुश्रीमा । निर्यामा । त्याक्यामि ॥ ज अस्त्रीकाम् क्रा क्रिके मुश्रामि । निक्नामि। त्याकः गामि। उँ कार्व का पृष्टे॰ एड्रामि। निक्नामि। त्याक्रगामि॥-्रविस्तान वा येषु भेरीया। युक्तामा । त्त्राक्ष गामि । त्रे क्षिक् वे येषु भेरी भेरी । विक्रमार्थ। त्यास्मेगार्थ। त्रास्मेगार्थ। त्रास्मार्थ द्वा प्रार्थः गुत्रार्थ। विस्न भार्य। त्यास्मिगार्थ। रेकार्स भूखि प्ररक्षा प्रः॥ (भरक यय वर्षे प्रविक्र हार्ष भेष्ठि प्रदेश मस् विप्रद क्रियल विक्रुभू दिन भूषि प्रकृषे प्राकृष । अब ध्रमानेभाव । यस्त वि विक्र वेडि क्रिसः।। অতথ্য বিষ্ণুদ্দলেন মুষ্টি প্রবৃলিন সর্বেধা দেয়ানা কর্মার্গুত্বা ।। ইভি। দক্ষিণ মু সমুজ্যাণ यक्षित्रात्।। आत्रीय अति। भाक क्रिट । आत्र हक्ष्रिका । भावा लिखादि सूर्व भावा निधा

ত্যাদি আক্রতাশান্তে প্রধান বো মে অগ্রয়ে শ্বাহা ইতি বুল্বা। যদ মেতি শ্বিষ্ট কৃত ঋ বুল্বা लाख अवाली भाकर क्यार ॥ होड ॥) जव कारान अ माका क त्रवा भूखि प्रहान अधाय ॥ यकार दिस्तिकी महोगर ॥ जब देनदी कुंब निक्किंग भागिणा भूसत्तना वहंबा भूत्मने भ्राप्तारे ्रार । वर्भ भत्र वात्रम्य अवर्क अल्मा हर्यर ॥ ४७ सर्य मान् विः अकाल हर्म्भाणाम सचक के खान वंगाः भारत विः किन् वय विद्यानिसारं किनारा द्राप्त वर्म वर्गात रेक ध ता र्वा न्या खाक खाक भूमक के न्या ए या था पानित भागा आ प्रमुता या भय एय त्य कालन मिक्किना वार्याने नामणिया भारत ॥ यथा मार् कारिय भारताल वारिता व्यक्तियान हरू सिम्मिश देवार । तवः सिक्षि वर्षे। सैपार्वेश, सर्मास्थ्य, सामार्गेवी वर्षे। ति संस्थाः। तवः क्रेयस जभन जि: जजः भन्मार्कान पूलानाभागि वस्ताला भूति वाश्रवः क्रवः भन्नेक अनीलाम्यन अका भूग भिः अठम मिक्सिला निम्धार । उत्तः सक्याना वार्त्ता सक्यानिको अवार्य यथाती अवन्य अधार्षन कृतानाभाषिक्य कर आश्राविष्ठा सन अवन्य त्या स्वानी आधार क्षेत्र भूत क्ष्रिकार सामाधिक सम्बद्धा स्वानी ।। তে: প্রনীতা পাত্র পকার্মে কৃত্বা দলৈরা দুর্ফ কুলোরাজ্যান আমুরুতরে কুলামারি

पा इशि जरम्स पक्षिनमा,। जुकाबार्यात्रकाय, माम्यग्रमा,। लागः ह्याका जरम् भोजातं । विवः व्यासेवेजाक् पेंग्रमेक्रिमार्थतं व्याधिमार्या, मिस्स्ता, विस् वार्वरंशास्थि। १०: म्याम् वक मही कृषान् भाग्यान् अला भारम भ्राने क्र भय इस किया । जें भवित्यं असे तिश्वा के नियम हित्र किया। जें वित्रमार्थन भा मृत्वभः। राषि (आक्षा भभविय भानिना धनीत्वामक विः (धाक्रनी भाव कृषा अनाभिका असी आभू अताण भविता गृषीषा विक्र भवन कृषा पर भविन भनोता म्तिन विः त्यान्क्रमी त्यान्क्रमे । ज्यः त्यान्क्रमी प्राप्त यथा आमिव म्या अठन । जला श्रिय समीजरंग भीर्य । भाग नियान । जनः आक्र भाग भाष्य नियानः हरो व विन बन्देन मर्गाया, मधाला त्य्य हिः मक्षाका।

नावर्र नाय्वमण प्रस्तिन महायाम्या अन्तर्म मिल्य मिल्य वामन्त्रायाम्य काम्या प्रमाणि क्या क्रिक्र मिल्य क्ष्या क्ष

দৃক্ষিণ ব্যোপরি তাবেনাধামুশ্যক্ত পানি: পারিএমফের আক্তম্য কিঞ্চির্তোলন মেশ भूट পরন কৃত্যা। ওঁ সবিত্র খ্রা প্রমান উৎ পুরাম্য জিন্তেল পারিত্রলা বাসা: মূর্যক্ষ রাম্মাত: খ্যায়া॥ হৈতিমন্ত্রেণ অসৌ প্রাক্তিনে ॥ তত উপথমনকুশান্ বাম হস্তেন গৃহীত্বা তৃতাকে কৃষ্বা প্রজনাতি यवभाषाना पुष्कि भागो कित्यर ॥ उन हेमानिक अमानिन त्याक्षणूम्रकव १० वासा इत्यः अमिलान् अर्थाः मूर्त्या १ जाउः भ डे गर्ट १ असः ॥ अ यत जाउः अ जिस् भागः मुख अता अके वि अके लाभू थः। रेडि अन्ति । शामिकी भाष्य्य भारिय पश्चित रेश नामायं जलमालान मिक्सिना वर्षिना विश्व नार्या । जिल्ला निश्वा निश्वायं नार्विष सक्तित्यार्थेः ज्याक्ष्यानातः मन्त्रवाक् लायंक्रावं मीनाविलायांवस निक्षक क्रवः भृश्वी आक्ष्मताधार्यावाका जाता पूर्याए॥ जय आधारते जें ख्रामानाय श्राहा रेख त्यम वामुरकालामात्र जा आग्निरकाले मर्थम भाग्नो थुंच थाता नमाए देम भाजामावरा। क्छ (भवाषात्म्यः॥ उ देखाय श्वादा देखात्म तियोष कालामात्र्य देणान कालमार्थ क्रमात्रो खुलशातां नमार देन देखां रेजिल्दालाक्ष्मः ॥ इत्रा इत्रा क्ष्म भागा रितः लाक व्यानार्य त्याक नी वात्य भावतार ॥ आक्रजाता गृहीवा उँ अग्रास भावा हे जातन

- अत्मक्ष्यंत्र : मान्हिमानि भाकानामत्मो क्ष्यांत्रा ममार देम अप्रारं ॥ उत्मारास्त्र अलगलार्मकिना : मिक्यारि भारमसामामलो भ्वशादा नमाए। से लागाय ॥ जला जात्रवु लायक नामासि केषिनाम कृषा गञ्ज भूक्मादिन्छः ला एत्स नात्र जारा य नगः। रेडि भण्यूं पश्चित्र ॥ उँ तापक नात्र जात्र क्षे रवितित्र भाग ॥ सगराहि लाम क्रमेर । जमाणा उँ यू: श्वारा रेम यू:। उँ यूरः श्वारा रेम यूरः। उँ श्वः श्वारा रेम श्वः ॥ यर रा भराकाक्षि (राम, भभा के भश्रमं नर्न, भर्षे भाषी वैर्यात ॥ वि वः स्वेष्ट क्यी, वैकार ॥ वि स्यालगर क्यातिकाद्रीका नक र्मसाउ मुक्क गलला नाई लाग्ने माहकान क्वास लि: अन् देम पार्रेष् ॥ यथा उँ अथ रिन्शानर्ग कः अखिनाः ठकुर्नाः वकीकृष्य विस्ति गः त्वत्या विश्वानवं भमा ॥ यकन वभावः भ्रत्तं हाजाः भावाल यव । वृक्षायं भवालाक ह यव वमार्ड भावकः॥ उर्द्व भारम् यथा यद्भः भारता मृश्वित् वह मृश्वि वद्भ र्य प्रामाल आद्रालिक अभिगंद्ध ॥ आद्रभूभण अवस्ति । शास्त्रभूगाः अस्तिवता । विभवित भूत्या नृत्य आबुष्टिः कम्म मिथ्रत्छ ॥ वेष्टि ॥ जनः ऋखिना कं गृत्रीकु ॥ अग्नि विः अमिकिनी कृत्य क्यः स्वः क्षाक्षानः भव देन भाग्रे ॥ जमाणा ज जावा द्यामान पत वद्यान वन स्य । द्विर्द्

CC-0. Mumukshu Bhavan Collection. Digitized by eGangotri

प्तिभूग क्लार्ड्सम् अञाजन ॥ प्रगक्त थ यका रह भूनगः भाषाः यगाः। अका रहि रह सम्भ দেবেশ সন্মুম্মেত্র ॥ ওঁপু দেব বরদোত্র শর্ম কুশুলী ত্রিলোকনাথ ইন্টদেরতা মঞ্চ চক্র তিনেত্র र्करार्न अछ जिल्ला श्रीला ज्व ॥ भवन वार्न दिन्हान्त्र (न्वज काली क्वाली ल्वज ध्रुमा लीला अका किमिला रेश गाइ। रेशकिश भूभोजा अव ॥ आकृती माज वक्तः भिज माण्डिक लाचे आकाम आकृ विवार भाग्नी द्वाला विन्यान्त प्रवं रेश गद प्रविमित विके मिक्ति विके भाग्न मिलि विके प्रि व मिल किके।। अथमा काको उक्ता विकीशा अव अकिका विकीशा यव अक्ता ह। हवू वी किल अक्तिका भक्त्री मिरिज्सा जू यकी जू कीत्जिक का अख्यी मर्क राजका अख्यिका धक्रिंखाः॥ शेष्ट ॥ जनः अतिनाकः एशिया ॥ उँ ५९ मारिवू केत्नणे आषा । देन भिरित्य ॥ उँ जा ए भिरित्य केत्नणे अ हि गाभर राला भूभिक विन्यस्याः। गाभभ्य काला अस्वर समीतार भर्भश्वा मग्राभिक्ष भागा। रम अतिए। १ उँ विश्वानि मिर अविषु देविणानि महाभूर। यह द उन्न आभूर भारा। रह अ वित्य ॥ उँ आञ्चात भारा । रेम आञ्चात । उ अनुराज्यात भारा । रेम अनुराज्यात । उँ जानाजा त्व भारा । रेम कानाकात । उँ भव्याकात्व भारा । रेम भव्याकात ॥ उँ पूः भारा । रेमपुः। उँच्वः आशा । रेमध्यतः। उँभः भाश । रेमभः॥ उँ पूर्वः भः भाश । रेमधूर्वः भः॥ शह जाट्यारेकि धेर्या॥ यूर्वः लागेरां श्रीका। इस्र रः लागेरां॥ यूर्यः त्रासामारां श्रीका॥

रेम द्रवः छाता पावर्ग ॥ ज्ञाः त्यायाग्र श्वारा । रेम श्वः त्यायाग्र ॥ ज्यूर्वः श्वः भ्यापश्वारा । रेम यूर्वाशः मूर्या ॥ जला रे लायकेतावं के गांचा सीक् व्यक्ति दिसारिकः सुन्धानः वेश्वां सदय कात्र गांते की जल्मतिव जागत्ने कूर्याए। जल्बा वसमू दूर्ण देन्यार् प्रणाविष्मात्रा मावः अक्राक्मेन म्यूनावः अकल निक कर्म भयान्य भाग स्राय रिय रिय प्रापिक कृषा राय भाग आगक श्रायन भ म्ह प्रेम বিশ্চাতম্য প্রণবেন প্রাণায়ায় এয় বিধায় সম্রণব কান্ধতিকা সামগ্রী পাতিব্য আগ্নি: ক্ষাপর্ক কুর্যাও॥ (अथा भाषायन कर्रक यन्यात अंकल्ले कृता ७४: भुनात्यक महाउ तीका दूर्यन ठक वालिए श्वा। अत्रात्यव्यं हर निशाशं आहम्) जलायूर्वः श्वविद्ये म मस्क्षा ए जन्म नी धाविह धाविह क्षात्रा व्यवभात्रभः। उं उत्र भगमी शावि अक्ष विम् वभू ना । अं उत्र अभमी धावि श्वरणास्का वा यर आणि म्माधार ॥ ७ वर अध मी शाव शाव भूकः अमभू प्राम् ॥ ७७: मण मा मा माने भूकारः अधिश पूर्वीयत्त्रो दूषा ॥ अशकाक्षि त्राध कूर्याए ॥ यथा। यदि अकृत्व कर्यान ठक्राश्राता १ किल्माः भशकाक्षि रियम आकार्यम कालाभक्ष विविज्ञाए ठक्षामक अथया भशकाक्षि रियम न कर्काः। लाख र स्पूक्त पत खिडिल के ति ति का कार्यकाली कि कि कि मित्री में की मित्री मी की निर्दर्भ में मित्री में न्तु नैयः मत्या भारा । र्द्ध नेयः मयामावतं ॥ तुत्रः आयामेत्राद्यः र्द्ध त्रः व्यामानं॥ व्हिर्यः शः लाग्राम्भागा । इस्ट्रह्यः भः लाग्राम् ॥ व इन्मामभागः । इस् इन्माम ॥ उं सका मावरंग श्वाहा । हेन् सका मावरंग ॥ उं तिल्हाल्या तिक्यः श्वाहा । हेर्न विल्हाला विक्यः ॥ उं अक्षल आहा। देन अक्षले॥ उँ विकार आहा। हेर विकार ॥ उँ इन्या आहा। देन - दम्मा ॥ रेषि॥ ७७: भूत्रम अल्जन अल्जले अल्जले विव्यक्ति व्याधः कुर्यार ॥ - ७७: अभिवाहन स्टर्कक अकल्म क्यरि॥ यथा कुम जिल्प क्यमाना आसामानी क लाम प्राचान लाम लाम निया निया का का का का निया के असी माना माने के कि विव भागीमि त्रांभ मूर्किक भूत स्थ भू एक स्राम जगा कान त्याम अभामना र् केम भाव कामि अकल भाभ निवृधि भूकिक आउग्र शुक्ष के विविज्ञात्वा अव कितिसा॥ देखिमक्षा ॥ जिला भेवाक प्रांचा द्यान देगा । त्या त माना साधा । देन मा नाय ॥ उँ अभानाय भारा । देन अभानाय ॥ उँ कानय भारा । देन कानाय ॥ उँ देन नाय आहा। रेन छेनानाय ॥ उभानाय आहा। रेन भयानाय ॥ छठा यज्ञ रहिनीय भूतक भूत्कन त्राभ दूर्भिए ॥ उम्मणा ॥ ठक्ष भृशेषा ॥ उभर्भ भीषा भूक्षः भर्भाकः भर्भाशः मक्षिलं अर्काण मामुणा के जिसे मुना भूति। रेन नात्रोंनाय ॥॥ थें भूक्ष यत्वन ए अर्स यहा थक जाका देजामृष पुरम्म मात्ना यात्र नाजिता इकि भारा। रेभैनादासंभाग ॥ र॥ ত্রতাবারক মহিমাতো জনারা "হ পুরুষ:। পাদে ম্য বিশ্বাপুতানি প্রিপাদ্স্যা মৃত রিবি आरा देन नारायमाय ॥७ ॥ उँ विभाई १६ मिए प्रायः भागात्म त्या राजवर प्रतः । जला विश्वधा

काभर भागता नगत १७१७ श्वारा । रेम नारा ग्रेग ॥ ८॥ ७ ७० विरा प्राप्त पिरा प्राप्त र्थियम्बर्भः। अजाला रथ्यक विकाल भन्यक्षि अल्या भूतः श्वारा । रेमे वाताय्वाया ए॥ १० ज्यान्यकार मर्करूठः मख्ठ प्य नाजकः। मन् खाँ का का गारका नारका धारण भठरा भारा। रेम बाहायनाय ॥५॥ उँ जम्मान्युकार अर्क दूष १ अठः भामानि कित्ति। क्ना ए जि जिल्लि जमान्येज समान जायेज भारा। देन नाहायेनीय ॥ १॥ उजमामन्या १ अनाग्र । ताक त्या ज्या मृष्टः। भारता र प्रस्तित जमाजमा जनावा १ थरः। जावगः आरा। रेम नावाग्नाग ॥ ४॥ ४ उ॰ यक वर्षि विकासन मुद्राय जाउग रावः। वियत्य र अग्यन अक्ष आक्षा र अक्षेत्र अहरा श्वारा विस आहारावारा ॥ ।।-गए भूत्रम कम्थः किथा कि प्रायु । भूग कि भ्राभा भी कि भार कि भूत भारा उच्छात्व आहा । देन वाह्ययं ११००॥ उँ धास्त्राला भ्य भूव्यथाशी हाहू शाक्यः कृवः । देस जर भ राष्ट्रियाः अस्ता एं मूखा १ अजाराज श्वारा । वेम नारारानारा ॥ अ॥ ए हसः भा भवामा पाठ महस्काः भूरण १ थाषा गृष्ठ । त्याया कृत्य सार्व भूगा निर्देश प्रायेष श्वाहा। रेष्ट्र नावारातारा ॥ >२॥ ० नाजा १० ग्रीम अ विकल् नीत्रका की: अयवर्ण । भक्त रिश्वाः व्यायाज्यालाकान् जकल्मसन् भारा। रेद नारासनास ॥ ३७ ॥

उँ यर भूकरवन शरिवा दिवा यह या ब्राइ । यम आ अगभी मा अक् भी वा देश: भवक विः आशा । रेम नादारानीरा ॥ >४॥ उँ महास्मासन् भदिशरा फ्रिः भन्छ भारिशः कृषः। त्वरंप्रयुक्त माना १ अर धन भूक्ष भाषा । भेष नाहारापारा ॥ १६॥ ७ यह न यक्षम युक्त त्वा सुनि धर्मानि अयभाक्राभन्। लक्नाक भहिमान: भठतु यू मूर्कि आङ्गाः अखि (मवाः भारा। रेमे नावायनाय ॥ अ।। उँ अद्धः अपृषः भाषिकित्रभा क्ट विश्व कर्यानः अभवर्णजात्य। ज्ञाजुका विम्यम् मारा जिन्मार्जभ्य त्वव्रभा दा नभाषा भाषा। रेम नारायनाय ॥ २१॥ उँ विमाद्याउ भूरुष्ट भवास भाषिक वर्न তথ্য: প্রস্তাত। তথের বিদিল্পা তিমৃতু মেতি নারু: পন্য বিদ্যুত থকায় খ্রাহা। देव नावाराक्षय ॥ २४॥ उँ अजा भाव कहत्रि गार्ड अखत्र जा य भारता वत्रुशा विजाय ए । जम्मत्यानि भारत भन्य सिश्च सुम्मिन इक मूर् पूर्वना नि विन्द्रा भारा। रेप नावास नाय ॥ >>॥ जंधा मत्य १ थां भाजिया त्यां मार्वा भावाः। भूकी या म्रावा जाला नत्मा क्रयं वास्त्यं भाश । देन नावायनाय ॥ २०॥ उँ क्र वास्त जनयता त्या १ अत्यक जम्बन्यम् । य स्त्रिय वास्त्राणी विद्याण अप त्या १ अभन्ता भारा । नेम

गतायनाय ॥ २>॥ उँ भी महत्व लक्षी महत्व प्रवृत्त वात्व भार्त्य नक्षमानि सम्भ म्बितो कारा । देक जिसाना भूभा १ देखाने अर्खलाक भ १ देखाने श्वारा। देन नातारा भारा ॥ २२ ॥ ७ ॥ २ ११ व्यक्षः श्रूकः वाभ्रः भगासः ।। वाताभ्रत्मानिष्य स्थाने भारति वाता ।। उँ यामुक यदायात् भूगानि अस्टिवर्नन । देकां क्कायिवन्नना न्यूला भूकीय शागुजार भारा । रेम क्यांकारा ॥ १॥ ज्ञा क्यांका मर्गेक लामार्गेका मक्यां बंदाव । वार् नक्या भागंगा स्थाप द्य काभार भुक्त भारा। रेम भर्भाम ११॥ ० त्मर कुरुत्य नामा १ तय क्न भाम भारा। रेम त्नर्क जार ॥७॥ व भन्स कुल्टि नामा १व राजन माम आहा। हेन भन्स कुला में ॥ १ ॥ १ मिलु कुल्टिने आ १४ यह नभाम भारा। रेम मिल् कृताय ॥ ७॥ ७ थान कृत्यों नत्मा १४ यह नभामि भारा। देम आकाकृतारा ॥ ५ ॥ १ अव्यक्त कि नामा १ व यस नयामि भारा । देम अव्यक्तार ॥ १ ॥ उँ अभार क्रांकि नाम र्व यक्तथाभि भारा। रेम अभार कृषाया। । । । उँ यदिश ह नकत्थिन क केत्रक्रमा वेच त्रत्यशास सीका । इस त्राह्मिया ॥ ॥ १० तिस्त्रिय के विद्यास प्राह्मिय के वेत्र. क्या र्य राजक्याय भाषा । हेल् यर भुभना है।। २०॥ उं यर भूष्ट व्ह जाया लेह न व्ह क्या कार र यजनभामि श्वारा । रेन् थए भ्यूष्टा मि॥ >> ॥ उँ यहिन्न अ महासिन अ त्रित मह कुभण्या १ र यज नमाभि भारा ॥ रेम पाहिङ् आ ॥ २१॥ उँ यनभ यनस्था १ व यक्तमाभि भारा ॥ रेम यनभयनस्य ॥ १७ स्न भारता हिंद्यामित्यः ए

१० रेक रातारा १ कार्थीकः। ७ यज्ञ तर्किम् अकांस दर्भा । ११ ।। जें याद्वा त्यां गर कृत्र किहा या एक धनला वा भ्यू जे त्व दिएन । 'अवा वा त्याता आउ इक्क्रना या जिम्बा जिम्हा विषय विषय विषय विषय विषय । १४ । १४ पत्रा त्यानियाः ॥ १७ ॥ भूकाक वर ना चित्रका रहाभ कूर्याए। अभाषा। उँ कात्मा कार्योए भारते। उँ कात्मा १ कार्योए कामः कर्ता जि नार् कर्तामि कामः कर्ण नार् कर्ण कामः कार्तिण नार् कार्तिण प्रसल कामः कामार পারা।।।।। ও মকুর কারাজিৎ মকু: করোতি নার্ করোমি মকু: কর্তা নার্ কর্তা মকু: করে করিছাল। ১৫ ॥ ও জিলান দুরোমি মর্মান্ মাসিষ্টান गकार भूगकीन् यथ हिल तथक वथक श्वाहाला वर्षा । व भावा दित्रक धनमन भाम अस्स रामिक कामाः। तमा सिन् त्रें स्थानाय, त्रें क्रिका, हिलाः मासि, ममने से मार्थ से मार्थ से मार्थ से क्रिका क्षें क्रिका सिनाः त्रिका सिन् सिनाः त्रिका सिनाः त्रिक "ह मूखी "ह की हि हा न्रिका अक्षा प्रमुखा गुमा (भार भारत का का हा दान: भे नमाषू भारत।। ॥२०॥ ज्यारा सिक्टिकेक मार्गे॥ ४८॥ जूटः मार्गे ॥ ४०॥ व्यतः मार्गे॥ २०॥ व्यतः मार्थे॥ १५ मार्थे॥ १०॥ १५ रेन रूर्यः भः । यज्यिति अक्राअ वर्णा। १५

. ४ पूर्वः भुः भारा ।। १८॥ ४ भागामान कातामान अभानाः त्य सक्रका क्यावित्रः विव्या मानमार्श्याप्र श्वाहा । १२ ॥ १० वाद्यान महर्मः (ज्ञाच क्रिक्का मान द्वाला प्राह्म हर्केटि क्रिक लाके हिः अन्यत्मा (य अधाता लिगाह वर् विव्या विमान्या प्राप्त भाषा ॥ ७०॥ रेप शापादियः। उँ बुक ठर्मा भाष्म देश्व रामा मत्या मार्ग मार्ग वा रेम्ह्रीनि रम स्वरूक कार्वित्र विवका विमान्या र्याय श्वादा। देन क्रामिकः ॥ ४ लितः भानिमान् भाग द्राकासन्तर्थ ाश्चित्या व्यक्ष् वारारा व्य कारासाः क्याल्य दं विवस विवासी वृशासः भारा। रेटाल्य आह्यः।। ए उछिको भूतक इतिङ भिक्षल ल्याहिलाकि विहि देवि न ना माग्रिला व्य अध्य जा जा हित्र वित्र विभाग्या स्याभ भाषा। देन मूक्या दियः ॥ उ स्यिय म खला वा भूवाकामा (भ अधावा काछिवर विवक्ता विभाभा पृशाभ भारा । रेन भृथिकान्यः॥ पु अपर भारत सम्बं राज्य प्र प्र क्रक्रके त्यात्रिय विश्वा विभाग्या र्याम भीवा। देर अवी क्रियः ॥ जंभावाचाक् कायं कर्मानि त्य अधाना ज्याकित्र विविद्या विभागा प्रयाभ भागा। देम भग मियाः॥ उँ अयक जाते वन्डकातेः (भ स्थान का कित्न विवास विभानमा पृ माभ श्रीहा। अक्षास्त्रः ॥ ३ अयम साम्मर मायाम रिखायमेरिक मायाया ।

मधा (कारितर विवाद विभागा पृशाम भीता विभागा दियः ॥ ४ भावा त्य रहम् अः क्या दिव विव्रक्त विभाम्भी प्राप्त श्वादा। देन आह्य ते । ४ अह्य जा ता खराजा (फारित्र वित्रणा विभान्या पृशाय भार । नेम अखताकाल ॥ १०॥ उँ भव्याच्या त्य राधाना त्यावित र विवका विभाग्या स्थाय आहा। रेन भव्यावादा। ॥ ४०॥ जें क्रांश भारा। रेमें क्रांश ॥ जें क्रुलिमामामा मारा भारा। रेमें क्रुलिमामारों।। १४७ उं शिवित्थे आरा विश्व विविश्व ॥ ४४। विवित्का आरा । रेम विवित्का ॥ ४०॥ वं स्निम्प्रिश वायभारा। रेम अपिशावाय ॥ १८॥ १ यज्यिशावाय भारा। रेम यज्ञिशावाय ॥ ११ ॥ उँभाषाविधाताय श्रारा। रेदभाषविधाताय ॥ १०॥ ७ ७०० वर्ष विद्याताय श्रारा। रेदण्य कि विश्वांवाय ११ वन्। 'एं श्व भारणाला भाविष्य हिशावाग्र श्वाका । रेम श्व भारणाला भविष्य हिशा नाय॥ ६०॥ जंभ्र आत्माकार्य भारत । नेन भुगात्माकार्य॥ ७॥ जं कत्मार्कार् भारत। नेन का खार का या वर ॥ वर अक्लिमामा भाग कि की भाग सी भी मा सा सह । अञ्चल भ - अभिक्त १४ अर्थान निर्म (य भागान भारा । रेम कुल्मिमा आदिणः॥

ा भीत्याक भूग दः ग्रामानामान निद्यालामा अञ्चलि धरु भीतिविद्यालयाः भादा । वेद मीलाकामिकः॥ वंधामुत्रं भारा। रे म्धामूत्रा। वं वित्यत्वा त्रवाः भारा। रेम् विन्यादिकः॥ ७ अकः स्नाना। रेम अकः॥ ७ ध्राराय्याय स्नाना। रेम ध्रातिकः॥-ज्यत किला आहा । हेन ध्राकिला ॥ जे अकूल किला आहा । हेन अकूल किला ॥ ाज् अमूर्य श्रिक्ट देश्व मार्थ ॥ ईन्, अमेर्ग मिक्ट के उत् ॥ व्, क्रमांने मार्थ। इन्, क्रमांने जे अश्वमारा आहा। हेन् अश्वमारा ॥ जे अद्धाः श्वाहा। हेने अद्धाः॥ जे जनस्वित्यस्थार्क्यः श्वाशा। रेन अधि राज्य अधिका ।। यें दाक्षा त्वर प्रत्य आशा ॥ रेन वक्ष त्वप्रत्य ।। र्वेश्याजः भारा । रेक श्राचाः ॥ वेषाजाः भारा । रेक जरभाव्यकः । वेषाज्याविकः । वेषाज्याविकः व्याष्ट्रियः आगा । नेन धरमान व्यक्तियः ॥ यर अर्स्य ॥ उँ अर्स्य एक यः श्वाश । नेन अर्स चील थः॥ १ उत्मिन्यः श्राहा । वेद प्रभाष्ट्यः॥ १ देशाग्य श्राहा । वेद कामाग् ॥ १ देशिरदेग आरा । देन कारिका। अलाहिकारा भारा। देन लगिविकारा।। अवार्ष भारा। देन वायरव।। उं यत्रकि जगि यळ ठिकेचि नात्या अला यत्रात्य भारा। रेने यक्कार्नियाः। उत्तर भारा। रेन प्तर ॥ उर्शां भारा। रेन र्शांगा । वे र्शांगा। वे र न असि स्व व्यक्तिः भारा॥

उंभूकीय श्राता। रेम भूकीय ॥ उँ ठ न्यास भारा। रेम ठ न्यास ॥ उँ मिराजः भारा। रेम मि ग्रायः। व नक्षायाः भाषा । नेम नक्षायाः।। व इकायभाषा । नेम नेकाय । व व्यम्भवत्यभाषा। नेम श्रमण्डरंग ॥ उँ अपा जारुरंग भाषा । नेम आजामारा ॥ उँ असल भाषा । नेम असल ॥ जं असा भिक्यः आसा । रेप भिक्यः॥ उँ नत्मा क्रमाय भारा भारा ॥ रेप क्रमाय भ अभावता ॥ जे भर्कत्त्वणः श्वारा । रेम भर्कत्त्वणः॥ ७ विष्णः श्वारा स श्वारा । रेम विष णः अधासु ॥ उँच्छ त्या नमः भाग ॥ येन च्छालानमः ॥ उँभन् छिणः भाग । इत्यन् छिणः॥ उंभन्तिका दक्षाश्रामा। देन भन्तिका दक्षा। उंभातका दित भाग । देन भन्ना विले ।-ें तकारोध शास । रेट वक्षाय ॥ उं वात्य शास । तेन वात्या। उं स्वाय भारा । तेन वात्या। उं स्वाय भारा । देन धून ग्रा उवाट शहर कि वाटा। उसामा श्राम । देन भाषाया। एक भागाय शाह। देन जना यारे। १० क्रकेल मार्थ। इस क्रकेल ॥ १ ब्राचारे मार्थ । देई ज्यारे । १ व्यानारे । १ व्यानार मार्थ रम लामका:। उँ क्रांक श्राहा । रेम खाळ ॥ उँ लाचिकार श्राहा । रेम लगाहिकारा । उँ स्मत्काः आश । र्भ भारत्यः। । वैभाष्यः भारा । र्भ भारत्यः। । व भारत्यः भारा । र्भ भारत्यः॥ जंकामामार भारां। रेर्यामामामा ।। जंकाम्बर्धः भारा । रेम्कामित्यः ॥ जंभक्षायः भारा।

न्त भवकात्यः ॥ १ (विद्यास भारा । रेम (विद्या ॥ १ मा अत्य भारा । रेम मायस ॥ उ सारामार भारा। र्म धारामार ॥ उ मन्यामार भारा। र्न मन्यामार ॥ उ विशामार भाश । रेन रिगमार १। उँ देमामार भाश । रेन देममार ॥ उँछाठ भाश । रेन छाठ ॥ जैल्याहरू आशा १ हेद ल्याहरू ॥ जैल्याह आन्यायाध्याता । हेद ल्याह्यायाध्य ॥ जैल्या काग्रभाश । इंद लाकाय ॥ उँ जमात्र भाश । ईद जमात्र ॥ उँ जम्मात्र भाश । इदे जमा ल । उंड भाषा अस्य । रेन् ७ भाषा आर्थ । ये ७ ७ भाषा । ये ७ भाषा । ये ७ भाषा । ये ७ भाषा ग आरा। रेन शर्माग । जें विकृति भारा। रेन विकृति ॥ जें भाग किला भारा। रेन ब्राय म्हिल्ये॥ उद्भवताय श्राहा। हेर एकताय ॥ उपमाय श्राहा। हेर प्रमाय । हेर असकारं भारा। रेम् असकारं ॥ १ भेकात भारा। रेम् भेकार ॥ उत्साल भारा। रेम्यकला। उबक्षर्कारी भारा १५ वक्षर्कारी॥ ा । ए कारा स्विकी जा भाषा । रेम कारामाचिरी जा । ऐंदर मध भाषा । रेमेंदर मध ॥ उँ अगुअरए आहा। रेम अगुअर्थ ॥ उँ निवाय आहा। रेम निवाय ॥ उँ भ्राय कित आरा॥ रेम भव्याकित ॥ १ क्याः भवधातः अश्वधाता राक्षिणः। এव वर्षे श्राम्भ र्थ धात्रभत् किन धन धात्म भारा॥ रेन कुमारिकः॥ उ त्य पूना धठता दितावक व लिशियां यिवम्भ त्याकाः जिल्ला रास मासिकाला वर्गात्र भारा मेहि, मेर्किनाहर

S-10.

अज्रास्त्रिम् अग्राभ मार्गित। ४-७

थायु शारा ॥ देन व्य त्या पियाः ॥ वैयान नाज नामि यळ विकेषि गांशा व्याला मणावा न आशा । रेम गम्जिङ्यः।। उँ गम् के गळ मूर्ण गळा नम् नामि स्जामलो जान् गंभि जुरश्कि विभूत्वा १५° दिन कि न्त्रियाँ भागा॥ हेम भाषा भाषा ।। हेलि विनेषा हिए सः भगा सः।। अवः। विकास्तिन व्याकायम् माठ त्यान क्यारि॥ यथा व विद्वितः महाराष्ट्राम अमा भग्या अत्रंगः मिरीय ठक्त्राज्य आहा। देशिकात ॥ यक इस्टिन्त्या वाय क्यारि ॥ आखाराय अला अभकत्मक क्रांकि भाक स्थारि ॥ यक मर्का पर वार्ष त्वार दियात ॥ वयः तैकश्रक भन्त माय्र । अवसा १० एमा । जला क्ष्माका ग जमन् ॥ जलः भू भारणाक मानियम मिरिए॥ यव अगवस्तीला विन्ध्कम जकारं अधिवा ॥ अधिशास्त्र मन् हर्वेक्षं ते, यस्ति। तता व्लाधिया प्रधारिक तस्त्र (मर भाष्ट्रिक रिकार्त राष्ट्र शाक्रिक ॥ यें है सिखा क्रीचा राग राम् मिला राः मितिन सामग्रे व्यक्षे जमा य कर्माले । उँजामु आयाषि शिखरंग मुनात्मा स्यामाखरंग मिलाजा अर मिराहिषि । उँ मात्मा दिनी र सिर्ध माल्रा उराज भीखरा मार्था राज अरुक नः ॥ ४ छा र थाला अस पिकामा॥ ॥ ॥ ॥ जैनस्मा रश्च र ग्राय शृथिकि नमः। नत्मावाह नत्मावाह मलात्। नत्मा विकात् महत्व कत्नामि। ने अणिया ॥ ।। अठः आरो म्हिर विश्व क्रिट ॥ अ अवस्थानि आसीन् विश्व स्मिन मिन्न स्व जल्मक समायनाम् जे जुल्मा रेत्य रेजामिछिः भकाजिमिकिः भाग्राम्कि रहासमह करिका रेकि मक्कि।। ्वः त्रकेकक्ष्म्भगार्काः

CC-0. Mumukshu Bhavan Collection Digitized by eGangotti

अल्म कु विध्वाभाभि के नामक्षा प्रकृषि पूर्वाप्त । जिल्लाक्ष्म के भक्ष वासल्य अधिस्कू महत्ता अभिवस्तो त्राख आकृत्य विविद्यागः। ये वृत्य । अत्यव्यक्षेत्रा विश्वान त्वम दिला अग्रामि भीकाः। यित्रिका वार्ष्यः ला अकाता विश्वा दिशा मि स्रम्भाम भारभाश । देन व्याप्रियक्षाच्या ॥ ३॥ असुत्वाद्या देख सहस्र वास्त्व अपि सुक्ष्म क्ता र गिर्कली त्वल जाक्त्या रिजियागः। जैअ कु त्वा रेजल वाषा जाता की त्वित्रि रेका देशका कुछी। अव शकुता वर्ग वर्ग वर्ग वित्र मृजीकः। भूर्या न वारि भारा। रेम आग्निवक्षान्याः ॥२॥ अग्राम्यात्य केलि थक्य छकाभाषि अधिः भिष्ठिद्त्या राग्नित्वण पाक्ता विविधागः। उ अमा नहा त्य र भ असि भा मह अवस्थि भगा आसी। असा स्था सक वर्षा सारा । यहि एक आहा। हेम अग्राय ॥ ७ ॥ यक मन विकि मुनः लाह अधि अकेम हत्या वस्तार्या त्वजा आकार्या वितियामः। ये या ता गाज वस्ते या अव्या या विधाः भाग दिन्ना भरादः। एव जिल्ली अम्भावित्वा व विक् वित्य भू कात्र भूकः भूकं भारा। नेत् रास्तागं माद्रता रिकारव दिकारवा रितरित्या मस्द्राः मुर्द्धाः ॥ ४॥ ४ द्राम ने द्रियन् मा स्य : भर अधि मुक्रे नक्त्या वर्गनामत्या त्वका आकार्याचा विचित्यापः॥ अँ देशभा वर्गन

भाग अभान्वायम विभयम अथाय । अथा वयं मानिक बुख उरा नागामा अनिज्य भागभारा । रेम् रक्तांग ॥७॥ ज्ञाय निष्ठण (श्राय भगा निष्ठ ॥ १ जाग्राय भिष्ठिक त भाश । देम व्ययाया सिक्षिकात ॥ यू संयानवरंग शारा । देन स्थानवरंग ॥ यू त्रस्त श्वाशा रेम अक्षाल ॥ ॐ विकाद श्वाशा रेस विकाद ॥ ॐ तन्माय श्वाशा रहेम तन्माय ॥ उंशलमामि अक प्रवामिणः श्राहा। हेम् अल्लामिणः ॥ ज्ला नरगह द्वार कर्णात क्राणा गे आकृत्यत वन्नमा वर्षमात्मा जिल्लामु जे मुक्त मर्कि । द्रिल एवस मिरिज वार्यका दिला भाकि प्रकारि मम्बन् श्रारं। देन भूकीय ११३॥ भागात्मन॥ उँ देश व्या ्रथमन् कर्भ्यक भवक भवति क्यारं महत्व क्यारं महत्व क्रिक्रात महत्व याच वायकां निकार याय । रेममम्य भ्यमभूका भ्यमक्का भ्यमक्रि विन यस ला भीता पाका ला भाका शाका किताएं श्राहा। हेन् त्यायाय ॥१॥ जला यक्षक्य यम्ति॥ अग्नि र्ध्मा मिरः करू (मार्छः श्राविका अग्रा । अञाल दिला कि जिन्निकि। देन अप्यो जिला अप्राम्याभि भ्राद्य । देन भक्षाय ॥ ७॥ चूवः अभाभागित । उँ देव इस शाला आहि जाए विश्व भिक्षा मूर्त अ ए श्रुष्त या गरं क । अभिन् अ यत्म र अक्र गत मित्रित्य दिया यक्थान यह भीन्ड आवा । हेर तूसारा ॥४॥ अक्षत्यन ॥ उँ पृष्ठ म्मार रथारियम त्या रथा म्या दि आदि क्षेत्र भाजनात्त्र । यदी द्या व्या अंत अना अद भा

भू क्र विन स्क्रिक् छिन्। डेम्प्राय गृहीतां भि वृश्माउतं त्रिष्ठ तार्ति वृश्माउतं प्राथा रा.। मेन १ रम्भाजरंग ॥ उरम्भात्ते ॥ उँ आज्ञार भारत महाज्ञात्म भुक्षाना किमितर क्राय भारता শ্বেম মংঘ্রদাপতি:। ঋতের সত্য মিন্দ্রিয় বিলানি ও শুক্রম ইক্রফেন্দ্রিয় মিন্ প্রোম্বত शर्य श्राका । हेम लकाश ॥ हा ॥ नामिया ॥ प्रमाद्या प्रीविक्षिय ह आस्मा जवक मीजरा । भ त्यादाल सवस यः भाग ॥ इम्भात्र भवशा ॥ ।।। हिस्सा ॥ ० कात्यार कात्यार सार्वा वर्षी । भक्षः भक्षेत्रभाति व वाला हर्ष अञ्जू भइ सन नाल न ठ भाग । हेन वाइत ॥ ए॥ क्षान। १ (क्रक् कृषेन क्रवत त्राला भर्म । अत्मार्ग भ्रम् महिन्नाम् याः श्वाम । रेन् क्टित ॥ रेजिनवार् लायः अधानः ॥ जला विक्रभाग स्थार कूर्यात् । ७वाथा ॥ उँ वाजात মিত্র মতিতার মিত্র 🕫 হবে হবে মুহ্ব 🕆 শূর মিত্র 💝 স্থামি শঞ্চ পুরু হুত মিত্র 🤫 স্থামিকা भणवा शाबियः शावा । देम इयाम ॥ १॥ ० लाग विक मूला मध दक्वार ासून क्षा त्या र जाभाद्या दिव श्राहा। हेम जाया ॥ र॥ छ ध्या येषा स्त्रिय छ निव्यंत श्राहा श्रीश धर्मारं श्रीश धर्माः मित्व श्रीश ॥ केर रामारं ॥ ० ॥ व लासू न्यात विक् नक्षणायान् विक्रात्रण। असूत्रभागिष्ट्रभाव वेजा नक्षा कृति निक्षिष्ट पूज्यभू

श्वारा। रेन त्मेश्वारा ॥ १॥ उँ ज्या भारते अक्षणे वस्थान सदा भारा अद्याली क्विर्छि:। आक्र भाता वक्ले व्या झर्मन अगान आगु: ात्माश्ची: श्राका १ देन पर् लांश ॥ ७ ॥ ७ आता कियुद्धिः भाषि गोष्ठि त्रकृत् अर्थिकी । जिस्माशारि यद्धा वारमा १ आधीन अवत्य धाम्य श्रुयभाष श्रुशिनः अन्यः श्राहा। रेम वाग्रत ॥ । ॥ ঐবয়ক সোম বতে তর মান প্রবৃষ্ণ বিত্রত:। প্রদাবত্ত: মতেমহি স্বাহা। বিদ क्लक्य ॥ १॥ ज जशीनाव नगण सम्म मानि सिंग जिस भवा राष्ट्र भवा वग् । भूयाता गमा विद्धाम अनु (धर्वकिं ज भागुत्र कः अध्य भाग । देन ने नावारा ॥ उँ आत्म क्रमाध्यका भर्ताजा आ व्य व्राच्छ साला भाषाः। यः मञ्ज्ञाल अवि आर्थ अक १ वस कि आ अमा २ अवस प्रवाः। श्राहा। रेम अस्ताल । भूक देनायांगा भारक दे हिंगा ॥ १० तमाया भाषाचि त्या अवार्यक वा वि त्यमती। पळ्यातः भार्या अभ्याः। अभ्यः त्या अठ्यक भाषा। देद ज्याता ॥ रेम देशान्या मिक्ष अथः ॥ विकामानादि त्याम् भाष्य ॥ छलः मालक त्यादि त्या द्रमित् २०: मार्स त्या तरकार मारा। मकार्या तर्पर्य मारा। १०: मार्य म्यान देशम्बर्गण भीता। उठः ज्यास (दवनकः श्राहा ॥ जला यहा काहित्या कृष्टि । जलाया उँ । श्राहा । पूः । उँच्यः श्वारा । रेम् च्यः ॥ उँ श्वः श्वारा । रेम् श्वः । उँ चूर्यः श्वः श्वारा । रेम चूर्याश्वः ॥ उँ प्रारा सिक्टिकक त्रीश । देर लगरां सिक्टिकल ॥ वतः र्ज्या देविक्कार ॥ वका रेट्यामायमारी यावाक् अ भूका रूल भूका जायूलानिक के म्यां॥ यज्यावाल्याय ॥ ४ यूनाने मिता १ प्रवालि পৃথিকা বৈশ্বান্র মৃত আদাতিমান্ন । কবিও সমাদ্রমতি বি দ্বানামামরা পার্র দ্ব यस्ताः भारा। देन अपूर्य ॥ देषि अत्मने मूर्ना इकि नमाए ॥ उक् भुवने अध्यने पहिन्या क्य आर्फिना विद्यार्थ। ये प्रवाशांक विष्या गांक विश्वाशांक मिन । भन्भांक देश त्तर यक के आरा। ये पालशाः आरा॥ ने विपित्ति दिनय अयाका॥ उत्वा व्यक्ति विः सन क्षित्री केवी ज्ञानका। भैंते मन्त्रपद, ज्ञानकार जोतं। त्यादका । जातका ज्ञान भीता ज्ञान ज्ञान ज्ञान ज्ञान ज्ञान मार्जन पूर्णए में भूमियान आभाषध्यः भक्त रेजि भरियाका भूलीज जलन सि यः अभूक । जूर्विष्या अल्य अक त्या भ्यान (हार्के य अवग्र दिशः। रेडियव्यन स्याना नायः नेमानाः नेत्रीक्षेत्रे किता ।। त्रामाना मास्याना ॥ त्राक्रियमि वार्मेश राकुनास्त्र जेन्नात हारामाल (न्यव लानीसप्ताताता लानीसप्तानात्त्र साम्सल देन मर्भ्या अन्तर्म ॥ क्रियम् वाक्षण वक्ष विकार ये में विकार्भायण कर्मेता ॥

অনেময়ন্ত্রেণ মুখ্যকাদান পৃত্তা অঞ্জনিনা অগ্নিদ্বিশা তি: বার্ণ প্রাশ্রীয়াৎ গ-ज्यस्था ॥ ० त्रामा शिक के शक्षकः भवाति सः द्वामाजः । भण्यायन निः भिक वायु का ड वलान ठायुश्य क बहाता वू भाग । क्या प्रिथ्म भाग जारे वा भाग भाग व वर्ष वा खेजभाति एवल ममार्॥ जन आन्य भमातामः कर्यः॥ जे अग्रत वाचि भ M4: 4 श्चिया यरण पाला १थाताठथाः। ७० जानम् भू १थाता म् थाता वर्षमा त्रिम ॥-३ उगाल लाय गुलिंगा वर्मितं शाया शत्यायः। लक्षायम् विक्रवेन स्माय का नेस्त्री॥ - जे थरका चू थक आश्रीमः श्वारण जि॰ जांच खाला पूर आजायभागः भक्षण्याहि॥ ७॥-विभाग गर्मा ह विवादार्यन आकाना प्रिन भागाता भागि ॥ अत्य द्वीला धानी गरि। उला इस्रो भारि। अक्षाल्या कथा। उ अक्रांप्र महिसा मृत्यं महीत धर्म मक्षेत्र । सार् श्वामम् गः भवागा भा के सन धंग लवागा ॥ देवा गि क्रिमंद्ध ॥ व तक प्रक्र ग्रह मिल गर् मी (यानिगार भाग । उँ वहाल यहा यक जाल भर् भृत वाक भर्म वीह सुँ पृथम भाग शहिर्या श्वमात्रः। रेखात्र विभ्वत्। ७७: आठातार् पे भृषी व भीजना उत् रेषि म्या भीजनी कृषा १ नारी के त्रमेर मार्थ देश दिस्सेएत ॥१॥ नासि धेवी क्रायन नमात्रीत हिलक केर्याह ॥

थजुरसिभन्गभ म्र्या ॥ रेग

20

े देख रात्रेक्ष, केंग्यक्क्य भगास्य : ॥ स्थितं स्थम केळ्ट, ॥ दंः॥ श्री बामः॥ तैक, वार्य मेंक्या। तू. विकास कार्रक, श्रीत । विकार सिक्या विस्ति कार्य, वैक्ति ॥ त्रा वृष्ट्र नेक्या कार्रेक, दृष्ट्रिया । तूर्त्र सिक्या कार्रक, यथ्न । तूर्तिया या

क्ला विश्व ज्ञानि (क्रामान सुर्वे असाम विश्विमार्। कृषिय दिवस आठक लोका व्याप धालः अरु अत्य कृष्ण गान्यक्ष ठातिछिः अव भूत्यित् गार् भूकि गन्नाजीतात्वे गला आठा भा विशिव(शान्त्राविक बेक्ष प्रवा भूका गानु भक्ष विवा क्यां भ्यां भागा है। असिका कर मूर्विक अन्तलम कुर्योद ॥ यथा कुर्वालल कल का वाम्य आआकृ हा क अग स्याज्याय भाग भागक र प्रसंक अर्थिक अर्था म्या वाला वाय वा अर्थ भवंग निधियक आशिकोषिक आशिकितिक आशाबिक जागायं भूगी नवं कार्यो गांधना भागन भूथ रजागाविना॰ अतला नर्यकाना॰ कात्रल पूजा अनाम निर्यक्ती य अव्हान निक्षिण अलास अभात कार्यकात्व निवृधि द्वाता जीव वकार्ता होत जरात मूर्णानकारा मर दस भाराय भव्य इ० म विशिना मर्ग ३० म महाम ग्रेश

शर् कार्यका ॥ देशि भन्यका बक्या ने नामा । क्षित्म ॥ विवः भैक मार्श् । ति उँ प्राचा ता महिलामा पूर्ण विवर्षा भिक् भूकी भिक्ष सा भूभवा मनूस भामिता पता १ वर्ष ॥ विक्रिकः ॥ एक प्रेक्ष राष्ट्र द्वा त्यु यः मूल्यः आगिष्ठः म्मार्॥ प्रथा प्रमास्य ज लिमा हा: भारत चरा लाभागा:। भारत मूच भूगः हुई। भारत चरा जिसूका:॥ नाराह ामि मैंत मिल कार्या । १ दे देश से ति ति । भी के प्राप्त में नियं में किये में किये में किये में किये में किये ज्य म्यार । उ अर्थक तर् पारत १र लाका १र अर्का शिष्ट ॥ यस मूयाका जरावि जमाना यायव अग्रार ॥ १० अर् अका र्भात्व १ रू असि विचि भुग्राय प्राम्त ॥ निव भुक्त १ रह असी प्राचित्र । ज्या ह युष्ट्रातिनित्से ॥ अय मूबान अक्षान वक्न खळाद ॥ नाम किन्नार् क अय मृत्यान अक्षान । अय मूबान अक्षान वक्न खळाद ॥ नाम किन्नार् क अय किनिडि। अयवम् विभक्षिन ॥ असाकिना राजा १३ व्यक्तिया अकर्भा वनाए इः गार्न्स्त अः माल महार के अस मी ग्राहाः म्यानार मधाराम मारमर गर्भ काला र मि। मूर्नावाय क्रम्म भाष्रिकाशि॥ विभादिक पृथाद्धिः क्रवामिव कर्पक । अलामार्व अंथजादि यः नक्रकः। मंग्रा मार्क्साः ममला क्राता। मूल्यमा विक्रिमा लाकियना हक का जिका हर्य हरायि। यूका लिया मारी समजा न कर्य विष्या न विषयः ।

बला स्वाभग्रेमच्चा अक्षिनि भामाग् । अञ्चित्रियना मः। भिनान विष्युक्तना सिम् उँ अर्खाट्या दम्यवान्यः श्वादा । देखि जाल जल कित्यद् ॥ कीर्यार्म आय्ने मूर्यायः श्वान विधा य ॥ अभावास प्रस्तासर्ग अक्राम कर्तामि । देनिमकल्या ॥ अमा मूर्नास्ति गृहीषा । उँ वस द्वा आग्री: भूर्य: भाने॰ राव्ह्यादा । अवस्थाति॰ राव्ह्यादा । उँ आत्मा ते राव्ह्य भारा। हें शिक्त प्रारोण किल किल किलार ॥ अन्छार अर्थ आसारि छित्र एए ॥ नामर । उँ भू व्यक्षनागा भे दिखिसमाग्र त्याकिसनाग्र दिस्यनागाभ्य सालेसनाग्रभ अर् अर् मनाया यह भारत्र मनाया यह प्रक्रिमनाया यह हि छिष्माया यह । जी दिसनाया यह त्यात्रासनार्या मह । अरिस्यानामह कूल्याला १३० जिस्सा हर्यः हत्राधि श्वादा ॥ देखि स्ययं प्राम्भिक् रेखका शतः श्रीश । यक्षाक्ष्मि विद्या स्पर्ता मार्गा त्र तद्या स्थित स्थान एम् रेक्म साय हामां । त्रमामा जिल्लामा जिल्लामा के भारत मह मानु में जिल्लामा के ॥ ।। (के क भक्ति विस्कान्या गण्यां सामास्यः। कामात्रामापिक भक्षिण्या भूमा द्रावृ ॥२। जि असाम रे अयु, वाम त्यार में मार्टिंड, । जाम, जाम, विवान के असे भारती प्रा

मन्।।। ।। प्रमेन नर्यन (११ वृष्ट दान्याद्याय । नय भी वृष्ट । यथ वृष्ट । यथ भी वृष्ट । यथ भी वृष्ट । यथ वृष्ट (ए (किट्यू जा जिन कार्या । ए। कर्न कर्न कर्म कर्य मुं कर्ण ते कर्ले। अइ। अर्थ মেব শরিঅজ বুধা বেঞ্জিত মান্স:॥ ৬॥ চতুর্বিশুম্য মন্নাজ্যা বৃত্ত প্রায়েম্য নিম্পৃত্ত:॥ क्रव्यक्षिताम्निव किरा वाश्चिव थगन् स्माम्वण ॥ १॥ आक्रिक अर्क्ष वृत्वत्या म्याम् यसं मकिला । मञ्जा कता जा विश्वभाद वाक्काय धानकः ॥४॥ न कार्रिक भागिमीए। आधितः अक निर्णाः। (मृत्र जल्पराअस्ति) अग्रत्र जन्मा भराय शिलाज रक्षाम् शालम् नग्तिश्वाभतिष्ठ् । लभ्यंक वित्रक्ति भ्रम् नग्रं विना ॥ ५० ॥ म्ल्वित भ क् राक्राः अक्वार्यम्बिगाः। करंका एत्रतिक्र हात्रा विश्विक में सिवः॥ ११॥ जला विच्छिए द्वीयान् अर्थया जानि अ भिष्ठ । का श्रि त्य कद्ग्रायना श्रि सक् वाका इ भक्रुणः॥ ११॥ भणभादा मिळ जल्डा १७ विश्लाली (मन्धानाभ । वक्षा जानाभू भीतिन भिक्ष भा वाकावादिका ॥ ३७॥ न तम रिंध वाक्षवाः किन्धिन्मू क्षाव्यान भवाववः । धभात्याव भारता वकु कर्का थः भ्रम्भेत्वा १ प्रचः ॥ १४॥ देखिए विश्व अर्थ अर्थ मन्तु र्विष्ठिः॥ विल्य महत् अ

राजाति मक्छः मक्छा मृगः ॥ उत् । उत् शत्र शत्र मृश् मक्ष भक्षी मत् । राजा कर मरा अस भाग निम्हिया अयुष्:॥ ४८॥ अस धन् विन्यानि न विभागि कर्म हन। भराव्क छित्रिकाचि कर्मना धनमा गिरा। म्रिन अर्क पृत्व यः अर्मवा प्र मक्नि ॥ २१॥ वजान् सियान् मुश्चन् साक्षा दिया देवा वल्याक युन् । सार्थाय ॥ ं आर्मिक ठन्मायन ला निल नह। क्लेर्स्मित्रात्भा क्रम्य धन नह।। अइ नह वाधि नह उट्य अस्ति। धर्ता हि प्राचालि वर्भ वृष्ट् ॥ आपिक ठ सामीन् असीन् प्रवान् क भी आसिल जिलिलान् ग्रकी मिन्द्राक्षिण जाना अग्राम आसिल्य सार्गर ॥ ब्राला नामि संसाति क्रानिक सार्वकी सार्व मार्थ नामि सार्व के सार्व मार्थ के स्थानिक के स्थानिक सार्व मार्थ के स उमाणा उँ थः आविवी॰ धारिणाचि ७ए असिषू संदिशः। ७ पूरः आविवी॰ धारिणा शि जार्म त्याम शिया । १ मुं भारिकी भारिकाशि विरंग ता नः भारत मंगर। उंरू र्वः भः आ वियी धारियाधि ७ए असिष्रित्व भे अति प्रतिय शियादि शिला त्रा नः अत्यादगाए ॥ जै भारत त्रक्री भारतिया ॥ रेजि क्रिणिवारभा अलेव भग्भाका न्यः कावा। क्षाक्षालः भन् अपठाः ठव्यक्षां भारति।। उ व्यव भागः भीशा पानि अया

শত্য স্থা: 13॥ उँ ত্র্প্রেম দীধারতি অশ্রেদ বস্না ॥१॥ ওঁ তর্প্রেম দীধারতি স্শোধারত ॥৪॥ বৈত দিল্লা উপতি স্শোধারত ॥৪॥ বৈত দিল্লা উপতি किए॥ ७७: कृषा अनि: अन् भेगर्व भार्याए॥ उँकात्मन भन्मा वाहा मत्वे भववान क ार्था जागा सीला निस्ता नक्षा म, जार्ग जं श्रीहें, ॥ १॥ भक्ष प्रात्म वालं वालं वानं वेति शर् द्वं । द्वा भव्यक्ति का का ये क्यं क्यं भागतः ॥१॥ जाहिमा भक्ताक्र माल त्रकान विक्रल । अग्रुसु (म ज्यानाण पाहिमा प्रयूम्मन ॥७॥ वाहिमा भर्मलातम वात्र्वभनावन । भन्नभु (म समस्यात भूत्यंत्री काक भाक्षम् ॥४॥ अव्भक्तं नश्र इजाना भराभगार । भूमा कर्ना भाभन साहि या भूक साठम ॥ ६॥ भिष्यावृ आवृ वसून भाज्वकृत्भूजा भुणा। भक्षा अक्षा भक्षा भक्ष प्राध्य श्वाभक्ष भावन भाजः॥ ।। भग्रभाजा निजा क्र विवक्रवर्गम् त्यवि । वेजिनिक्क प्रति श्राध्य भारति भाषः॥१॥ मर्जवास्य भाषा इःग्र ज्या धिका हि निर्माय। निराकाल भर्ष मृत्य भिमामा अ विविष्टः॥४॥ योगक कामगकात्म र्पामक र्वात मार् । यक्त काला पू अवला त्यामात्मः भीवित्वा ग्रक् ॥ न ॥-- अख यव भार्यमान कृषा कृषा भग्नि खाला। प्रकाव्य भक्र म् थार गर्जाम् नेव मुख्यार ॥ ३०॥ कु विना भम भाग सि का मिन जगदी न्या ने कि काषा मिन राक्षा भूशार नवा भाग ।। ३३।

भन्भाग ननम्ति द्र भीवत क्रानि नाम्य । भीवत वर नामास वर्षामधाभी निर्दा ॥ ११॥ के आर्थाय ॥ द्राह्म राजन भारत मिया क्षा नमक्राइ क्रिके ॥ उ बक्त भागित्रामा विश्विया विभागित्र विभागित्र विश्व के के के भाग मक्ति विभाग मुल। क्षेत्र नमभावं ॥ उँ रूर्वः भः वक्षवीर्य भम् हवा । उँ मिया विवक्ष भूभी पू ए जानकी जम श्रिनी मिग्राल अभुक्त भान मिया स्ट्रिम कराया कर । बेलिशक्त मिया मूर भारें राम रख्य भार्मा मा मिल रख्य याका भवीं रख्या ये याका भवीं प्राया লাহুত্র, মথানতে মৃধ্ সর্ম, ঐবসারে। আর্কাস্মান, লাহুর্মঞ্চ মরী, মঞাদাধার, বন্দের স্থ তে দ:। এক্ষোপরীত বহিন নিবসে গুমন্ত: প্রবিশ্য মধ্যে গ্রুড় এ পর্মণ পরিত্র ধলা বল खान विज्ञारण भाषा अयाव्यकि याका परीक किया देनका श्रानिना अव् ये रू: अभूड भाका श्वारा। रेडि अन्त्र पूर्याए १ (रेडिनार्ड भार्यक्ष भार्यक्षि भार्यक्षि) आत्रन अस्ति। नार्यक्ष র॰ কুফার্ছ।। ওঁপ্রস্কানাম প্রতাবেণ প্রিসক্ষা থু শতানি ত বিকোর্মন্র প্রতাবেণ মজান शिवारं नमः॥ आव्य मस्मिन ग्राक्ष मृत्रभू शर्म । भन् । भें रूर्यः भुः प्राक्षाम यय्क्षभूव । उँ युक्त नाभू भर्भाति विक्षा नीभू गणिति ह निव नाभ भुजाति। ग स्थान करणाभरे । द्रमास ला वारंग, केंग्राट ॥ वर स्थान तत्यान प्रतिकार प्रविक नकी कुछ सक्षान्य मक्सिने इस्स कृष्ट्वा आत्रन भारतने भर्मन कृष्णि। यथा उँ विमास বিজ্ঞান সুনি কিতার্থা: সনুসম যোগান্যতথ: শুক্ত সত্তা: গ্র তথক্তলোকে বু সারা जकाल अवाभुजार अविभूठानि आर्ख। रेजिअल्बन अन्मर्द यकीकृष्य कियान यत्काम वीजक अकाल्य उं पूर्वः भुः जरभविन् वर्षावन्य जार्गात्व भ भी यदि शिया या नः श्राह्म पाए भाषा ग्रम्भ भाषा सम्भ जें आत्मा वि अर्क दिन्छाः अर्वतात्मा दिग जात्या प्राचा कि शाचा उँ रूर्य : भुः। रेख मध्य प्रते : भव प्रत्या ।। जन आठका प्रत - गर्नु श्र गृहीवा। उर्दः भाग माश मीरार । उर्दाः भाग ने विकीय वीरार । उभः भारा रेडिकुकीय भीरतए ॥ ७७: भूनताठ्य जल गृहीद्या विकृष् भार्यना अकाव्याह । यशः। उम्बालाग्रास्त्राला वित्या ज्या अभार्यत्यक्षाति। उमर्कान्याद्याकालात्य का गार्ड मह सर्व म्या अस्मिनाः कारी। मैसा क्यंन माग्नः ॥ यू गार्डिमाः अस्पा क्य गार्डियन्यान विक्रल ॥ अन्यक्ष (य जगन्नाय मार्विया अर्मुभूत्न ॥ यार्विया अर्क ल्यात्यम वार्त्रप्रभगावय ॥ भगात्रिः भगमत्यात्य त्रीत्त्रवीकाक आक्रम्। १० लक् मय्या नरंद्रियो र वाया अयं मा अया में मा कर्षा मा अया म्याहिशा , ने देशका तरा मेछ। जला मन्न गृहीजा जंजज्य भर्ति जल्जाः किन्विए कार्राय भाग । देखि मन किन्यर भ

ততো নির্বিকার পূত্য দত্র শধ্র: সন্ এক্ষণি মনো নিবেস্ট উদ্যায় পরিধেয वस् किर्मा कल भानामिक वाक अखरा भर अक्र करिया देश वाक निया यम भूर्न वक्ष भरा निव पिराभुरता गृषा भर्भाष्यान थाषा गृतीप भश्रालाका नं स्थान करीय द्वात्रकांगा नह खिल क्षमांगा नह त्या क कामांग नह केला ला है - किसा कर्य क्यायोक्रका ज्यानिया वायम् व्याप्ता द्वा त्याया क्याय क्याय ((वर्षः, वर्षष्ट कार्याचाव्यात)) ॥ व्र्टः भुक्ष में ग्रेग । व्र्वेदः भक्ष में ग्रेग । उभाः भक्रभे भगा। उँ र रूरः भः भक्रभु भगा। रेखि विः भन् धक्रभं देण्य भ विकारिया ॥ यू मन्त्रे भवर्ष रिख का भारत ॥ डीह माका हियारी, रिक्सिक লি ক্ষিপেরে। ততঃ সক্লাস আনন্ধ মনসো সৃত্তা উত্তরান্তি মুখেন কিয়া শূর্কা छि भूरियन रवतान अश्व भमानि स्थार वा अलेग वा समानि । भरिक्ष ॥ ज्य सम्म क्ष्मेला गुरु भूवा जिसम् वाम् । यथा विकेलिके संग्वात्व मा क्या न হি সজ্ব । শিষ্ক শর্মহ্ স মু তথে মানা না মি সূতলে ॥ দ্বামার দাগতা বন্দ: দ্বামার मर्स मूर्षिण:। श्वाय मदासा रूभः विक्षे विक्षे वि भा अप ॥ त्याकाना करवाताय उ कान् श्रह काछ्या। मलक्रमल्यल् विर्शम को भीन का भाग्यामः श्रीकृष्य भार्यिया। - 3-763s.

क्रिकाभू खाँछ ॥ आठार्का दल्य ए धार्नि भन्न आह सिग्नं यह ते ल्ये कि स्वर्ग वार्या ।। लक्षा जियां वर्गार्थ वात्या पृष्णे ल्या का भका वा धर्म लिक्षा हो दल्य पृक्ष कर्मा ।। हेळ तुं वा शार् शुः अखातं कामीन म्मार्॥ मिकः प्रवेदन श्रीकृष्ण ॥ जला गुरू उर्वीग् विविधान दुग् नमाए। मिकाः स्रान्यत्र श्वी कूर्याए॥ जल्येव जमा क्षादिक नमाए ्रकः सिकः ग्रिकाः क्रक्षं मण्ड भार्थात्य ॥ यथा द्वेषवार्यमः आर्था व्य पर यह भार्या जित्रवार्य ॥ उँ तिक्र राख प्रथा हक अतः निव करतं प्रथा ॥ हेन्द्र राख्य नहा। हेन्छ ज्या मर्खे ज्या मार्थ मेल्डमा ज्यामा राम ॥ हेन्ड नर्ष आर्थः॥ उँ भिषिश्चाधन रिष्ठ स्म इत्त तृत्य नहा। हेन्ड ।। हेन्डि उं देवक विकारित समाधा लाजायं समाधा रिज ॥ उत्तर्वा सूत्र मुख मुख प्रणा हकः र्विस्या विन्यून थे वित्वक्ष ज्याम्य वर्षाभाइ ।। रे क त्रिन भरत्न ने म्यावने क्र्यार्॥ अतः भूगक्रने भूताभिक् म्ल म्मार्। मिकः स्नेरवन भीक्रारि॥ जला ग्रेस प्रथं में दिन यह नाश्यी सन्त्रा लालान के बार्ग में ते तारं । ग्रेस मधा के या (भारान भरो गमन क्रफेर ॥ गुरु: श्वामतामात्र मुकाछि भूरणमात्रिश ॥ ७७: निशः প্র স্থাসনো লাই ইত্রাভিস্থেব গরুত্যসমেলো প্রেস্টারা। সংগ্রদার তার ॥ जयः मिश्रः द्वानरवन क्वा नेडियरस्न क्ययम् गृहित्वा ॥ ३ ्याय वा लाकी भारति । वस्ता भ्रवात्म विकाल के वर्षेत्र भ्रवीत्म मिला - जन १ आशार् नाकत्यन्यः। वर क्र्यायः । स्विति । अनुसाय नथः ॥ व्राप्त भण्य अक्षांग्र करे भ देश भारा अक्षान्य भारा निशांग् उ विष्यत्वने जलान मुझ शीवा मुकाक्षण गक्त स्थम जिथिलाक्षण अभागा अर्थनाम्हरा उँगान्न य मान दिन इंडिशास्त्र भीयित्राचाक धनेरवन मसमूखभाजा ७० भा मूद्र ॥ व रेजिसमू भूदा धर्म ्र विष्ठभए भूत्र अन्ति। जे वेल प्रक्षा प्राप्ति ।। एक: रुट्टे एक्सालान দ্বার্মসুস্কর। ওঁদ্বার্দ্রভা তেশন্ম:। তত : প্রণবেন দিফ হস্ট্যর লোকনাদি কান বিখ্যা नुरभार्य। अभाग्रकाष्ट्रियाञ्च भाजना जाना विभान् विभान् वार्य वार्य भार्षि आउन त्रिन टोशान विश्वान् रभार्य कार्डि भश्या प्रश्वान् विकी द्वानादार् ए अन्यमिस के किया विद्या। आध्यम सिक् दिर्वार। जयः मुद्रास्त्रानि स्वा वात्यं एत्यान्यः रेकारि मार्वर।-्रियः स्मृति मास्त्र गास्रमूर्यभायाः कर्त्रा भाषास प्रसिद्धं कराने जालायः मृत्रा रहारिका जिर्द्यादिश् वक्तव कृष्ट्वा नेषि आसानुमार्का ॥॥ न्याआदिक विशास । एषः भ्रमिकल हेणवसूत्यन भर्यदाश्राय था कि देन विश्वाति त्री विश्वाति कार्य विश्वाति कार्य विश्वाति त्री के देव । विश्वाति विश्वाति विश्व

पार्गामचर्नः कैक्टि॥ अभन्मासक्यं अत्याला कैक्टि। ग्रन्मा व र्तः लामाव्यात लक्षेत्रम्या प्राः। ওঁ বুব: প্রাদ্যাপতাতাবে তর্জনীতা নয়:। ওঁ মু: মূর্যাতানে মধ্যমাতা নয়:। ওঁ পূর্ব: মু: একা অনে অনামিকাত্তা নয়:।ওঁ দোনাঅনে কনিফাত্তা নয়:।ওঁ সভাতানে করতল স্থাত্তা अस्माग्रेटरे ॥ यद क्रम्गादिस् ॥ उँ इः आप्राज्यत्व क्रम्गाग् नमः। उँ प्रवः स्राप्नाज्यत्व निविधि श्वाका । जंश्वः भूयम्वात मियाचि वष्टे । जं पूर्वः श्वः श्वः श्वः श्वावात् कवठा मृ । जं का नाकात् त भनाग् वर्षे ॥ उँ मकाकात्व क्रमाग् हरे॥ उड क्षकादिनामः क्रमिर्॥ प्रथा ॥ निज्ञान उँ भनेव कान क्रीय हाकामित अक्रांनयः। व मेंका मार्ग्योक्षन्त्र नयः। क्रिवं महामाजा प्रवार् नमः । मिक्सन कूँ ए । वें अ॰ वीजामनमः। वामकूँ ए वें उ॰ मकत्मनमः। मकीत्र। वें भ॰ किलका यनमः। ज्यार्थाक्ष्य उँभ उँ (भाक्षात्य ज्ञान वितित्यागः॥ वेजिसकामिनाभः॥ विला प्रधारम्य क् मग्रीम गत्रा नश्मारं विशानं गर्फरामत्नामिनिक क्रेम मेंद्र क्री एखांक्रमें मामे वक्ष र्षा श्वा गुरु था थार्या क्यारि ॥ यथा की गुर्श रंगवन् अमाम् (का वास्वार्भ इत्॥ अभक्ष्म प्रवाभवनाम् भावभभावामा अप्रात्न भा छात्र्य ॥ उँ या व्सान विम्शा भू कि त्या वि तिमा के छाहित्याचि जिस्से ज इ त्विभावा वृक्ति धका मा भूभक्ति महाने भक् छ

भक्ष ॥ उँ ज्वाना भ ज्या पृश्वार भारति भागिष्ठः। याहिशा धानि भागीम ना निम्मुहः भर्यवः भानुः भर्य विस्म वि नार्यः। भर्यभाना भागि म्याः आं कालम्बे अ श्वाशर्भात्रने भवः ११ अस अपृष्टिप्वार्ति न विभागि कम्हन्। भरायण ठित्रभाषि दर्भाना अनुआ शिशा ।। आविका कुक्षआर्याने मुखे ७ मिन जी विकश व्यक्षा का शृष्ठ भारतन अ की व श्र भूत भूष्ठ । ने बि एक भार्यता। जला निकल का मू भूतो निमा भ° भौति निविधे (दर्भानभ° । अक्षकाना भू भौतिन भिक्ष भा° वाकरवाविषा ॥ नत्य रेसिवासवाः क निष्ठ-मूज्या कार्य भवाववं ॥ भाषात्वेव भवावबु सङ्घाधः स्केला श्राष्ठः ॥ अधीरि जाता अ कि कियार। जिल्ली माध्य ठलूके यं भे भन्नाया थिकातिले ॥ एक विका भितिलार ॥ अला एका त देव अक्रियानक प्रयक्त भाव्यान ध्यानू अनुग्राग् ॥ जल मूर्ग नाड्य भूक्या विष्ठ वृष्णकी द्वारण अगरवे राज्याक्रीलतामरकन अगरवन मिद्धामिता १ जिसिरकार ॥४७: भानामि रेजामिशासि विवारं मिण्या यन्या प्रया शियाः मा वर्ताः मा त्राजव व्यर्था। मात्र हेसा व्यम्मानः मात्रा वि

10 700 2 7

कू के के का नामा विकाल नमास वाला दिलाव में के विकास में किया में किया में किया के विकास विकास विकास विकास विकास ঞ্জামি ঝাত বার্দ ফামি সত্ত বর্দি ফামি তন্মামবরু তদ্ধ রানুমবরু অবরু মাণ অবরুবরার उँमानिः भानिः भानिः। रेडिरार्रः उँ॥ जनः मित्रार्थे रसु मुक्य भूक प्रामेश । १७ मना २० मोनि। उला मिकि पेदाका उत्तरी वृक्ष नियक्तर्य निशाय ॥ जै अअधिक ल क्रम्य ख मश মি। ওঁ মহা ভিত মনু ভিত মনু ভিত্তে ব্ অস্ক।। মহাবাত মেক মনা দুষয়।। প্ৰসাতি थ्वा निध्नफ्राक्शकः॥ वेशि। जला एकः निका भिराप्ति भागति भागति प्रमान प्रमार ॥ उठ उद्भुगारा निज्य अञ्च युक्त भारत्या नक्ष व्यक्त साहित सामक सामक सामक सामक भारत विरात् राभकल भक्ए भाष्म्यभन्न समिलाए ॥ भाषत्रभार्थः॥ आठार्ष रहस्तन वाराख्र ॥ अभकी कृष भक्ष भद्राय्त जानि अमिलार ॥ ७७ अर्था वार्य अपूर्ण भित्र। अर् असामि प्रास्तान अस्मा दीनि निसा भागा वास्ता भामा प्रसे डेमिनिगारि॥ विष्ठामार्थि (वाधाम् १ । उठ: सर्वन गामकी भूमिनिला । गणा उँ का वाम् भू विश्व द्र्य जित्राग् शीमिष् जत्मा नवः प्रात्मगार् ७ विजाग्रेश ॥ जला छतः प्रका क क्रा क्रिक्री

न्छाअभू सिम्बर्। यथा उँ स्नुनियभण अर्थभूरि भी गृथी स्नः स्तुभाका प्रवा थ रीज है अकि: भे किलके भाग लाका ले जला विनियागः। जैनित्रिय अनुर्थाभूक रम्यमः। भूरण्यं भाग्रेकी इक् म्राम्यमः। क्रिक्यं भ्राम्याका प्रविवादी नयः। प्राक्यं या शिकाग् नभः। भामर्गः उँ दे॰ मकरंगं नमः। भकात्भ ० मः। किलकारंगं नमः। निष् । तवः क्रांस नामी क्राह्म। ग्या व्या अक्षेत्रा व्या है। व्रिक क्ष्या व्या । व्रिक क्ष्या । व्रिक क्ष्या व्या । व्या व्या । व्या व्या व्या नाम्या है। १३९० पण्डिका का एक ॥ १ ता व्यव का के क्या का लक्षा में प्र उत्राद्धा अला मेहि सिर्गेश क्षेत्र ॥ जय असंग्रासिर्वे काश्चर ॥ त्या शंक मिक्का अस्ति सेनादि। ज्ञाना मिक क्लामा इस केल ब्रह्मन विकास मेडी विकास प्रकारी तर ॥ व्या मुकः भ भूव स्मियाना विश्व वस्म दसार। एवः विश्व प्रात्तारे मार्य कथाने असि व्हन् ने अधिक भस्त भागेय मनश्री। किस्राग्रा मनशा । काल मनशा । क्षमत्य मनशा जत्मल ॥-यागा मुटिल क्रीयुँ यस्था। सम्बन मिटिला सस्था स्थित ॥ वरला समयाना भे देशा ॥ यथा उँ भाला भाला भहाभाला अर्थनाकि भुक्तिनित्र हकूर्वम श्रुशि का भुः

जिमार्थ मिकिमा चर ॥ बेखालय भागाः भ मूक्य मानाशर्॥ यथा उँ द्वा भागा अ कि त्याना अर्थ भाषि समा भाषा। एवन भाषाच तभ भिक्ति त्विभाष रेता १ सह एवं। त्यायः ज्ञान्याकायः कावा। लाकावर्यमावः ज्ञान्य सन्ने ममाने ॥ व्यव गुलाउँ नामा जावल उँका हा । रेका दिना भाषा भन्न भूभिदिला । एला भश्वाका क्र अस्थाकित्याभ्य मिस्लार ॥ जन्याया जै भवावाका ठत्र श्रेयम इभ आसि अकल गांगरी हिन्दः सी मार्ग देश मार्गाकात्त्रका देशाहे भः गरि ला र दे की लाक राग धाकार्यक्राभ विविधामः। निव्यि एं इसक्षियान यः। यूर्य प्रक्रिताम वी द्वारा नयः। क्षि उँ भी भव्यक्त भव्याका प्रवासि नयः। एक क्रीफा य न भः। आद्याः भः अअय्यनभः। अर्थाल त्या वृष्ट् किलकाय नभः॥ ७७: क राम्यामिक्रियरि। उस्तिक कानधनम् अस अम्बीया नयः। उ निवानस्यरा यक जर्मान आका । उं अकानमान सम्म थक भक्षमाजा रकरे। उं ता ते रूजाना अक अमाधिकान्या दूरं । जें ता ते रूजिशि मिडि अक किर्माना तो से ॥

त् चक्राया खिलांगे, तेक वथंत्य जीका जीका लामांग रूर्व ॥ चय, सर्गासि काला ॥ अतिसा क भश्वाका ह पूर्व ये हे अमित्य ॥ यथा उँ अर्थ असाभी । यद्वा । उँ स सार देख देखकार । उ उठितास देखियाम ॥ ३ ठारी, ठाळा वैस देखि ठावस् ।-अथ अश्वाकार्य खावाथ खर्मत्वे अभिनाष्ट्र ॥ जें अल्यास् वाक अविद्या अत्रण बक्क केळारकः माखिकरंश में तिस्तिक ॥ संग्रिश ग्रे , ग्रेश संग्रेश केळारी तर या भागे हि सम कि : त्या रिख से कि का विस्ति के विसी हिन का निया ति सार्थि के विसी मि देनामित्यए॥ ठेकारः अस् (यमाना आरं अर्वे जिला नात रेवारं या विसंग्रेन मिलाए ॥ जें अरुवाय भयं शुक्ष रेकार्यः । विवर्गे येमसिलाए॥ भी गालास्का भाष्य त्र सामित्य ।। जीवा सामित ।। जत्वा त्रक्ष वादिस मिक्यु भासिः सामे ।। उँ त्या अक्षाने विम्शानि मूर्क त्या ति तिमा नह अहिला हि जत्मे उ व त्या वा विकि अकामा भूम्कूर्व मार्ग शर् अभाक । १० मार्थिः मासिः । १० वर्षः। विहि ।। जा गुरुः निक्य भरीका जल्ये अक्षेत्र विक्रम अर्थन लोगित कार्याम्बा त्याम

महे नेकार । ज्ञा छकः मिक्किसिक्ष भेडमे ने । लक्षारेक लगेकापम जिलाः व शसि देखि। नायक्षेत्रेण कार्य । विश्वत माम नाय । अथवा पंणा लाहत्व जम् निर्ण आस्रध अत्रभुनि भ° ध्यमारोः । आनन्य धक्त आक्रेज्यक रेजामि वनात्रां आनन्यः अव्याननः। भूनीयन्ति मित्रि भर्यात आगादायु । हिन्तं द्राध्व हिन्ते क्यात हिन्ता क्ळामि भवस्त्री गवं की पूरी थू । यामू (नव श्रुक्त गार्शिंग भ्रुक्त क्ळामि नामिन पूर्व कूर्णिए॥ जला गरः निसाय भवशर्भ धर्मान् भदिलए॥ याग भट्ठे विना भन्नाम मान अविकाला य ज्या । जला एकः मिक मार्क्षिका जाम अशेल विम्भ्य भर्यका लोठापि कार्यास्त्रा लाग लहे निर्मा ॥ अय लार्यक्या लाक सक्य असामिन द्वार कार के ।। !! रेडि मी भरापरा डिवर्थ भागी जगरा भूक भाम निक भव्भ इ° भ भारत बाजकाठाये । भव्रभावन की ग्रंभाभिना खिराष्ट्रक मजाई, मधाम र्यान, तास्के ममासी ॥ द्रावता त्योत्र विभाग्यभ्य प्रयो विभावि दियस्य त्योग्यायात्र प्रमुक्षण जिल्ली समुर् ३२। विभागे १००२॥ । अस्त १२०१॥ रे अय भर्य काल्लोठ भ्रकार लियाल ॥ जांडा धर्म अनिकः अभ्यमारं भ्रत्यंक त्यालका अतिक जि वा नवा देखिमनिक्ष विठार्थ जिल्ला मिनाउदा वा वामान्ये जिसके कुर्याए ॥ उद्यागृश्र विर्जिता भीग्रायन भाश्याम्य एता वर्षे भूत्यत भूत्वीयुत्या वा निश्च भूभतियापि त्रा ॥ जला ब्रक्त हारिया सङ्ग भूम भानीभं मिशाबि जक अथ गरू वांभव भ भिजः ॥ भृषिकाभा भारत ११° त्याकः॥ भामत्या म्छ भूमः भाक्ष ठण्य सिश्च भव । वि ठिका छ भूम नका प्रमानू प्रवादि उ: क्याए ॥ रेडि ॥ भृत्यायात अभ्या विश्वाभाग विश्वामाकाकः ॥ क्राया दंग अस्तापी द्वि जिएं अस मक्ष ह। वृजीएं सरे ठलस्र मह जिल्ला ए ठ ठलूर्य का। ए दिनाक मूम नमा एको ठ भर्यक्ष अक्षिति ॥ अक्ष अप्रभाव भूमभावां विश्वा विश्वा । विद्या दिक्या । भिक्ष किन्य याखराधानाता विशारा । अभवनात्राम मिक्स शाविजक याख दिस्ति। जाता निधारं। देवरं मार्ल जलभामि विधारं। वृक्षिरवाग राक रागु विकार प्रय जलभामि निधारं। एक क्वमाइका निक्षां। यक्षठारीः । इराठमा स्रेतांग्यायां रिधारं। यख वलाट प्रकृष अप्राय वात्राम क्षेत्र म्याट विषय । यह विषय वात्राय विषय वात्राय मका थांड रेस्थेलाका त्या द्रेयं मार्थेष्य र्रेयमद द्रेयं क्थाया मका थांड अपलांदा

्यका गांव है। किन जाराम् अकाराजाना गारा है गांव है गार्ग ने गार्ग ने गार्ग ने गार्थ ने लान यल वीभक्त अकाल अव निर्देश हिन भुकरों काल एए। जला मिक्किल जाम म कि किंग जागा किन याल रीधकत अखवात धकालाय । अवसिक्षा किन देली-करों। ठाक्ष वायं क्यानारंगर। वरवा वायवागम्ह विश्वां वाराच ताव देखा गिक्ष ग् वार् प्रकाल गाउ दिक्तिन जागाम कृषीय मृद् निताकित यात भीम कर थ हे वार धकाल अयमिक्रा किन अ किए डेटोर्स लो उर्जर्ति कालए। । जला नां आभ ठलूर्यजातान गालःभामि शाकी दिवावं अकाल मिकिन जामम ठलूर्यजामा दिन याल वीमक्त ठलूतात अकाल अवभिक्षा क्रिन दे जिला क्रिवात क्रालाख । जान - यामजाराक्ष मकाग्राताच यात है भामजला यक गतं मकाल मकिलेगाराक मकाग्रा र्द्धन याल वीयक्त दिवात अकाला। अवस्थित क्षित श्रु विश देलोक्ती यकवात का लत्यए। 'ज जः श्रुशं याजः श्राचा मित्र म्जन्मा आ श्रुकिद्मा असालए 'जत्येत श्राजा को भीनारिकः भरिषाग् अभा क्ष्माकारिकः विकुष आठभा भागाग्राभ व्या विशाग् एका क्या भू वी क्य भूषा भाइता भांत आक्रक गृश् धारित्न ॥ जला अक्ष ठाति गृह्मत्याप्त्रा

डेमाई ल्युड हकाडम पद्धा उर ध रुख डेकाम न मन्म डर्मात गडि डेमरका रिया ७२० छन् । भारत् एकः यह प्रकातिः भव देभारत् । विश्वर भारतिः भारत् भूगः आठभा भु एक अनिके भारान्य नाभामिक विशाय विलाक्षाकी भाभाष्म जा त्यामत्कन প্রদারেন অক্টোতর শতবার শিষ্টা অভিমিঞ্চ শিক্তম্য মস্তব্যেসরি শিবলিঞ্জৈক भारतामा वा विधायं उर्थ मथा अव्या एक्ना आर्क्षः अत् भिलिष्टा विश्वक्रभम्भिन भिष्ठाकाग्रेण पूड्यत्। प्राण्यक वेष्णस् भ (थेए ॥ ७७: जं मत्ता भिय विकात्य असे वाद्य भित्र रेक्स असंलिशासि यारे भारे भारे । ७७: भिराभन धाम माम निकन्यू मिनिलाए॥ ७ वा तो अकामिनाभ । यथा उँ भिराभन धाम भएभा नज्ञात्राण्ने असि ति विकि अपि हमः अर्क विषयं ति जाः मत्य देभः भव्याका तिव ग्रा अर्थ ज्ञार आक्रिन शिनिशिष, अर्थायमं अरि विकाय लाय प्रशासिक ये शासिक की लय, शति शासी प्यस्ता वियोगः॥ व्याचिष्य परं पारं कार्य कार्य पत्रः। में कि एप एप विक्रिक दे में स्थित मा अपि त्रक् श्रियं राहिकः नवंत्रके भः नवंत्राक्याध्यकार्यं नथः॥ ग्रेडं त्रक् त्रकां त्राक्रिले

चिष्यं नयः। भाष्ट्राः असी नन्य अरु । असी । असी विकान क्रिने त्या विकान क्रिने त्या विकान नभः ॥ रेष्ट ॥ ज्वः पं अग्रवम्य यदानधानभानमः वस ॥ यद्विम्य अद्वसाध्य ॥ आयातम्भ जनुयाति ॥ अथर्कनभ अथ्याचा वक्ष रेषि॥ विकानयनभार प्रथम ॥ সত্যোহ্রমান্সি॥ সভাজানমনন্ত এক সোহ্রমান্স।। পর এক্রেবার্মান্স।। পর গার্ক लडे रास प्रमाला ।। अक्टिक्शे ई । तिल्यारे । तैस्यियारा रहे । में सिसा हाए। र्जि॥ उँ आका भक्ष प्राली रहशकी॥ उँचात्माः प्राली रहशकी॥ उँ छात्माः प्राली रहशिय॥ उंजञाः भारता १ दम्भा ॥ उ स्विकाः भारता १ दमानी ॥ उ द्राह्मः भारता १ दमानी ॥ उंजादकाराम माला १ वर्गामा ॥ उँ ठिएभ भाला १ वर्गामा ॥ उँ गत्रभः भाला १ वर्गामा ॥ उँ जीराभ भाला १ वर्गामा॥ उञ्चक्रकः भालाश्यांभी ॥ उ भूक्षक्रम भाला श्वधांभी ॥ उ देशात्रभ भाला श्वधांभी ॥ उंभाला अप भारता १ द्याचि ॥ उँ अर्था अर्था १ द्याचि ॥ उँ अर्था अर्था आर्था वा द्याचा ॥ उँ जीवभा जीरा व्यामि ॥ उं अर्ख थानिम् अक्ष ॥ उं आईषीय अक्ष ॥ उं विभूता व्यामि । उं त्या वर् द्या। (गा ६ ६० मयर्ग सत्य ना द्वारां ।। मना सान: भग्नाजा दे क्या क्या क्या क्या व्या माना विकारका दे र् ॥ अव्छा द्या खार् । गावित्सा द्यर् र्विः॥ निकार् निकिक ल्ला र निवाका वा द्यक्या।

जीव मंक्वा त्या १२०॥ जल्ला १२०॥ अवर्व अवर्वमा भारति मूली १२०॥ जिला नि क नार्मित्। रेड ॥ श्यु त्रकात्मा इड ॥ जागमहिम्साया इड ॥ स्विश्वाया इडे॥ ग्रकीभवार्यं ॥ श्रम्भाभवार्यं ॥ असर्विक भव्यक्षित्र । अर्कद्वार्यं ॥ भर्कद्वार्यं ॥-अर्थाक्ताकार्वा रह ॥ अर्थभन् एका १ इ । अर्थदिका मानव दाक्ता एक ॥ अर्थिका भा का १३०॥ आग् धक्राध अर्थाका अर्थाका १३०॥ जिल्ला १३०॥ छात्र ठरागेरा ला १२ ॥ उं उँ इ कु या दे देखि ॥ जाजा निकाय त्यामा निकाय स्मितिलाए॥ याचा उँ भत्रभ रुआ रुभ: (आर्क् भत्रियाज्यः भक्षिभण्यः दिसम्बि धन्यथाक्ष्यभाल आसि: आआवणि आप्रान गामन प्रदा भिक्कास अक्षरं निरुक्षनाभेठ कल्याल सिर्विका मकडीर्थः। विःअभाग्न अछि विर्याका त्वा विश्वल भारिकः। विश्वलकारः। ऐकिन्या ध निज्ञालश्च क्रीहे:। त्यामभाष्य द्यः। निक्षांच त्यात्म विनित्यामः ॥ डे मात्म दिक्त भ त्साम भव द्वामभाविकारात्वाक्तन वित्वकश्रकः स्त्रनाराणि आनस्योः। यकानुगुक् भूकाभनः। अधक्षिः अधलााकी अधवारः। अधक्षी अनूवर भ्रवधा शिक्षः। भार्वक्ष जमातिभावः। भव भूगतााकि तकाल्येण जिकाक त्याद्यातः। भर्वक्षा क्षेत्र विक्या भाज

यालकः। सिर्धकन्म । उदामिन क्लोमीनः। भीलास्थ डेम्प्रभनः। त्युलान्यालि विठात् मुखः। इत्या क्षात्र व्यावलम्बन्धामभद्रः। ऐन्यल्यवञ्चा स्थम निस्वला आङ्गारिः॥-क्षाक्रमामाइकः। त्महाठवर्। कूलालजीवनुः। मवामवाम् विविधुकः। देनानि भाषः। ध्यान निक छ स भएना:। अकः धकाग हे क से भिवत्याग निकाल्यक विभूषा भद्यान न्त्रियः। श्रीग्रद्ध भाद्का भूष्र्यायिवयः। वेषि॥ ७ त्वा निकाता भवियम् प्रेभमीताए॥ ग्या । जे भूकिम्ला त्मान्यर्ग यमा विश्वाभाष भगः जमारे क्या मृत्य भारती की भारती त्वर ॥ आग्निम्ला त्रक्र वर्ल यमा विसाध्यक धनः छमा निमा आल्थ्यातमे वार्षि र्यन्त गार्षि र्यत्वर। प्रकित म्ला कुछावली यमा विद्याध्यक यनः। उल्मक्त जमा क्या थ प्रामा जिन्न प्राक्ति रिवर ॥-वितिषिद्व नीलवर्ण यम विद्याभ्यत्व धनः जमकाभकाभकाभक भएभन्न करत्वर भारते॥ अनिष्य दल्ल किमलवर्ल यम् विद्यायण भनः जमा दाभ्य वित्नाम्क देशमात् ह भाव र्वति। बाशक मान अग्रामवर्त यमा विभाष्ण क धनः जमा देखारेन किंदा विकाल मान के भनि के ति ॥ उज्यम्ला मिण्यली यमा विद्यायाल अनः जमाकृ भाक्त्याकान शर्मा कीरली यार्जित्वर ॥ अक्षि अक्षि भिर्मिणाना धना विद्याभ्य अनः जमा महाभाउ जिल्ला मि स्वास ह अकि उत्तर्॥-

মখ্য দলে শ্যামবর্ণে যদা বিশ্রাফতে মন: তদা মর্বা প্রনাত জান ভৈতন্যে চমতি র্ববেং॥ অফ্রা শরন মামেন মর্বা পালো: প্রায়ুফতে য: প্রকৃতি মদা হত্যা নির্বান পদ্ বিশেতেং॥ নির্বান পদ্বীণ লেতেং॥ ইতি নির্বানাসানিষ্ঠং॥ ওঁতংসং॥

ज्ञः भूतः उँ गाता शियः । रेकार्य अस्मवादिशः आक्रावादिशः अक्रावादिशः जे गान्ति:-भासिः भासिः। रेख्यु भासि भारे भारे ।। एषः भ्रगः निष्यः मृरकी भिष्ये भ्रकात्त्रं भक्षभाव र्थ भागश्रिकी मूजारा क्रिकार । जिलः श्रुरं निकाः मूर्का निकि सकात्ने मिकिकत्ने भाषिक क्रिका न अकला भारेट॥ ७७: अर्क याजिछः अद् ग्रुकः भूकाश्चालि गृष्ठीषा उँताका विवाक भ्युवास् न त्या थंग विच्यतमा कृ मात्र भाषा काम् काम कामाय मारा का कार्य कार्य महारा क्रियतमा क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया विव्यवनायं भक्त ताकायं नयः। श्रुष्ठि भाषाक्य वबूताक्य श्राताक्य विताक्य भात्राक्य भात्राक्य वाक्य भवावाकः आश्रिमां अभूत मार्थे । अभूत मार्थे अ अभारे आर्थकोत्राः असीपूर्वाः जिलामां शक्ति स्थि ्ये भग्रे अक्षा व चक्रा व चक्र वां विकालि व मिल मास्त्र मिल मिल मिल क्षेत्र विकासित क्रिका क्षित वर्ष न्या भागेरा लिश्रेर्यातरार ॥ जला एकवा निक भृद्धि दश्च विः किन्य अमार्ज अभूकावक जिथे भुग्न भी जि त्याम अद दकार ॥ अयक् आर्रकार्तिक अन्याभ दिक्का कायमिक दानक। हेजि॥

जिल आस्त्रमाठादापिक भिक्रहाए ॥ जन्न: लिक्षा छद्मदाका क्रिमि निधाय श्वाकान दृष्ठार्थन नियाग कि म्दर्शिका भूरगुष रेणर्रिश्वमः दिशानि कृष्य कि दिसमाभाव्य भाषाश्रीन मर्थंड॰ ल तेवराखना हाम ग्रद्ध अल्प मद्राष्ट्रा अतिमाविन्छ। डेज्य इस्तिन भूडा आत्य मचा शृष्ण आशाभूय र्षा । अभूसिम्मित अयूक भामशात्र भामग्रहत प्रितिया श्रावार्थभ अवस्ता ने ।। यह देन्यायं देशविवमः दिशानि कृष्य वाधश्रात्य विश्वा अग्रजाग कृष्को निवम कृताकादा चुषा मल भूमाम्मात धृषा चिवाव मल वाध ि शिवा रित तिकुळार्य वाव वर्ग वस्ता कृषा स्तः स्तिवर गरूजासन कृषा । उ আহার বিনা १३° দের থতাবৎ সাধিমা শ্রভো বাজ্যন: কায় সভুতান অসরাধা न क्रमश्राम । उष्य भदाशभद्र आणि क्रयत्व १ दिने भ मग्रा मात्मार्थमिनि भा भवा क्रथम् भूतिकाण्य ॥ रेजिम भार्य ॥ जेलाग्रं भूतः भूकीवर वात्र्यग् वन्त्रा कृता-एक राष्ट्राचा रहि भाषिन रेक्ट्रकार्य जिस्मान वस्त क्षा । एक भाषामूक भिष्ठ ॥ यथा उँ अकान भूण रहा । जनकारी निवारं । जान विद्याप भिक्क्ष थ अरुः भाषामूक भिष्ठ ॥ रेकि ॥

गत्क्रने चिः भिष्ठा । एँ अविका भूल भागान अर्खभाष्य स्नेनाभन भागान कः भीषा नित्रभाधात्र्याभ्य इ । ने जिथल्य निराधि निश्म । जे अत्य विका अत्य विका वि जाि भारत ग्रहा सन क ए हिल ग्रह देखिन ग्राम जिन्ना कृषा। गुर्का कृगा त मास्विकार्वन काल नरम् ॥ ७७: आय़ एका मीना अर्था भ रन्या मिक दूष्णा एसामाक्या व्यक्तिकश्वामिक व्यक्ति ग्रस्म व्यक्ति स्रकार्वन सन्यम नामादि क कृषा भ्रतिक भ्रकात्न भागभिकी भूजा कृषा। भ्रव्त राष्ट्र भार्य भार्य भार्य अ अभव का का किया । विद्यां अद्य मर्गतः मक्षिम् नम् भूव अववाकानः कार्य । उतः मास्त्रमा नम् काम ह्या कहिका ठष्ट्रक्षे मधावः पूनामानामारी निर्मा अन् मम्त क्यारि॥ इंडिक्स् भयाभ हासार्वः॥ ।।। । आव्रुत्रभ्राभ हासार्वेश्व तता निक्सिक समास स्टब्स्यार्च अर्थिन जाहिया । ब्रेयरं ज्ञान्यं अन्यं सार्याक (ज्ञासाय स्वास्यार्थ) देनादमा नामक वंश्वक मर्यक क्रिक्ट ॥ अळखा माळा जूर वृह्य क मक्राम भारत कारायक भेताय । जाका का ये में जिल्ला मार्थ प्रकाल मार्थ प्रकाल मार्थ के प

নাম নাম বর্ম প্রমান সংগ্র পাষিকারিশো নামে হার ।। বর্তি।

ত্তি দ্রাম বর্ম পর্যান সংগ্র প্রাম্থ করে সংক্ষেপত: সমাস হিছি: সংস্থানিত্র:

ক্রিক দ্রাম বর্ম পর্যান করে প্রমান ক্রিক সংক্ষেপত: সমাস হিছি: সংস্থানিত্র:

ক্রিক দ্রাম বর্ম স্থান ব্যান করে প্রমান ক্রিক সংক্ষ্পত।

ক্রিক দ্রাম বর্ম স্থান ব্যান করে প্রমান ক্রিক ।।

ক্রিক দ্রাম বর্ম স্থান বর্ম স্থান ক্রিক ।।

ক্রিক নাম করে ।।

ক্রিক স্থান ক্রিক স্থান ক্রিক ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক নাম করে ।

ক্রিক নাম করে ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক নাম করে ।

ক্রিক নাম করে ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক ।।

ক্রিক নাম করে ।

ক্রিক নাম

আতুরমন্ত্রমান্ত্র বিখি। ३॥

अथापूर् भन्माभा विक्रिणाल ॥ अस्माभ अस्व भुगशी व कि विक भर्य किन् मुम् সাশ্রমণগামিকামীতি মকল্প শ্রেকোক্তারপাত্য দানানীতি ত্রিত্য প্রধান ॥ অন্য নাদী भूगारि म्लेगुर्नेत् कथकणाम्या विषयिष अठवराजूर भन्नात भक्त सिकाक नग्र मानाएरता अम्मेशल ॥ यमा वृद्धः भ्यान्यवभावाद्य अनुस्थ अश्व मन्त्र अश्वान र् किणः তেনে ডি সক্মামী ব্রশ্ব বিদেব মে বেভি পূ সবাল্লিভি॥ আতুরা গান্দ্র সক্ষামে ন বিধি - स्व र सिंगा ॥ सिंगांच भगे काक्सर्याम, बर किंथ जेसिंह ॥- सिंगांच, एम् विव यं भिन्नि यावर् ॥ आन्नित्रायाः अकारतमे ॥ अकालिए भार्माणः सङ्ग्रस् भार्थाय अञ्च भाने कृत्रा ॥ ७७: आयं निष्ठ भ सत्म कृषीर् ॥ अस्पेशा अन्पर्धभाभितायन कृषीर्।

ग्राज्यक्ष श्रिन् ध्य कविस्मान भव्यक्ष मन्त्राम् भवान । विस्मिन भी भी पि कर्यानि उं मून्भार् जवाता १ विद्वत्य । अंभून्भार् भ्रिकि विक्ति । म यर अंभ्र सिज्यत्वा शरीक्ष्यक। उँ श्वासि श्रेष्ट विक्रित्र ॥ उँ साहि जराखा १ सिक्षरक। ज्यक्षा के विक्रित्र ॥ ज्यूर्णः त्यात्या के व्यूर्णः ॥ अवः ज्याद्याः भत्यायादः -केलि मारिष्टा ॥ ७७: युरम जिल रत्न म्यूसम पूलकी माय हुन्ति स्व प्रता मूर्व भाग कात् रं । राजा लास्त्राक्तक्षेत्र वा अंग्रेबी ११ विवः श्रद्धलान केम्प्र । श्रिक म र्वकारी त् जासंब्याप्त अर्नेप्स गामि लानिक कार्यक विष्ण लानिक प्राचित्र जानिक प्र अश्री भगक्षियागाण अवग्रह्भ भग्नाभाग्रह्म शिशिक्यक्षिक् अक्षवर्भविहि अक दिनान कानाकान कुछ भाष्य अग्रे कार्य आग्रामा वाग्य विश्वर्थ वर्षः रुक्त यंगन्य कल्यक आर्क रुक्ष व्यक्तिक सम्बर्धिक वान्य कार्यायनी लया यं प्रव य लुभागरमभिष्याम्ब्रिक अवः कारित्या ॥ राष्ट्रिमक्तल्या ॥ यं त्यता ता रेष्टि परिषा ॥ क्वः ज्याया अवस्थ विकासि प्रयानि कपूर्वना यसार्ष्यार मिर्व वा सार् देव ल्मातक भवं चारकति। यदिगयः भागुवा। त्रावा यक्तिमायः कैम्प्रि लाख्येयाव धार्यन्।

A STATE OF THE PARTY OF THE PAR

क्यार ॥ उव: अक्सानिक सार सार्व : अक्ष वस्त असार्य शस्त्राम शस्त्राम शस्त्राम । भक्षणासः कुर्यात ॥ जर्माया ॥ जेंडल्सर क्यार्य ॥ जें आक्ष्यादि अमूक्तमामि असूक भाकि असूक लांचः भा भूकत्रव नभी। अभा जनानशेय अकल नामकरा मूर्कक गर्वता प्र जावाला যৌবন বাৰ্দ্ধক্য মরণ নিমিতক আধিভৌতিক আধিদৈবিক আগ্রাজিকভাপত্য স্বার্ণ নরকানে गभना गधन भूथ इःশভাসা দীনা भक्तानर्थाना कात मे रूजा अनाम निर्करनी । अज्ञान विक्रिक्षिण आतास भाभाव कार्य कार्य कार्य विरुक्षि द्वारा जीर वक्षाली (वेक्स लक्षाल) निरार्ण गर्मा नन्म वा खांग भव्य रूआ भ्या विकात शिक्षण्या विवित्रा भक्काश प्ररूप भक् करिए ॥ रेजिमकल्या । जला वासानो न्यां मिणायाँ भिष्णभाष्यु वा किमान् भागियां अविभिष्ठान् किमा मार्थ नियानिन वाभाराए ॥ ७७: श्राष्ट्रा असा ७र्भनोषिक कृषा निककार्भाभासन भगाम । (७७ णाव कार्नि अभारता भगा विजा प्रित्य है आजा भारक सि भारत मूर्ण बुलि बुला खोजा १ प्रिन अभारता भ अग्रास्थ ॥ विश्रं प्रकारों भाषका नामला न जाता नासि देश के भ ने भाषा भी नाम नाम अस वार्। अभारतात्मा नामि अस्त जू कर्वकरम्य)॥ जला १मा अभीम अद्वा आम देमहुणामाय कृषा जाग्रमाना मा मा प्रत्रिक्षि ॥ अव द्वा अत्यात्मार्तः भागः भागः भागः भाव भागात्मार्गा ।

रेडि भ्रायमा द्रिः॥ उँ आत्मा वि अवा प्रवणः अर्काला प्रवणला पूर्वि अश्वा । रेडि दिक्षेशा॥ ज्यः भावम् दूख (नामः लाग्या स्टः निमान रेखन्या कतालिभक्त ॥ जम्यथा ४ आसः निमाना वृष्ठा न शिक्षा अना अनः (स्वालन) नष्ठर्षनीना । अकुन्मत्नक्तिस् १ वक्रवातः नाष्ठणं (अना १था ज्यं प्राकाधनः ॥ राज्याणिषा ॥ जजः मूत्यक्षा वित्यक्षा त्वारक्षन्। यगाज्यका श्वारा । रेडि॥ जर्म क रासनामां भित्र ॥ १ अन्यं अर्क पूर्वाका भगः आत्रि दिवीय भित्र ॥ १ अन् सु भगा रेखि नि: लाष्ठ साध्यक्ष्म् नक मिलिए ॥ आठभा उँ शू: आविधी भारिमाधि ७९ अविवृद्धिं । १० पूरा: आरिषी धारिमाधि उत्नात्र अधीशि । १० भारिषी धारिमा मि खिला त्या नः ज्ञात्वाम्यार्जं। मूर्न्वः भ्रः भावित्री धार्यभागि ७९ भाविष् क्रित्नभू जलित्यम श्रीमहि विला लाजः स्वातान्या (जैभावा त्रक्ल भागपाम के भारिता, त्रिक्षाती । त्राचा १ की नार्त्र स्वाश्चील र्स्क्शामारं त्राका, सिल न्यपार जें युक्त युक्त युक्त मुल्लाक रेकि। प्रयः जभार । अर् युक्तार् राक्ता रहालाक देखि। नज्यमाधियभाद् ७० न सम्पाधिया धर्म। देखिमाँचि । ७७: भूगो चिथ्य दिश्वार दिवा ॥ जित्रम् कार्यात । तूर्नः भन्नान, भना । तूर्वः भन्नाने, भना । तूर्वः भ

क्रमें नंगा। १० र्वे व्यः मः मक्रमें मंगा॥ देळे जाज्ञ मक्षणा एकः मैरंचन विक्गार ॥ उठ अन्य अर्थ वृत्वत्या ७४: श्वादान साठा मिन्यू मका साना निन्य सान जिन साकी मिया निक्उ विभूक याका भवीज हित्वा अग्रम्का सामिना भव गृवीया। १० १ ईविभूः भारत्वा भेष्र प्रयुग्न ॥ ७७: म्याता ४ ५०० गृत्रीष्ठा विक्र भार्यमा भकात्र गात् ॥ यमः ॥ ७ मप्ता लाग्रान्द्रभिण शिल्या ज्ञा भे वार्था इति । १ अर्थ प्राचाककारा लाभा द्रुचि अर् कर्त नवा अर्कियनो क्युन यूक्षक्त्रने भागा ।। १० वादिशा अर्काला व्यम मेरित्या न विम्ला । अक्रायु (य फान्याय भाविया अशुभूमन ॥ शाविया अ र्याला क्रम वाभू प्रचारा । विश्व भी क्ष्म क्षा क्ष्म वा - अर्थर्भर्भर्भा गुर्भा मुखा मार्था भारत । युक्षा क्र्यू मार्भ स्माहिमा भ्राम्य क्रिक्षा विभा - देख। ज्युषा ज्या ग्रंथिया ज्या अर्थ क्रिक्यः क्रिक्ष कार्यभागा । देखि मुल्य क्रिक्ष जला नग्ने श्वा देम्ड्यूग्य अञ्चलमा नि गवा । जाठार्य मार्थिङ (कोमीन भन्ति भार्ति धाय । अला माक्तन कान्य स्था आजा राष्ट्र भामग्राह्म कृषा । अं राति वर्षकाने विम्यानि मूर्वि त्या ते त्वम्य अदित्यानि जत्या जित्वमान्य पृत्ति भाकाना भूभूक ते अवन मर्क स्नात्म ॥ अंक्रियत्मेन अध्यक्षिया प्रदेश मिन्स्य ॥ वाला ग्रेक सन्यमस्

- जेमिरिलाए॥ यथा गुक्रं वार्ष्ठिमाळि मानन्त्रतभाकातमाञ्मकाग्र भूली माड्य प्रकामिल्वियाकी दाम्मधा खनायवा विभक्त निका नित्ता विधितिकश ७७: गात्रा थिय रेणारि गानि भाविषा मिक्छ जित्रा रेस रेष में भेर के कि ज्लार। उठः उँ भग युक्त क क्रम् ए मधानि। भग छि भन् छि भन् छि अभनाठा মেক বাকো সুক্তর বৃহ্চলাতি স্থারি যুর্ব ইচ্মক্ত ॥ তাতা যুক: শিক্ত শির্মি শ্রবণ प्रदा मेका नमाए। उठ: उर्डभूगांग निका अक सक वृक्ष भवंभानका कृत यक सि मामक स्रवायः मिकने कर्ला खिवारं वासकर्ल अकृत सास्यूयां अर्जू अिक्लार ॥ ্ প্রাথ বার্থ বোষ যে ।। ইছি॥ তত উদ্ধি শুম্মুই ন সঙ্গে ॥ অভ্যক্ত মাতৃর শেচ প্রে सभायः वा वत्त् ॥ जीविज् त्वर सम्भ्रम् भवावात्का भत्नाम् वी भन्यस्भूभ्याम् भश्वातात्काभाम् मा ना मा अभागाम विभूका ठात्वे वर्णत्य ॥ डेमान्स विना छम्। नी त्यव अवली थार्ज अन्त्रात विश्विना अव अञ्चल नावायनीयल अर्वानावाशनामि क्रिप्रिए॥ रेकाव्य भन्माभ मकावः ॥ रेखि॥ १:॥:०:१भमाखः॥ अया मृत्य व व्याचि ॥ विश्व विवि আছুরান্দ বিলেন্ডো গুন্তি ন বিধি নে বত ক্রিয়া। প্রেক্তমাত্র সমাসমাত্র রালা বিধীয়েতে॥।।

मञ्चामक भ भी भक्त भाषाया तम डेक (त्र । छ एम (त्रक क रत्न भाषा म्बेब्रा मिक लाम रहे। अस्मित खुस नेकामि भर्तीन्या जूर्साएभूनीः। कृष्ट्रा दूवी द्रंग सन्याए स्विकित् हिल्यकः॥ थान्छः निमात्म श्यस्म १ न्यात्क मार्थि असाराए। मूर्व यले छ अस्पृत्रीषु मिराक्षणः ॥ দ্বির্থমত্মণ মর্ষে তেত্বমুক্তা শিরেদ্বিদ্ধ: ।ওঁ পূর্ব:মুর রিতি শিরে ক্রেণ্ড নলেময়েও া-- आमाग्रास्त्र निजा लाग् अचए अछि मिना कित्मए॥ आमिलाछि भूत्या प्रकृत टार्क्न राष्ट्र ते विक्र अस्प्रासा १व्धिभ भवा विवाद भक्षामुधः । ७७: मङ्ग गृष्व व कृत्ना व्यक्षिक्रका व्यव ॥ भूल प्रमिष्टिक मार्ने मक वा यथा विशि। स्माभ याकी जतिए भाजाभिका विन्य नहीं ज्या १।-विथाणवीया मिक्री वा मर्सालम् भर्मिक्नी । यम भरका अत्वन् व्यवी रोष्ट्र इया मुधः।।-त्यवारो धशानारं। भूर्ण रूचि धन्वयाम्। अत्ये अर्थायं लाकायं आवाक प्लाद्यं उवः॥ व्याचानिभूद्कानाक साकित्मा १ मध्र विशेषाल । अंग्रख व्यानि ईकान्यामाक्यमात्री अभावाव्य । उर भाष्ट्र अञ्चाअ क्रेफीए मुर्स विधानए: । डेक भाष्ट्र अञ्चाअ भारताकाणीत्र भाष्ट्र ॥ श्रीण आश्रित्रभीरंग आव्रत्रभक्षाभ सकातः समायः ॥ श्रेड भी वृतिः १० ७९५९ ॥

X वृत्वतम् । वृन्धा राष्ट्राता ।। कामः मियो जायां विष्ये ज्ञाया ।। व्याकार क्षान् मास्यान्या मान्य জোজা ॥ তথ বি মূহুর্তাতে ওল বীয়াহ্ট ॥ কাম দূজা প্রবক্ষ্যামি সমুক্ত মণবিত মি भरंग ॥ केंद्री ने क्रापता कारण, किया अ, मार्थिश कार्य ॥ क्रायांत्रात्र, चरंग, केंद्री क्रवे अ, जात्र र्मिक्षक, ॥ नाम रिसा, थायकामाकिका ं माल्यक स्टीप्त ॥४००व ह्यांगाः ॥ भार : एव निक किया गश्रासी गया की उक्त भाषा मूजा भाषा मूजा भाषा ता भारता भारति स्वा अर्था अर्थ हिन्द्र एए भारति सामित लास्य भारति ॥ क्वः सम्भावकाति दंगकात्म भीवी काश र्वित्रिक वार्य मान्य हो व्यक्त पृष्ठा कार्राक्ष केष्ठ अकल्या ॥ भागेना व्यापा अत्व निग्वक्रवादि कृषा भागेत अ अभाहिष्ठ अ भाग के भूति म भूति म भूति म भीति गार्थ कृषा ॥ दिगद्य व क्याए॥ वन्यया। मृत्तर् तक्षेत्र त्यातिकः। आत्यायाः शक्षंस्तः। यक्षेत्र तक्षेत्र वाद्यात्य यात्राभिक्षेत्र त्रेमार्ड ॥ रक्षारम वाक्रानेत्रक्र ॥ वाग्रका भश्भूक्यः ॥ देशत् श्रीसत् त्रक्रि । बेनान्या व अवाध्यः ॥ देश्व त्यायक्षत्रा त्राक्षर्। अश्चाम अविध्यः । वेडिनि ्रायकः॥ ७७: धर्मायन कर्नयाम इनियाम कृषा भन्नमाखाक्रभ कृषा ॥ कलमाना

थन अङ्गार्थन अल्ये हम सिक्षां ॥ आङ्गान्तन मूजा द्रायाजान थे (धाका ॥ भक्ते ज खर्म भ्रम्भाने ।। भक्ते ज प्रकान भ्रमाने ।। भक्ते ज प्रकान ।। भक्ते ज प्रकान भ्रमाने ।। भक्ते ज प्रकान भ्रमाने ।। भक्ते ज प्रकान भ्रमाने ।। भक्ते ज प्रकान ।। ला ।।। १।। हेमाता । हेमाता रे ।। है।। ।। हिस्स हेसारं ।। है। ।। आधिरं।। अग्रत्य नथः। अ । हा मिक्ति। यथायं । यथा । ते क्षेत्रः निर्श्वत्य नथः। ते । ॥ ।। अध्यात वस्तारा । य । १०। १०। । वास्ताय वासरा । वा वार्षियास मस्म वास्त्र वर्षे त्यान्यः। ४०॥ ।। ।। ।। ।। स्वाय भाव धर्ष उँ क्रम्मा स्टाः । ।। १०॥ रूपात्मक्रधर्ष क्वामनामित्वात्वा । का ॥ वर ॥ वेसामिश्वाक व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त रिल्वरण दिवण: अलेक् किला । ३४॥ यम निर्माण अस्य ११ किला । ३६॥ निकारि वक्त मक्ष प्रकातात्मा ।। ।। ।। वक्त वायू मक्ष गास्त्र भारतात्मा ।। ।।।। ॥२०॥ युक्तनान अरथ नक्तानि अस्त गर्भ त्या ।॥ २२॥ युक्त स्थाय सृष्ट्र त्यारम् न ॥ २१॥ उत्यव

यक्ष विकालि महा माने महित्य ।। १५॥ दास्यक्ष महा भारत भारत। यस वार्य महासाराख्या ।। १८॥ वस्ताः मारमूल प्रतिका ।। ७३॥ (भेरत ।। ४०॥ वस्ति।। भेरत वि त्यायामि भाति रो कलाने आयुशानि जांदाइन म् तिक मुजारे ॥ जं गर्मेरी नयाः॥जे खिंगीयारा ।। १८।। अख्रिंग ।। १८।। अख्रिंग ।। १८।। अख्रिंग ।। १८।। अख्रिंग ।। १८।। - चात्राशः॥ १ ।। अर्ड्स्याराः॥ ४३ ॥ ४५ ।। ४५ व्याद्वः॥ ५३ ।। ५३ व्याद्वः॥ ५३ ।। ५५ व्याद्वाराः॥ हु।। वास्त्राकारा । १८१। सिन्धामियारा ० ॥ ४० विमारा ।। १८॥ प्रम्यस्य ॥ ३६॥ विश्वकाराना ४०॥ व्यवस्थ ।। इन ॥ व्यवस्थि ।। इन ॥ व्यवस्थि अन ्र चेत्कि।। हन्।। त्याराद्धि।। दन।। वाद्धानादमा। वाद्याद्धा। वाद्याद्धा। दन।। ति स्वत्ये नयः ॥ ७६॥ भारव्ययस् ॥ ७७॥ सिनाग्ति ।। वणा कृति सरे भरवा गए विनंताः भक्षा यह भूका:॥हेड। भक्षा यद्या यह भी त्रहा त्या या यह मुक्य सूच मीन त्वेत्यम् काम जाभून मक्ति। वेडि भाभूक एक शासां भन्ने कि विकादि कलाता है म्पूर्ण भावाणि शानगत्त वरूण भावाण्य भाग्य मूर्ण मूर्ण भावा मास्त्र वर्ष गात्वाच प्राम्लाहें। व भन्ने लो : भृषिती ह न १ रेग यक प्रिक्षिण्डा मिन्ना वा नतीगर्

जनगणा॥ धरण जिस्ताने॰ जङ्गिः यहेरमाने॰ जङ्गि र्युष्ठ जरकानिका जङ्गित्ररकोन लानि। अछिन्पाण हामगा १तान् धराकातान् क्षीए ॥ उहि "अष्ट्रात ठव्तर्य" विलिका विकाल बहेकालीकाक वृश्क्रम किलिकांगा क्रक्ष मध्येक उट्मूकांम ब्रेमल यु आक्षी अक्षका : नी । भून दिनका लो आया भू हि शह भना गान आत्रों के मानी भार्याच यात्र कात्राच आत्राच आत्राच अल्डाब्ल दिजनानि यह भानि अन्तर लिए भार्ति भया विवृज्य थे श्रीकृष्ठ काभा ठार्था दीवा अविश्व विश्व कि उ कारेबाय विलागभवागभव ताथ विश्व वर्ष काताक विशायन भक्त त् यणभाषाने मुकाम क कार्तिक ॥ केलिअक ल्ला ॥ उच मीति द्वादमाक त्रायक क्रिकांगा ने जा जाशात महिना नमः ॥ यत ने क्र क्रमांग । । ने ज जाता ॥ ज्ञा भारतियाः।। ज्ञा की कीत्रभागतायः।। ज्ञान विकालियां ।। ज्यानय ल्स भाग ॥ वृद्धः स्थाने विक्रस्या नमः॥ वृष्टं चेवै विस्थाएं। ॥ वृष्टं चेवै विक्रियान्या यन्यः॥ १४ भक्षाकत्य ॥ १० दि दामायाग्याग् ॥ ५७: मीरो दालाय ॥

আম শূজা প্রকার বিধি ও॥ प्रकारक । श्रिमः भवश्रक नमः ॥ यायक वृद्ध स्पाद्य वा द्वेताक वृद्धः क्षित्र कार्यातं ।।। देश्वर मक्षरक्षा । लाधियं तु ते स्था नहाः।। द्रेगात्य तु दे मारा ।। त्रवः चीव्रज्ञास्य में क्षास्यक्ष । व्रष्ट्रे स्वारं यथः ॥ रेथक लायाधारा में के केल। मृत्के उँवाभू प्रवाग ।। मार्कले उँ भर्म में भाग ।। मान्ह्रिय । उँ समुभाग ।। दिवस् । वें व्यानिक्राग् ॥ इस्कान्यक्षक्त्रण मक्ति। अस्य वें तम्कानाग् ॥-मृत्वे वें तिमा भाग्नी मिक्किले वें भूभस्य नभः॥ मान्त्रिक वें दिविन्।।-द्वारे व कुष्णांत्र ॥ रेक्क ठाक प्रकारत हो महा । व अहण या प्राप्ति हो न्यः॥३॥ भूत्के उँ विश्वंसमाशताठात्रे त्या ॥२॥ मुक्ति उँ मार्च मान्।ठा त्येरण ॥७॥ मान्यतायं रुआयलका द्वार्यक्या ॥८॥ उउत् यं त्यारेका ठार्किला ॥ ए॥ करूका १० करूक व्यक्तिय यह । उँ अनकायु ॥ ३। व्यक्ति उँ अवन्यवारा ॥२॥ मिकले जं अवाजवारा ॥७॥ मान्छता जं अवर् कूमादारा ॥ ६॥ विवस्त वेंकितामा ॥ ७॥ १ स्थ वाक्षक क्या त्वेन्स्र महा भारत महिए। वें स्वय विवस्य ॥ ३॥ म्युरक् उ नुजाय्याय ॥२। निकल्प अकाय ॥७॥ व्यक्तिय जन्माय ॥३। ५०त्व ।

जैभाग्यीय ॥ । कुछ भाष्यक्रम वायास मार्थण लगणकार ।। भा भूत्री व इक्सिक्स वधः॥२॥ मक्तिले उँ पड़ उत्राम् ॥ ७॥ व्यक्ति उँ दोराजाम्॥ ।।-उण्ति में वाभावताम् ॥ ।। क्रक मक कम्म भूति भाक एं प्रविदा मार्ग ह्या ॥ ।। म्यार्क वं तमारिन्स् भगवर् भूष्य भामा ठार्का त्या ॥२॥ मक्तिल वें तमेड भामा ठार्क - (का ॥७॥ भान्छता में विव्वना हार्काका ॥ ४॥ देगत में अध्य युक्त विमा अवर्ष का ठाति क्या ॥६॥ क्षा नाक कमात्या । असम व्याक कारा ॥३। मृत्यि व नारा त्र ग्रेकं एय ॥ ४॥ मेकिल अयं प्रायुक्त ग्रेकं राजा ॥ ०॥ आयुक्त यु अयं ए अयं त्या॥ १॥ देगत् वँ भग्ने अअ विकाभ अमाग्री स्था ठात्रे त्या ॥ ७११-कुन्छा-भारक मे देशात्म भारक १० आजात्म ॥।॥ भूति उँधानुहाजात्म ॥२॥ मार्किल उँ भरायाकार्य ॥ ७॥ मान्यत्य उँ असीकार्य ॥ ४॥ देशतं उँ असाल्याः ॥ ७॥-ज्जः भागापि पिक् लाक भाजाभागाक्त भूषारा । भूर्य उँ हेजाग् नमः। आर्थे । उँ ग्री (यानयः। मिक्सले उँ यद्याय ।। निर्माण्या । । जैनिर्माण्या । अस्टिता उँ यहालाय ॥

कार इत्या जाया है। विशेष के प्रतिक के । विशेष के प्रतिक के कि विशेष के कि । विशेष के प्रतिक के कि विशेष के कि 1001 वाग्रक्य वं वाग्रत नमः। देवत् वं कुलताग्र ॥ देशाल्य वं देशानाग्र ॥ मूर्त्सभाग है भर्यः उँ अक्राले ॥ निकारियंक्षे भरक उँ थन मुग्ने ।। केलाई ॥ ध्यान म्था काः भूक्षभूकित साद्वाणमातिः भे भूष्या ।। जमाशा ।। जमश्रा भी भी भू क्षः भर्भाकः भर्भभार। भर्धिए भर्षत भग्ना १वा विक्रेम्लाप्रका विधा क्या इम् राखामान जी कामारायमा ।। ।। रा महिस वरायक मर्थे महित राक्ष जकः। देवागृष्ठ व क्षणभात्वा यम् व्य वाष्ट्रिता मृति। मेरियाक्षे भीरमभाग् भाग राव, लायार्छ ॥५॥ त् चवायात्रात्र महिमाय्वा कारीए ने जेंथ छ।। ज्यापी । अप विन्हान्जानि विभानभाग्र ए दिशि। रेजियत्सने रेम भीमा उंभी काभाग नथः॥७॥७ विभार्क डेले९ भ्रक्षः भात्वात्मर्ग उत्रष्ट्रयः। उत्वातिश्व न्या द्वाकार भागानामाध्य १ थाए। व्यक्तिक दिन्नी कामग्रम्भा । १ ॥ १ विका বিরাত দায়ত বিরাদো १ অধি পুরুষ:। ম দাতো १ মাতা রিজ্ঞা সাম্প্র हा विभाष्या मूर्तः। जाठभनीय ज्ला जैथी का आय नधः॥ ७॥ जै जभाक्यकार् भय् देवः भन्तेव. कंसमास्य । कर्तिसी क्राल्य वार्ग्या गार्ग्या ग्रामा क्रिंग । व्यालेश

त्र । दन्माएं शि पिछत्र जभामयज् समाम प्राप्य । रेखा रमनीय उँ भीराभारा वयः॥ १॥ ७ जभाम श्वा १७ जा गत्र या त्वारा उगाम् छः। भारता इ प्रक्तित जभा - अभाष्याचा १ अयाव्यः। केल भाषा प्रताल के मीका आग्राययः॥ ४॥ ठ्रं ७० यण्ड व विधि त्योक्षत् भूक्ष पाष्ठभण्डः। त्वत्त्वा १थग्षत्व भाषा अस्य भवग भवा। मृद्धि मेर असे असे असी यायायायाः ॥ २॥ १ यह मुक्स क कम्युः किश करुल्याय ा भूगण कि अभा और कि वाबू कि भू स भामा देखारा । के विष विष आ ताने जें भी याना राज्यः ॥ २०॥ उँबाध्मला १भा भूगभाश्रीए वाद्वताप्त्याः दृष्ठः । देक् उपम यदिवारः भ मा॰ श्वा रेश माग्य । रेडि यक्तामाः उँभी वामाग्य वयः ॥ १३॥ उँ ठक्या धनता कार्य महत्ताः भृत्का र आसाराउ । त्याचाहार् न्य ज्ञान न्य भूगान ग्रित जाराउ ॥ शह वर्ष ज्यान ज्ञी काभाग नथः॥ जैनाजा १ जामीम सहीकः भीत्को कोः भय वर्षण । महार् प्रधिनः (यायाज्यात्वाकान् अकल्यशन्। रेडियस श्रूयः उँथी कामाग्रन्थः॥ ३७॥ उँथए भूक्रास न इतिया त्या यक भवनुष । वभत्या भाभीमाजः प्रीया देशः भारक्षिः। विक ययदीनः

कामन्त्रा भक्तात । विश्व । व्यानात्मिक व्यामाम १०। व्यानाय ॥ তুল্লীকামার্বম: । তুম প্রামামের শার্ধ্য ক্রি: সঙ্ক সামিষ: হৈতা: । দেব যদ্যক बरीया रेला शेच में के का में ।। इहि जवर प्रायक्त पूजी वासार प्राः॥ १६॥-उँ याजन याज्ययाज्ञ त्या आति धर्मानि अथमान्या भन्। ए इ नाक महिमानः य रख गरा निर्धि माझाः माशि एयाः॥ बेहि तस्या तृत्ती कामाग्यमः ॥ बेहिकाम निता ॥ ठठ: अत्र अव-(अर्ग मुकाम्बानि वस्त्रामाने महि मिगर ॥ कुक्रमकार ॥-ত্রনার্ক্তা প্রভাবর মাত ভারা থেত। রিধ্নে দী এই, দী কার্ প্রতি।। প্যার্থিকা নার क्रमनीय गावः। वस्य व्यक्तिः वभू स्व व्यक्षः॥ ।। य न्यन्य व्यक्षास्त्रां क्रमा ा रविष्ठे॥ । व नमस्याभूत्वारा सक्ष्यक्ष भुक्तानले। द्विण त्रणा पूर्ण स्थाना केल से जिले।। यह असमा स्थिति नियाना असना संस्थित।। रे।। व कार्य स मिंद्यायस् वाश्चिति काश्चित् । अन्यय अयुतानाय असूर् ध्वायायप् यक मूर्य मास्ति उन्यः धक्याग्र लोस्ट ॥ ७॥ उ अतिस द्वः भग्राप्त कार्यन भेष्यं हिरं । नद्यात्रा के त्रेत्राय के स्थाय के स्थियं वर्धाय वर्षाय वर्षाय । तर मेरावारीकार् नम अध्यक्ष भारतिसर ॥४॥ वास मक्ष्य भारति । १ एट वास भारतिस्त्र भारतिस्त्र नार्यागन्। सिक्वसिंग् सिक्कार्य माध्य सम्माग्य । यस मेरामसिकार्य थाः

वाभ भूजा भकात विशि॥ ३० विष्यामाय विषय ॥ आदार्य मेशकिक मा । उँ भक्त नासार्य जियुक्त भत्यानम किनि। । अक्षके मद्भवा ठाई छने या विविक्ति वा। यस मुस्मावानी उन्यः मक्तता ठार्थारं वोसरे । ये जिस्कार्या नि । जला नयभातः॥ तू याता मैं मचारा भरम कैत्रां भरम नामासि चिरं। ये यारे । भरमयाज ने याग्र मान्यरह । स्वस्रारहा याग्शातिल नयः ॥ असि खल्पस् घ९ भूने असि हिल्स्स ग्रह्मण । जिर्क्रण म महात्यां कि कि वास्त्र त्यार्य व ॥ रा। ज्यान कि पर पर्वारं ला बासन विवार र समझिवारं केसवारं लादिसारं यत्नायमः ॥०॥ रहिस्वेत्यत्॥ भाभाव भिष्ठा विरंध आर्थिन कुर्याए। कृ जास्त्रिकः अनुष् भान उँ भाधन महजूर्वा भाभान् भर्क ट्राजिशासे । भाभा भाभाछ लाहारिक लक्ष्मा अर्फगए माल ॥ भू छ त्किलाणिला धावमु विम्यावर्भनाजनः॥ अर्के जावर् आभाभि अर्क यु विवास दि ॥ आसन आर्मि आनि अ कूना वर्ष इन्छाउ॥ अज स्मियारियारि अकान् वे अनि अक्रिकान् ॥ आक्रामि हजूद्रायामान् जिले বাসতি বাধকে ॥ ততুরো য'বসেন্সাসান দ্বৌ বা কৌশিক বার্শিকৌ ॥ বার্ধিকা শ্র (म) पूर्वामाभान् विष्वान पिछः क्षिण ।। वीजार्क्शानाः जीवानाः विभा ७० याणा

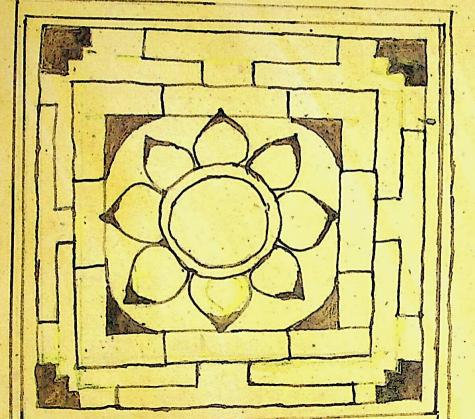
कार भूजा भकात विशि। ३३ ॥ ४०६ जवर ॥ अस्तिक दिनिर्वामि भागि दिकामाल भरी ॥ भूति विले सुवा वाले निवासिः भगविषः॥ अखिषाः शक्षणार्थाम् जाषाद्याः विवभागारः ॥ देखवन शिष्टिस्युः भार्यभा य हिष्मण्याः॥ विषयस भूत्यून्य गाभिकायः दूर्वार्यका ॥ यथा भारता ह अक्षिका कित्रिकारमा वर्ग भूमा ॥ हाजू भी भे यजी नाथ यः कात्र गृहि थर्माहिए ॥ अवर डीर्स कू पए भूषा अवहः मात्र यू पर कला ॥ उर अवह लाजा अर्डा आशादा विकु भूजवादिति॥ त्यस अर्थक वत्र गिर्मान् क्लामानि तालाबित ॥ लाज दीमाखत तर दूर विद्या प्राएभल ॥ यूष्टवृशिष्मवात्य प्राएथ्छ তাবেদিদ ॥ বিবুক্তে তু বিবৃক্ত १३ প্রমন্ত্রো মেতবা কুত ॥ ইতি প্রার্থনা ॥ ल्यन द्वाला (जानियाल्य व्यक्तियाल्य व्यक्ति प्रश्चिम वाज्येत्य व्यवस्था विदे लकी भरव शस् ॥ ठवूदावार्षिकान साभान् त्यवत्भाषाम् वाविषि ॥ इस करिया निरंभ । श्रिक्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र ।। देन वक भगा प्र ग्रीक भूशंड

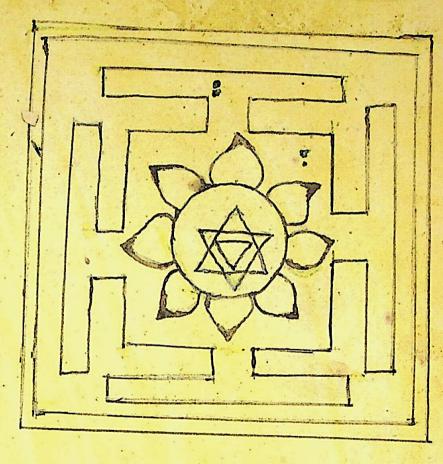
भीत्यान्नधनभ त्कोत् नमृद्धे अन्याद्य ॥ अक् िका नक्ष्या किलार

अर ॥ निरिञ्न भिक्ति भागा व स्थाना हो त्याम्यल ॥ विविध्याः ॥

युष्याठल् ॥ भूकेत्वक्षित्यत्व भ्रात्व भक्षक्ष यमित्वा अत्र ॥ जमा अवब् अन्धू कि वर्ध्यामा जनगर्न ।। वेषि भार्क ॥ गृहीत भिन्न वर्ष प्ति यस मूर्ल बिता एक ॥ जल्य जराषु भण्यूली जुर स्थाना जनमहिन ॥ नभक्तातान् कुर्याए ॥ जला श्नख्यः गृत्ये ग्रं मूर्येन शूंभमिते तिर्य को भीनाकाम्न (भारत लामि) उसन भूर म्डकाक्षामू भागातेः अध्यक अन्यांभी ना॰ भूजा कार्या ॥ जला विजीय मिरास त्रिं सं मूक् विसर्पाए ॥ जिस्ति वा रिमर्पार ॥ उँ देखिरकी जिके मक्त्र भून तामधन पूर्व ॥ अभीम प्र प्त भ प्राविद्याग्रवे अथूडः॥ नामभान अशास्थ्र निवसम्सागिविद् कृष्टिद् ॥ वाअर अभाग भीत्मयू भूभीत्मयू जमिश्रियू ॥ अविः ॥ शेरिकाअसूजा विशिः॥ अभाक्षः ॥ १:॥ जला एका पित्रम् ना क्रिकार्। अस् मण्ये भू विकार ममार ॥ उठः भन्गामिछ छेकािमेना द्रिभाभिन निग्राभ भवाभ को र प्रयूक्त जािन गक्डामनाकाश्रामिक कृषा निग्य विशय अधर्माठ्रम क्र्यमित ॥!!

. औ क्षित इट ग्राजिक मह





GC-0. Mumukshu Bhavan Collection. Digitized by eGangotri

राम्य भूषा रेजिश्मः॥ 28

विकासम्बा विकास । अया विकास ।। मान्य देवार ॥ विक धर्मास गानगानाः अवन्य महिल्याम्यः। कृष्णिकारियास्य वाभ सभीता नार्क्त : ॥३॥ म्फार एव विश्विता किंद्रन ७ ४५ माला ॥ विकार वाछ॥ आबारका जिल्लास सुर्खात् काभिनीयमा। सूर्वभाभी जैमां उच कामसभी जगर्नः॥१॥ व्यूक्रम्ह राजिनिः अर्सि ईर्छः व्यूत्रभक्तः। ए श्रि अर्सि द्यम्कारो भ्रश्यशिकिताम्ताए॥७॥ अर्वराज्यम्भाणिया ७ विवे राज्य गाअए॥ भोरान राज्य गामि राभाय जला माहि॥४॥ द्वादमार भक्षा थ लिख्या भडेलीयकः॥ कर्र नाभ विशाया थ भूका स्वकं प्रवाः॥ उ॥ उप्यक्त विशासन काम कमी जनाईनः। डेम्डादेः काउ लाउः मूजनीयः भ्रायुष्टः॥ ॥४॥ लोगले नीय जिनि विद्याले विलयणः। एक्ट्रि नेत्नारी छिया विकारिकिर्दा ।। १॥ उद्धेल: एक भूरिम क नामावरिक्रक लेग्रिम। को नितं मंडकारो भव हनते गव वित्यवणः ॥ ।। भोरले वाद्रते वीनि नावित्वण्य लिअया। नानावासि विलाखिन्छ ७ म मूजा रूल मृत्र ॥ न ॥ वास्त्र स्थादन

अर्थ विमा विनाइमः। अर्थ मास् ध्रवीनी मह अर्थ विमा ध्रास्त्रीः॥ ३०॥ महिताहि विधानि ।। युकः मूयक्ल भावि ध्रवान विश्विन ॥ युकः मूयक्ल भावि ध्रवान विश्विन ॥ युकः मूयक्ल भावि ध्रवान विश्विन ॥ ३०॥ म्या क्ष्रा धृतिः कार्ति (ओठाम भण्य प्रवा विश्वे विष्य ।। ३२॥ अञा मालिक धोमार्थ मास्त्रीर्थ भण्य प्रवा कार्य भावि विश्वे भण्य विश्वे भण्य कार्य भावि विश्वे भण्य विश्वे भण्य कार्य कार्य क्ष्रा मिल्वाहिक धार्मिक क्ष्रा मास्त्र विश्वे भण्या कार्य क्ष्रा म्या क्ष्रा क्ष्य क्ष्रा क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य

प्रथा ॥ रेकिस्टेस्ट्र अभीष विश्विः सिकार्ष ॥ भेजादिश्रिक्ष विषय प्रिया विश्वा विश्व विश्व

किटि। उठः भक्षण क्र्यार्। दिन कालो भाषा अकी युक्त गरायेश सिनेने छि कु लोतका-ऊ विशिना अभारी कारिया ॥ देविभक्ष लगा॥ उछ प्रस्ति नवकलना भाषाय जिल्पीनकतान्य जन्मक उँ गामिक धम्या देव लामावारी अत्मृति। नर्यात भिन्नुका राति जल्पशिम् अञ्चिषि कूर् ॥ रेडि डीर्थ भारा ए भ्रेगरान गास भूरमा का जिस्किन्छ। य नेषि यन भूषा धमर्ग जन्मति छानेयमके शाप्ता बराक्त वस्तु, नेबा देत, तस्त, नाज्यकामा ॥ ० पायांग्रेग, नायः वस्त विवै पायांग्रेगः लयः॥ नार्यायन लखा काद्या कानः नार्यायनः लयः॥ गठक कि कि कर भर भर्यः उन्हेल न्ह्राल भिता। असर्वित नह उट्भक्त काम्प्रभाताग्रागः । अस्वः॥३॥ त्न्यम उ उगा किन्छ द किन निकृष्टि भए:। पृष्य किन अ आम् अअपयेक ७५४ ल ॥७॥ रेलाले धिकुः कलमायाधियन्य भागायाभाग भूतः भरा हो स्याने रिकुभू छेता भा विकित जिभू छ र्या भी प्राप्त शिवा ॥ सम्मन् जमाया ॥

उँ नग सि क्स मस्य देखा व देखा नमः। जा नम भूव ल नमः॥ ।॥ उँ या ल क्स मिवा जन्त्राकाता भाभकामिती। उद्यानसुन् गत्यभूग मित्र गतां जि তাকসীদি॥२॥ওঁ যা মিমুন্সিরিশন্ত হয়ে বিভর্ষশ্রবে॥ শিবানিরিত্র जाअन्यमादिल्भीः भूक्षण्याए।।। मियाय यहभाषा मित्र भाकायमा यमि॥ यथानः अर्क मिन्त्रभन् युक्षणं भूभना १७४४ ॥ ४॥ ७ अझ (वा हन थिरका अलाभा दिका जिसक। अही यह असी अध्यांन असी यह पायु शा त्या धराष्ट्राः लग्नाभूग ॥७॥ जंजात्यो धस्यात्या १ अस्व ९७४ इः भूभक्षः॥ त्य किन् कृता र्था किला दिक् थियाः अर्थाला विवाल दि वेशद् गए। उँ अभी त्याय अर्थाङ नीलागीत्या विल्लाहिङ:॥ डे त्वेन लामा १थाइ या इ मान्य रें। अन्ति भूष्या हिनः ॥१॥ ७ नश्या १ अ जील मीराय अवभाकाय भाट्रेस ॥ आशा (पर्याभा श्वा त्वा इत्वर्णा कर्यस्थः ॥ ॥ भव्रे स्रम् क्ष्मेय श्वम् चार्या वार्ष्वप्री क्लिर्श ॥ या नह त्व द्य देववः वाद्याचा चगाता वय ॥ न ॥ व पूर्वका निक्षमिशः॥ ३०॥ उँ भा छ दिछि भींद्रके भ द्रास् राष्ट्र ए धन्:॥ उगा आ ब्रिश्व सुभ रक्ष्या भारत यूज ॥ ३३॥ उँ भारत लि शनु ता त्रि त्रभान् युत्र-कृ विभग्रजः॥ आत्या ध १ देवृषि अवात् १ अभान्नि सि वि ॥ ४२ ॥ उँ अवल ज्यन् कुण् अन्धाकमाल यूर्ध ॥ निभीर्थ भाषाना भूगा मिर्गनः भूगना उत्। ॥ २०॥ उँ पश्च में मार्ग हा ना ना निकार है स्वर्ध ॥ दुनाना मेंबर प्राण वार्या ज्यधन्ता ॥ २४॥ रवं शाता भश्त भूष भाता १ वार्जन भान डे इस्तु भूष भाग डेक्किक ॥ भारता वधीः भिवतं स्माक्षणावृतं भागः शियासत्ता कप्ती विषः॥ ३७ ॥ उँ भान खात्क जनस्य अनु १ आसूषि भाता तमस् भाता १ भारत यू शाह्यः॥ भारता वी ता व प्राचा वार्या वार्या ई विद्यातः अम् भिष्या इता भारत्॥ ॥ २५॥ इंडि केरे मस्या सामाराखा ॥ ३०: मैं किंदा में स्टिय मानाराई॥ वर्गना ॥ उँ भर्भ भीकी मूक्षः भर्भाकः भर्भ मार्। भर्मिण भर्मि भर्मा १४ जिले स्यार्श्वरा ॥३॥ उँ ध्रुक्त स्व व्यवस्यं अर्थ गर्यु गर्या या रिया रेखा प्राया विषय

म्स्यः। मात्मा १४० विश्वा प्रजानि विभावभाभ्य प्रज निवि ॥७॥ विभावर्षे १ डेले ए मूरुषः मामाश्क्ष श्चर पूनः। एला विश्वर् ककायर मानना नगान १थार्छ ॥४॥ ७ जला विवाद जायन विवाद १थारि भूतरः। आ जाला १थान तिछाउ मन्धास् विभाषा भूतः ॥ ।। ।। उँ जभाम्यास्य अर्थ द्वः अस्व न भ्रमास् । अर्थे के स्वान अरद्भ थांगंधा पांधाका साम्या अर्थ ।। ता ११ विस्मार्थ स्वान अर्थ देव अरु: आभामि याजित् । दन्मां भि याजित् जभाम्यम् अभाम् प्रायेष ॥ १ ॥ ॲउभाम भा १थाषायम् य किला या द्वः। भावा इ याकित् जभाष्माण १ वासारग्रा ॥ ए ॥ वे छ॰ शक्षेत्र । स्विक्त व्यक्त व्यक्ष । स्वित्य । स्वित्य । स्व यत्रम आक्षा अवसं ऋत्य ॥ २ ॥ ५ यर मेर्स्स कर्ये । स्वार्ध कर्या कर क्यांच । स्वार् किसअग्रभीए कि राष्ट्र कि भूत भामा १५ हिए ।। । । । । जैवास्त्र भा भू भा भा भी द्वा इराक्त्यः क्रवः । देसं वर्भ यदिग्य सम्भाष् गृरदा १ थकायव ॥ ३३॥ उ हन्या भनत्मा सात निरक्षाः भूतम् १ असाग्रह । व्याचाद्वारी निरु ह्याने निरु सूरमान ग्रितं साग्रह ॥ ॥ ३२॥ में नामा १ शामीम सुरिष्क भीर्सन को: मयनर्यन । भह्या सुमिन्नि मः त्याया

उत्यादनाका र व्यक्तवरान् ॥ २०॥ व यत् स्कासनं रिक्षा (द्वाः धक्र घण स्व ॥ वभाता १ अग श्रीमाज्य शोधा १ देशः लात इति:॥ ३८॥ उँ असाआग अन् वातिशरा - ক্রি: মস্তমমিখ: কুড়া:। দেবা যহাত তত্ত্বালা । অবগ্রু পুরুষণ পশ্র ॥ ১৫॥ ওঁ যজেন যজাম যজন্ত দেবা স্ত্রানি থমানি প্রথমান্যামন। তে হ্রারং মাই भागः महन यय भूरतिभाशाः मनि दिवाः ॥ ३७॥ रेजि भूक्षः भूरतन भाग चीवा॥ उठ आलगाहित्ये जियान भाष्ये ।। यथा उँ आत्मा हिया भाषा पूर्व सान - उत्स्ति प्रशाजन अस्विशोग् हकाम । उँ त्या तः सिव जला तम सुभाजा प्रशाल दन देगां दिवधावतः। उपभा अवश्रभाभ ता यभ क्यायं जिन्व आत्मा जन भ्यां ठनः॥ रेजिमाञ्चन अनेरान ठ माउँगम्राकन अकीपृष्ठम थलः भहीत्रभ खाण्य भाज वात् कान्मा वात् वा श्रा भाषिता ॥ भाष्णवासामि भूकिक प्रभादाभू कार्य रहिकीर्यन देखि: कृषा।। भारवार्यक्तीत वस वस्तास्भ वाते रंभा विधार्गे किया। जा उपका जिल्हा महीइधार्गिक गम प्रकार्गिक मानिक मानिक ग्रमकामिछ ईन् छ तरितानि प्रामार भाकीभूमिकि वा मिम भीषा सकादमा भ

भाजाराद् ॥ नरीवारं इन्यन्म भूता प्रवाग्निय वा अध्यान सर्क्र मर्थः কুকাই।। এরা বিধি।। ততা সূমি কার্ডিভি: সংশ্রেক্ষ্য দ্তে ভাষান মধোপর্ক তত্রপ্রা দেব যজন নামী থানিত্বা তনাধ্যে সূক্ষা গর্ত সাধ্রিষ্ঠ পারিমিত কুরা अञ्चराष्ट्रितिः प्रथमार्या आक्षा ॥ जलभभाषि भाक गर्यभात भग्नी वा प्रातिकलम उच प्रांगक प्राक्षिक्य मकिना ग्रान् दूरमान्यासीक साविका महीतं आका भूतमभूराज्य मार्डभारतिय भ्राष्ट्र अनेरवयारकेराव गाउ वार्व भ्राष्ट्र साम ब्या हात्राखें वे वेष्य देवत कार्ति मुख्य है कि शालात है कि वे वार्त्य वा हिस छोट ॥ मिक्सिक मैंसिक मिक्स मिल्ला निर्दाहि।। जू सरम मास्। ।। ईसे, व्यास्य जू नी सुरित ना यार - वारायशः॥ १॥ ० अरेक्स चार्यते इति । श्रीतातः ते स्मुर्ति । ॥ ५ जवायायन्या देख भामा र्वसीय्ड ॥०॥ विभार्षि । आर्थ्य विभीय्ड ।॥ ह ॥ व क्टा विशेह संग्रेव १० मायम्भार ज्यासिक । १६। एति स्मार्थकार । महीनर्से ज् वसीर्ष ॥ । । । । ज्याम्पार्षार अर्कर्ष । भूनवार्यानीयुर्वसिर्ध ॥ । । । ॥ व्यास्या अपार्य ।। यातीसान्त वक्षित्व ।। ।। व्या यक्षि । वस्य

विक्षारित ।। या तू त्र विकार कर विवैः । मार्थिन तू त्रास्त्रित । २०॥ तूर्यान्य ० भन्न उँ अक्षीर्ष ।। >> १। उँ ठक्षा यत्र ।। मूक्षे उँ अक्षीर्ष ।। >२ १। उँ नाजा वाश । श्रम उंद्रकोर्ण । १०॥ उं यर प्रकार विका विका । त्रीय उँद्रकीर्ण । १४॥ - व्रमञ्चामाभन । त्याम एउकी वृत्व नावायनाय नमः॥ मा व्रमत्व यस्मयं। न्षिभात्वने वन्त्रवा उँ अक्षीयूष ना वायनाय न्याः ॥ रेषि भूषाभ्याभ्य ॥ एए ५० व नावारंग, धन्मी र्रेट, अए०६।। त्रिकाता। त्रूला : महितः की मुख्य प्रमास्त्र विनय कर्म ্ ন: মথবর্যভাগ্রে। তম্যত্বন্ধা বিদ্যান্দ্র সোরেতি তথাক্তম দেবত্ব মান্তানমগ্রে॥>१॥ त्र विस् र्याण भूक्ष भश्च भाषिक वर्ष एम्भः भव्भाए। जायव विविद्या १ जिभ्रू (यकि नान्यः अन्यादिक्ष्व व्यंनाय ॥ २४॥ उँ धकाव्यकि महत्वि गर्ट अख्वाँकाय भारता वर्षा विषाग्रत ॥ ७३० यानि भित्र भन्मित शिवा अभित रुष्मूर्य्वनानि विन्द्रा ॥ ३ न। उँ त्यादिव उप आजमिल त्या दिवादा मूर्त्वाहिल: । मूर्त्वा त्या दिल्ला साला नामा के हार्न तास्त्वं ॥ २०॥ व्यं कह दीम्स सन्म प्रमाखा प्रधा लाखा वस्य ना य द्युव॰ याऋली विकाण्य प्रवा १००भनुला ॥२३॥ उँ भी महाउ लक्षी मह राष्ट्रा

पहादाक्त मार्ली नक्षवाणि क्रमश्राम्य तो काछ ॥ ईक्षत्रिधाना भूमा देशाले भ र्य लाक भ देयाने ॥ स॥ देखि लक्षीभूक भविषा ॥ धृजा भभाष्य ॥ ७ त्वा अभा भाषा मिछि तलाईक्का मिरा मूजानभाभि छाटेव कृषा भामियाम अंडेशवास मूर्य कि भू गामिक रुषा ॥ उँ विस्था द्या शक्त भ गरी ते मार्थ नमा वा निशा ॥ उँ देन निस्था विठक्ष विशानिन्धिभन् । अभूष्यभाषा भा भूत्रभाषा । देवियाना न्द्र विगद्य कृष्ठा भूमा किष्ठा या कि दिस्तिने द्रा निषाय ॥ जा या कित्र म्या नेन সাটেৎ॥ মথা ওঁ ব্° ম: শ্রুচি ধর্ম রক্তরিক মাদ্ধাতা বেদি ধন্তি আর্ রোল মাত্। न्यन्त्र अव्वभक्षायअन्द्राणाहा अवहा व्यक्ति अंव वृष्ण्। भारति नाक निरिष्ण अष्या विञ्राज मिष्टम्य दिया विकासि ॥ विमास विकास सूचि विकास । मक्राम यागाम्यवयः सङ्गमवाः ॥ त्वयक्षालात्कर् भवान् काला भवाभूवार् व्यात्रिभू था कि अवर्ष ॥ के अवराय प्राप्त ॥ क्ष्यार्थिक व्यक्ष भूक भक्त प्राप्त ॥ मूक्ति वस्तरमा। जैंडाका महानः भ्राम म्रहास्त्री भणः भ्रामणा (जनश्या यः॥ अयू श्रा देभ्या अव्य विक्षाः अव न्य त्या विष्य अवन्य विवः ॥ शेरिज्यर् ।।

जला नात्नी १३६ मधा। मार्थमण्या॥ अँ तिरकत रात्रार्थभाभि विरक्षतः श्रम् व्यक्ता विरक्षाः अपूर्वभि । विरक्षा द्वित्वाभि । विश्ववधिभे । विश्ववधि । विश्ववधि । विश्ववधि ।

रहत ।। देख-याला ॥ ७७: यथ्या देश्व नया मलेए॥ यथा ० त्रअयु भविषुः सभाव निष्या वार्या प्राच्या स्था व्या व्या वार्षिक । वेष्टिक विष्या ।। विष्ठा मूर्यावः किमारा जराया उँ श्री र्या अमा-माजा भाउत् भाषा भार श्रामा पूर्णः मस छि । वा दिस् भ लिएला ॥ रेडि मक्ति भू द्वारा भारता भर्ग्या भारता भारता भारता वा नाविक्तलन वा जिन्हाए॥ भिद्धा (अपने कर्यू अभक्त क्रिलिश्मि गुड मिल्डभक् द्वा कल नाजिकलादि निथांग जिन्हाए॥ रेजाठावः॥ जलअधिस स्रालवन उंसूर्यवः श्रुत्वाम देखिमास्त्रणे नामाल देर वहा जमाध हाल किया महायूक्त मानामा आजिन हाल मेखा उँ रू:श्रारा रेडि मत्मने याजर्भर त्याहराए। रेडिज्यमाधिः। स्वाममाधिस स्रनेरान जें ल ज़िश्मि सक्त मक्त र्युष्यामि शामनामाभि छिए (दवाना भना शृक्षेत्र (दव धडानभाभि ॥ रेडि मास्त्रेन नावन मिकलामिया भू इत्रिए ॥ गर्थ कृत्य म्यूरी व्याप्य पूर्व दिय जिया जिया स्त्रिन रःभारा णखन छक् दंर लाठायए॥ नेजितिलायः॥ जला कृजास्मिना मारोए। यथान्यान्।

जॅलाग्न नाग्निः अधिकाल कवि एरिमारि र्या रक्तारे प्रसाभाः। पुः काग्न लाग्नि वित्या वित्यने भएभाजा भन्गांभका म जिसाम ॥ ७० मईग्रह भूकृष्ण भूका पातान् याजियु (अयु कार्ययू वाजिन ॥ ॥ यद्धन यक्षयं ज अत्वा साति सर्याति भाषाना मा अन् ॥ त्व द्वाक भाविभावः अ ठउ ४० भूति अङ्गाः अङि (प्राः ॥ २॥ देखि ठउ (भावि) या माइट ॥ वाका र व्यवश्वास अर्थेश रूप मासित ॥ इक्टिनार रेथे ये प्रथा ग्रीय कृष्ठा प्राञ्चेत्वम् अत्वक्षाः नृषु अग्रिक्षिल् अभाम्पाठ्या ॥ यत्रीताः राद्रिसस्त भार भूयः नित्या वा भार्यव आहा प्रथीए॥ षद्भिय कीतिन ष्मित्यए। वेहि यहि अव प्रकाश्चार्यः॥ नेविद्यादि विभक्षण भन्नाति। ।-: i:।। विकायनीय भाइति यस्त्र यस्त्यय भागति यह्यः स्वतः ॥ यस्या अठः ॥ किछः अक् । विराधानः। वाम्राविः। ध्याशीए विदः। काला ध्याप्रः। विन्त्रवालधाप्रः वाक् मार्रिक्रा। भग डेम्बर्का। भारते र्विः। भभा शुर्थः। वारुभमार् रिस्य ना यन् ॥ विश्वयत्व नाम ॥ विश्वस्त्रभाकिनाम ॥ वाद्यातिः त्याम विरुष् ॥ ध्यात् भून्न थारभारा ॥३॥ ७। शर्म र्ः भक्ष ॥३॥ स्थिरी राज । को त्यार् ॥ का रभीन् ॥ चृत्रकाल्सम्भक्ता ॥ वाटक्रमल वाट्यवीर्यन ॥ अञ्चलकारास्यका

यक्रानाय वार्क ॥ आश्व अस्य त्या ॥ वार अशिष्टः त्यायः मित्रार्ड ॥ जजन मिनियायुआरा ॥ ।।। भागरी लाखा नुन्य ॥ र॥ आधार्ताका ॥ आन्य जास्तर्भ ॥ क विशा नीते। शिवडेभारका। त्यागः त्याभा भारामाः। सकः सक्रम भूत्रा भाः॥ व्याजास रेक्सभाषाः॥ वाजात्म रवन व्यवः भारा॥ भारी ्रिकारकी ॥७॥ असे एक दकः॥ याज सामः॥ मा मुखी ॥ अस रिक्स भावता॥ अस्मिर्यक्ष ॥ भागविन भरीतिः। याद्यभाष छित्रं या वाद्य ॥ आवित्यापु स्वा। मिरित्या द्र्या त्राचा त्यत्य अभाग्।।।। भूर्ये त यर ॥४॥-भश द्वि र्श्वा ॥ भण द्वि सर्थः॥ अकुछ भाषा अभी ए ॥ अकु भना देभवका ॥ अनार्थि नहा खारिश्य नह यक्त्रणार्थि गातोः॥ अग्राक्ष देमगाला। वाठक्राल महि (थनाभन्। विस्रभावनाध्र ॥ विरिश्वभाकनाभ्र ॥ वाष्ट्रभाकिः त्याध्रभार ॥ मांत्र अख त्या मन्यः॥ नत्या दित । नयः वृणिके भारा॥ आभाजीनि ठ॥ छ।। यह साजा । । । वे छि अन् । रा स्थिति वा जा । प्राचिति । प्रा ह। भश्चित्राजाः॥ है। देखि मक्षान्याकाः ॥ आजा त्या देख घटे अप्टा किम्बा जन्मादि भण्यादिन पत्मे दियुका त्रं ॥ अन्यत्मध्य अद्युक्त प्राप्टा रेजि

ावशंखा नमभूख अवञ्च व्या भाषा भाषाम् शृषु तेलम् लक्ष भृषेषु ॥ जागभातादम्याम् सिकार्भया माळ्यूः॥ देळ देवि भावेश मिक्सिः॥ अखन महारा । आधियामि दिन्नामीनी दिलावः।। विवः कर्ण मार्वा द्रम सिश्चिक क्रिय राह्या रेकिय पायांत्रं सामिनः विकार किर्मन क्रिया ॥ इक्षिर क्रिके . अत्यव त्र जीलां तेर आकार जर्भशामि॥ अख्राकार जर्भशामि॥ भरवा आंय किर्यास ॥ म्लासका कर्याय कर्याय किर्मा किर्मा । ते स्वीत निर्मा में अ किमरापि द्वाप्नायाधिः॥ क्रिक चान्कं युष्ण अक्षरींगा पि द्वाप्नायाधि विख विकाल के प्रारं ॥ एक रह नाव कि में शाशी राज्य महारों ॥ देन किन की रा ति वि किटि। जीव भाषा ॥ सीउर अ भारति शारा हभा भिन्नि गाजभावकी य अप भारती रभगारायने सम्यर्भ गारायने भूजर्म करिए ॥ देनिभक्तन्य ॥ त्रज्ञामार्त्रः यमिनीत रा ठवूत्र रापिका भेभाक ज्याभू नाम निश्च भंभाक जाल कारण मारको अभी प्रलायत ७९% समि वा विहिन्स भू रूस भू एक व यह का भाग हा नामा नाराय्या हि अनुभूका जन्मन अहित स्वाउन नामि याताइनानि स्वाउनाम

हातः चूर्णि क्रिकेश ॥ भूक भिद्या मार्थि विलि विरिद्यः भूक मिनः उन्निति मिर् भारं भ निकामि प्राप्त कित्यर ॥ उद्भार्ण निका । इम्भिक भ्रम्भिरामीक्वर में क्रिकेश मिर् लामिक अ भिष्किष्ण ॥ उद्भार्ण निका । इम्भिक भ्रम्भिरामीक्वर में क्रिकेश मिर् मुद्रा ग्रुक भार्कर ॥ विलि भ्रम्भित क्रक ॥ यक म्भामित मर्था अति क्रम्ले मूजा न भाराभ विलि मानाति भ्राकर क्रम्भिर ॥ ।

ততঃ একাদলে ধরি সাম্রণ বিধি: ॥

्व हाजाराः॥

একাদ্শারে সূত্র: শিক্ষা বা প্রাত্ত: কৃত নিত্ত ক্রিয়াপ্রগাসকলা মধ্যারে বিপ্রামার ব্য নদাদৌ সত্ত্বা তিলতর্পনি কুর্যাণ । তত্ত: মাকল্প কুর্যাণ ।। দেলকালো মাক্রিয়া মাল দ্পাদি সর্ক প্রাত্ত্র। বিকারার্থি অফ লার্কেন প্রাত্ত; করিছে ॥ ইতি মাকল্প ॥ মালে লারতি লাক্ষণ লোহ একীভূত কেশব শর্মানা হাম বিভাগ কলা ।। অসাং লিতু: কাক্ষণ লোহ একীভূত কেশব শর্মানা: বস্কু ক্রান্স প্রাত্তী নার্কিন প্রাত্তি ।। এক লিতামহৃত্য প্রাণিতামহুডেত্যাদি ॥ এক বিভা লক্ষে একীভূত লিতু লিতামহু

३७० यहनार्यण भाक्षिश्वाक्षिश्व । भाषानिश्वाक्षण के विशित्ये भाक्ष अभाम्य ॥ भया विकात विन्यत्वामि कृष्ठा भूक्ष्यूला पूर्विलि ॥ भूवाम् नः ॥ मिकामि कर्णाटल निमामी याका भारी त्यार ॥ आक्राय जर्भशामि ॥ अस्राद्यारा उभ्गामि॥ भव्माकामः (उभ्गामि॥ त्विकार्यति क्वमान्या ञानानायक त्यकालो भाषा अकी रूषका ग्रहाः अकारिकारि याका थि कार मिश्रेष्टी अस् भार्कन आक किरिक्ष के अन्त न्या गा अला जाति अन्तन्त्र भार ॥ ये भाभाक्तिक तक्षारितक त्रधाः भन्नायक भक्षानक रिक्षक नवन नक्षत्र ज्ञाशिश्वाद्या ज्ञाशाशाशाशे कृषिक नक्षार्वक्रा महिलाः नाक्ष्य ज्ञास्त्र गर् क विस्था रेक्स कल्का । या आया अग्राम अग विल्यद्वार्या जविहः क्षेत्रेः कियुका भिष्ठि विश्वस्य वास्त्रे वा निस्का ॥ अश्वस्य वासा मृत्यात्यर वर्षः कर्षक भारति भारति ॥ भारत मत्क पू वे भ्रम कर्वर वक्षीपूर्ण भा-छाताः भारति आह्यातः भारत जराहिः हतनेः क्रियण किलि कले न्या । यसक क्ल न्या। यद्।। भाष्य व्यक्त यक्षार्षका हालाः भाष्य वराष्ट्रः स्थः क्रिंगवाराष्ट्र

जर्राहः क्रनः कियुना भिक्तः कर्नः नश्चा ॥ वक्त विभागाकः ॥ अकीपृन्धा छाताः मार्त्वनथा क्ष आर्थों कर्याया मसभायां माल यकः क्षाः क्षिया । हेडि ॥ ७ छा या क्षां म कृष भाना ठालान । आध्यभान् देनध्यभान् वा देनविग ॥ दिल ॥ उँभाषु सुरु भक कारा विलाका प्राचा देन भाभन भारा ॥ आखा भक्त प्र ॥ याजिक त्या अर्थ प्र शिकांत मिन्तीका ॥ धर्मिन अपूर्तिका गृष्टि । १ थाकात देनभाभन भाशनभा रेडियाक्सनेभ्य मकिनेखा मुष्टा ॥ यद उँ अखुताकान रेम्शाभून भारा न भग्रा । उँ भत्रा वान रेन्शाभन भारान भारा ॥ उठः छाग्य नर्ज्य्योतीयूमति भाषा मुरे छाक् भ महायामाम् अडि अलि मर्ज क्या दिल जल्या मिछ ॥ उँ माद्वा प्रित छिए। माद्वा ज्यक जीखर्य मा त्या ति अवस्य नः। रेडिशक्ति अत्यातिने भावाने अर्स्य जला म्या॥ र्वे याता मि भाग दिवाला लगाभावा दिनिर्भिणः॥ खुषु मिहः झुकः भाग भाषान रेगान ल्याकान जीते हैं। हिनःश्वारा नम देखिमास्त्र अखिमान धवानि हैए जेक्की गम मुक्या ाति है कि ए आवा की देखि तिस्य ॥ १ आकात्रिम् अके आवा नध्य ॥ १ अखु वाकात्रिम् मक्कि भारा न अस ॥ ७ भत्रभाव्यानिष्मक्षी भारा न असू ॥ जावा गन्नादि मान दूर्याए ॥-CC-0. Mumukspatingan किल्का के किल्का के किल्का किल्का किल्का वित्य के प्राप्त वित्य के प्राप्त वित्य के किल्का किल्का वित्य के किल्का वित्य के किल्का वित्य के किल्का किलिका किल्का किल्का किल्का किल्का किल्का किल्का किलिका किल्का किल्क

अस्ति प्राचित निर्मात्त्रीत मिनि मार्सिन विस्ति। ।। जित्व दें आ रेक्क अन्य विस्ति व्या प्यान > ७२ गास म्यार्थ र्मिन्य सामित्रसादि वित्य ॥ अस्यया ॥ ३ प्राव्यन् वजान्य गस्य भूका धूम मीभा क्काम्नानि भाषा न यय। यथ गर्सः या भूका वस धूम यस्मीभा नवमास्य मन् ॥ नव ने अस्वाजान नक भन्न: भारा न अस नक्यास्यान्। र्वे महंभाक्रत वर्धशक्षः भाषान्यभ । वरभाक्षाय्वायु भर्क । जीतम् ॥ भेषा कि ॥ ज्यानिमान्यादिन मान्या ।। जाना ।। भिक्रारि॥ राभा उँ जिन्नां जी अर्थि यम त्यश वस्ति क्रा भेष्ठ अत्ति १ अत्रम न वा भशा स काँशि एकाः अभि लाह भेषा र्वाश्या राष्ट्रशाना अर्थ । रेपिशक्ते वैसानामा र्य मिक्रिश्वरार्थिय माराणि भाराना देवा ॥ विद्यामिति (वास्त्र मांचानी आस् । उभश्चीर्य व्याप्तमार्थाम् आमू ज्ञाण भूषाय कृत्वा । उथायात भाषा । अस्राध्यात्म श्वाका । उपायमाकात्म श्वाका । केडियथा भारय 'अल्पी कर्ति क्या । अल्पी मानिय वा क्या। गाणवात्मी कर्ने नाशी जिल्हिल । जिला स्नारम अवादिक असे असि असिका मार्थ त्त्रास्त । अन्यान् र्यायाः माणः धृषाउँ भृषिरीत भागः कोः भिरानः वासन्य भूष्य रथेक र्भु उ पूर्वा भि भावा । रेजि भत्रमाद्या भर्यन भावे । उन् : अर्य अज्ञ मण्याद्य । अर्थ अधार्य र् देन विक विद्याग दाशा निर्धानम् अभूर अभा मा अला भारा ॥ देनिरिका ज्या

द्वार नगम्भूष्ठी नित्रलाखं ॥ विस्मिर्य वस्त्रभ रेषिभस्त्रभाय धृष्ठा भार्य ॥-ज्ञातिश्वादाता । जैभाष्ट्रास्क्रभण्डाका जिल्हाला मित्रणः हेन्येन थया मित्रिया भक्रविभाषाय भागित्रमे ॥ यर आया भक्षत्र ॥ ये आयात्व याया गणि आयक्रवे क्रियम् अत्र नथम ॥ उँथा स्वाकात म्यानिक ल्यामक रूपे। विष्यम् भाषान थम।।-ें भवगाकत्व याचा निक त्याभक्त विष्य भव भाषा व भय ॥ रेख व खारा क्षा ॥ व्यक्षार्थन। तक्ष व्य विकाली तक्षानी विकाल विकाल विकाल विकाल के मानिया। उँ यका विकू भेर्कुड भ्यक् भूजाना तिकाः। जीन् लाकान्काभ विकाखा पृतेष विश्व यूग रागः।। अत्र याक्षने लाजत्व वक्षीयूच नात्रागेन : भीग्रान ॥ अँउर्भर्॥ उठः मिल्यमान क्रिकेट ॥ उँ अभा ध्यश्च याक्रियं ।॥ देविभक्तन विद्राह्मक ॥ उँ अभ क्वा भूवातका भि विमिस्म के भागा विभा देखा। विल्यामार्व गमामिछ। भ मूक् क्या मुख्या दि तिल कृष्य ॥ उँ यार्ष यु या यात्रायात्रातः ॥ शेषिक् या यु त्य दिया ।। एँ यार् गुना अनुराक्यनः॥ जैमार्कराना भरमाक्यनः॥ देखि मुर्नम् मधाराप्य विष् आलाई नक नेत्रा ॥ ज डेब्रान् रस्यना श्रुण्णायाने भिष्ण (भ्रेण)॥ उँ आकान अग्र क्य मिला: श्वारा न श्वा ॥ दिनाशूला में अखदाकान अंशक मिला: श्वारा न सम्रोत (।किन निरम्ताल। ग्यूर्यन जंदन भग्वादिय मिला मिलीत्रान् ॥ र्ष्युक्त)

थाङ्गाक्षेत्र चास्तिशः॥ छ।

व्र नावंशाक्यनं लातर् निकः त्रीरी न त्रा ॥ क्याएत स्वी ॥ देख मिल्ह चरे, नेवी । वाला मस्यापितः । निष्टामार्थे लाक केवा। वेक्षी भर्गमाना भाषा निष्ट त्रधादायि भगा क्य विभिन्न नाजि कर्या कृषा। रेक्ट्र ॥ विष्यमान जिल् यह कर्य द्वार क्रिया व िमिन्यास मिन्यान मेवा। प्रका इस्ति सकान्या हर्या सिक्ट भीवा। हत्या इस्ति स्वा मर्किश्व र्राश्ची वेस्था, चर्ने अवमात्य कार्यक्ष प्रदेश । वामायद्य द्रदेशीय अवम् वृक्षा (जत्मेर म्या नाता रेक भक्षाय माश्वर प्रक्राम (जिल्लामग्राय कार्या मास्र जिल्ला स्मित्र विभेते वर्षे। माएका हात्मांमान जंग, रेक्सर । त्या नया तत्त भे केवी । त्याया न् अग्रास अन्त निष्ठः भावा न अम्।। ए अस्तास्यम् अग्रस् अन्त निष्ठः भावान यम । जै भरंगाकान अगंख अगदा निक्षः भाग न अम ॥ उठः भिष्णाभाविताम मान प्रकृत । जुलावाय लागस्य यागः भारा ब राम ॥ जुलायायं लागस्य यागः भीरी य तता रित्र केरावाची लांखियातः भीरी थ शहा । त्रायास्य प्रायति धर्मे विभागा द्वास निर्देश । त्या येत्राति व राधिय त्रामा त्रामः भन् । यू मेरान व्याग्रयम् । त्राक्षक का विक्रिकास । त्या नवसर्गे गैव्यक सक्तर्भवी । त्रास् न् यक्षीपृष्ठ नाराग्नः भारकने भारत द्राधियम् भारता द्रियम् भारति भारता

प्रानः मार्यन्य म्कार्॥ ७७: इंडाव्हालः अव भार्थरार । जें जाकाताः अन् । वेडि भर भारा भर्मन । ज्यायदा पर्वा । ज्यायदा पर्वा । ज्याय भर्मन ॥ ७७: कुलासानि: अनं रेन्थां भारति।। उँ याला याला यानिशास एक: जाला ता उप कर मानः कर अजायः। मर्गाय मर्गत्य भरोत् ।। उतः अभाविय कृतान भिल्डा भारति भारति ॥ जला इन भृशेषु । उथाया अधिया । उथाया । उथाया । चीयमाः। ए भव्याकानः चीयमाः॥ ७७: म भविन कूने महि भिल्या भवि गारि शाधाका, संसाद ॥ ग्रा २ दुस्य, वर्षावित्रेक लेव, सरा: क्यानक सार्वकार निरा अ उनरेग्ड त्य निवृत् ॥ रेडियत्वन अल्थिए॥ जला माकिलाएआनि क्रूगिए॥ ग्या। भाभाम् द्याग्य भभ तस्त्र वेक्य प्रायाः भाषक। माइ कर्मणः भासवार्य नक्ति नामित काकान विक्रिप्तिक गणा मस्य वास्त्राम्य में में हाम्य ॥ हाला वास्त्रले ल्या जना मण्ड्य महार । जें छी ग्रना चिरि वासान भारत । जें छी ग्रना नेक जरा ज्जः छाद्भूगः अन् कृजाक्षिनामा मारोए। उंधानिता तम छदीयञ्च निर्वात्। ওঁআনিষ: প্রাতি গৃষ্তামিত্যুগর ॥ওঁশৃতারো নো ংতির্মন্তা বেশ্যন্ত তির্ম্ত।।

200

याज्ञार्कन आका विशि:। १॥

अक्षा एला भारमभ महात्मं कला शिक्षित। अने कला परंत्र स हिन्ती, करन তেমাই। যা ভিতারাঁ শত ন: মন্ত মাত যাতি প্রাক্ষণ না । অরু প্রবর্জণ নিতা শতা শত भीवत् ॥ वाजाः भक्षान्य विशिष्टिका शक्षां विश्वितं स्व । जवाः भव्या सिक्षः भन्ति। इत्तं समात्म १३५। रेट मुख्द्र । यंभक सहित्रतः ॥ ४४: ४ (प्रवाकः। निवृत्रक भशामिना यव ह। नशः स्थाएं। स्वारं सिलाय निलाय नि सिल् । उठः । उठः । उठः জে বাজে १ বত বা জিনো ধনেমু বিভাগ অমৃত। ঋতজ্ঞ। অম মধ্য ' শিবত মান্যধ্য'। किन्धारा नामिल प्राप्त शिक्ष ये आधील नियं माला नार्ये का नामिल हो सामिल हो से म भूत्वाय प्रविशक्ति। विभक्तरंश ॥ ७७: ७ आभावाजभ सम्भवा जगभा प्राथमा या सीक्रिया थिन्थरंपाता त्रामा राखे, सिक्धा माक्या त्रिया त्राध्या र्मक्की तं रा भार १ देखिमाञ्चल धमाकिलान वाभावर्शन वार्तिशावशा भकल थाई विश्वेशिया-हिः समासनी केश रेष्मा भाकाषिय केशकीताः सन्वरमः सर् त्रम्पात ॥ ३,१५ प्यस्था प्रायस्था भराः। २०: ात्रा ताशा आक्षर्य कृष्ण लका भाक्षरा वृद्धिन्त्र ॥

उठः मिछान् तिश्वकित्रिए। तम १५ तित्यका म्यारे॥ जलाता कित्यर ॥ आही ग ज्वा थासाला क्यार्॥ जला वा कित्यर्॥ छला थासलाव कुना वस्त्र गि स्माटा ॥ जलावाम दिसानान कूर्याए ॥ यथा। ज क्यान न्छिटाज म मश्वाभ प्तय अपि वित्रापं गांभवी छन्म देखा प्रवण भासि कथीनि जल्म विविद्यागः। पर क्या न हिय आयूर्य बूडी भना शृष्: भणा तथा भड़ी खें या यूषा । ए द सा भारता भनाना भ वि ক্ষেমৎমন্ত্রকা দুতা চিদাক্রজবর্ম। ত অভীকুণ: মথীনাম বিতা জরিতু না শতশ্বা मू जए। । जै श्रुष्ठिन रेत्या वृष्ट्र यवाः श्रुष्ठिनः मूका विश्वविद्याः श्रुष्ठिन सार्का र विश्ववि भिः असिता वृद्यमार्डिक्शाष्ट्र ॥ ० असि ० असि ० असि । देखि खारा मतिए ॥ यद्याना जिछित्थए। ज ला मिक्किन मानिज मिन्याक्राम् रास्ते शकाल्या हमा जिज्ञामिकुले हर्वसम्बक्त गांधांत्रान्त्रम प्रांथाः नाक्ना चार क्या हित्र मा क्रिया मा क्रिया के ।। क्रिय के ।। क्रिया के ।। क्रिया के ।। क्रिय के हिकेक् वर तसीर्विक म गांवामान म मिला नाह कर्मा प्र गांदि मिला काल विकास - ख्रियाभनारा ज्याविकुःभादन भर् कहित्या। रेजिभक्तलण।। जेजिहित्या विकामिना विकू मात्र ॥ रेकि गविः भार्यने याद्व भमानु ॥ उँ एस ॥ रेकि ॥ रेकि ॥

उँउट्भए ॥ खीरालेनाय नहाः॥ अय जातायेन विशि॥ अय वकाम्य भक्ति वाकारन मामला १ व्रि नाहाराने वालि क्रिकेट्॥ ७ मधामा: ॥ यकामला मामला व्यक्ति सिविक कालम क्र भाषा भाजः क्र नमार्दोगपा। क्र निर्वाकियः अन् भूकेर आवामिना जर्भनं कृषा। মূরে আগত বিধিত কালে মামামুল্লিমা প্রশার্তম প্রায়ে:মি দ্বিদিনমারত বেল वादि श्वापना क्रिलो छ हो। अनाविष्ठ अर्व भाभक्तरे पूर्वक विकूलाक आछि शता-ज्ञानाशांत्र ह्याकर् याशांत्र वास्त कार्यक ॥ मिला कल्का ॥ क्षेत्रक मिलक पूर्व प्रक्र क्लाके द्यानाः॥ तक स्था नेबाइ थायं त्रियं लामस्य चलामम यिनाच मार्वित्र मिरानि रेकार् स्थितकरंग्रे ॥ वर गाय भाषाग्रात्मार्थ्य सक्सान त्राक्ष्य व । त्य मुक्तनास्क्र क भाव समी रिक्टि नविहः क्ष्मं: कर्यः ॥ वक नायारं समी ।। भारत समी ।। भारतिम । कि जिला।। विके । भर्मित्र भी याम्य ।। जीवरं ।। सक्विक्य ।। नाम्यात्रं सिन्धिस्य इस्टा भारक रू। भड़कर्मन दिनी छर्मार् उत्हिः क्रनः वर्षयः। यर वाभू त्रव दिनी ।। असू ध्रक्षभी ।। आर्वक्ष ।। भ्रक्षाययं ।। आशाक्ष ।। नाक्षभिन् ।। अयुष्ठ ।। प्रवाद्व ।।

THE STATE OF

ि उन्हार की िCC-0. Mumukshu Bhavan Collection. Digitized by eGangotri

विधाय दिलास्यव छन्यूक विश्वार्य उत्तिः कनेः कर्त्यः। मूर्वितिभक्य ॥-भामान् धकाल्ण धार्ध्यभान् भारामारार्ग जलावाक्षणाता त्राममान धकल्याज्य यय क्र ठाग्नि दिनि विधिना ग्रि अविक्रीम् भाग्नि भेषे पि नम् वृति भर्षामु भूत्रम रात मर्था छ तिसमार्थ अ भामग्रिष्टा जियार्थ भाठीन भूमीठीन स्वांत्राम भाविष्ठित भाषिकार्या मिसिक्क काम मिनु थाउँ कूर्याए ॥ कर्ण आन्त्रनायम एकर कक्षी आस्त्रत क सम्भूका अभि, वार्ने, भेक्, स्रयासक, क कसममस कार्यिक प्रिष्ट क्या आरंभारे वार्यिक कर हांद्र न (देवला: कुक्ष अक्ष अक्ष र्यमादि हाद्र माद्यला:। अक्षेत्र या भायं या व्या लाखलकादि सूर्व लाय निधानात्व दिमकामम् रिकभूषीः जूषी निक्रमणायभाजामिकृता भागमः समगिरवजा किनामायुर्धि विश्विष्य ।। यहां इत्तामा भिं, मान्याप विके, मर्के अव श्रद्ध के विश्व के किन नामा नावायं नाराक किन कार्याम हार्य नेक कार्य माना कि कार्य कार्य के कार कार्य के कार के कार्य के कार कार्य

आश्रायन वालि चिरिः॥७

रखन त्यमं क्र्यार् ॥ आन्यानारान भक्यूक ॥ अत्यनानी भकास्त्रभाव् ॥ उठः भूगात्याक मङ्गिक कत्यन । अकर्तः मक्षायं केवी स्मितिता, प्रमानं क्वारित सिक्कानित वेर्दिनात्त मध्यक आनेत्रात्रीयो क्रमाखीत्वारकः विद्विभाष्यवः क्र्यार् ॥ यङ्गर्विदि क्षाण्या । ५० व्यवः॥ विद्विभाष्यास्त्रवः व्याप्त्रवा मान प्राप्त भरूषभूक भव्यन (काउलाभठार्वः विकू॰भ भूक भाग्राक्षन बूका ॥ भूकाखन धक्रि सम्द्रिक्ति। त्रात्र र्वः लग्नेशंत्रीं । इस् लग्नेशं ॥ त्रांत्र त्रीं । इस्यांत्र ॥ त्रेयः लागांत श्रादा। द्रेय, आशारं ॥ ० शे: श्रिकांत्रत्रीश । द्र्य, श्रिकांत्र ॥ ० र्टियः शे: ज्ञायानावांत्र श्रीत्रा । द्रेय ज्ञाया । बरंग ॥ क्षेत्र भाषा क्षेत्र का स्विति हिस्के का भागभा देवा ॥ क्षेत्र । वित्र भाषा । हेर्द्र । एत्र वः भाषा। रेक्ट्रवः। जेश्वः श्राहा। नेम्श्वः॥ उट्ट्र्वः श्वः श्राहा। हेर्द्र्यः श्वः॥ उथारा प्रवाध्यवः यला विश्व सिंडकां स्थिया अख्या भाउः भाषा ॥ देन विश्वत्य ॥ ३॥ पेन विश्व विद्यात्य व्यथानि म्रायम् अग्रूट यभ्य मा॰भूति श्राम । हेम विकात ॥२॥ युवीनि सम् बिककाश विकृ प्रमुक्ता राजपादाः राजा धर्माति धार्मेत्रीया ॥ हेर् सिकाद ॥० ॥० ॥० प्राक्तः सर्माति य मण्ड याला वृज्यानि माम्यास्य भाषा ॥ देम विकास ॥ ८॥ उँ छि हिस्साः महभा न्यम भमा म শান্তি সূর্য: দিবীব ভশুরাতত খ্বাগ ॥ वैশ বিঞ্চবে ॥ ও॥ ওঁত দ্বিপ্রামো বিপশ্রবো দা र्शिकाः अशिक्षित विकार्य भागा । वेन विकार । । । विकार नेपाशिक्ष ।।। more with the state of the second of the second second

and the second second second second second

March 199

उटः भूद्रव भूत्क्रत नारायने रिलि कुर्याए॥ यथा। ७ अइख्र भीषा भूद्रवः अनुआकः সবহা লা । সহার্য সর্যত সমুত্রা অতা তিঞ্চদুশার্পুল ও নামানারাম্পান্সার ॥ देव नादायनाय ॥ देखि भवर्षव ॥ >॥ उँ सूद्ध व वाराम् भवि थ सुन व वाराण । उन्नाम्ब जाक माता यम्त्र ना जित्रा क्रिउँ नामाना वाय्याय भाषा ॥ वेद ना वाय्याय ॥ य ॥ य मजावान भाषा মহিমা ২ তো কায়া° শচ পুরুষ:। সাধো ২১৮ বিশ্বাপুতারি প্রিপাদ ১৮ মৃত দিরি ওঁ নথো नाताराभारा भारा ॥ रेम नाताराभारा ॥०॥ उँ विभार्क डेसिए भूक्षः भारम रक्षारा उद स्तः। ज्ञा विकार्यकाभए भागना नगत जान ॥ व नता नाता में नता निकार में য় ॥ ৪ ॥ ওঁততো বিরাড় দায়তে বিরাদো ১ অধি পুরুষ:। ম দাতো ১ অতা রিস্তাত পশ্সাদু कि अल्या भूतः उनधाना वायणायश्वादा । देशनावायणाय ॥ ७ ॥ उँ जम्मान्यकार अर्व दुनः भ्रत्य भ्रम् नामः। भक्त सा महत्य वाय्या नात का प्रामा नहत्य वेनत्या नात्राम्नाय श्रादा। रेन् नातारानारा ॥ ७ ॥ उँ ७ भाम्यकार अर्थ दूछ अठः भाभावि यक्ति । क्ना भि यक्तितं जमान्यम् समामकाग्राज्ञ नतमा नातायानाय भाग ॥ रेम्नातायानाय ॥ १ ।। उँ जमा म् न्या १ अफायं स्वाक का चयाम् छः। गावा व् यक्तित् छ आक्ष्राठा १ अपवयं । उनसाना तारंगीर श्रामा । रेम नामाधनारं ॥ ४ ॥ उँ ज यन विश्वि हो क्ये प्रक्ष जान्य प्रवः।

শারায়ণ বালি বিধি॥ ଓ॥

एन प्या र जायन्त भाक्षा अथ्य करा जिनामाना त्रायां भारा। देव गातायां य ॥ न्र ॥ व्रुग्ट स्ट्रिस कर्म : कालिशा करू त्मर्गेत् । मेंग्र हिशस्मात्रीर स्थियों कि शस भामा १६ एए । ज्याना जाजा श्रामा श्री मा भी भी भी विभाग ॥ ३०॥ जुंबर क्षाली २भ भूभभाभी हा हु राजा क रूवः। ऐत जन्भ यदिना महा न्यूदा १ जन ग्छ। ज्याना ना मारा भारा । देन भारामिना ॥ ३३॥ व्रष्ट्या सप्ता साब म्यासाः र्भित्य ६ त्यत्या । प्ताचा श्री र्रेश्व ह्यान् अरु भैगार । ये ये था ग्रेश भागा भी था। क्रियाताराक्षारा ॥ २१॥ ज्याच्या १ व्यास्त्रीय सिन्धः स्नीरक्षण स्त्रः समयक्ष । सहमः वृद्धिन्तः ध्याचा द्या एका प्राय क्ष्य के अक्ष का मार्च ना मार्चा मार्चा भी है। ॥ इस ना या सम् ॥ ३०॥ उं यह सूक्राक्षण क्रिया दियाः यक अन्तुन । व्यक्ता १ अग्र और पा भीक्ष केसाः भावक्रितः। त्यामा याधार्यकातं भीता। इत् वाधारावारं ॥ > ८ ॥ ० महास्थानमं माध्रारं हिः महिस - शिशः कृषा। त्या यम्प्र जनाना । व्यवश्र भूक्षण भारत । वेने क्षा ना वायकारा भारत। हेर नातारानारा॥ २८॥ उँ माल्य माल्यमं देश माति समीनि स्थमा नामन्। ए इनाकः भिर्मितः भ छत्र भव मृद्धं भाषाः असि (न्याः। १० नासा नाताग्नागामाग्रभागः। वेन नाताग्नाग्र।। १८

भूक्षभूक रहाभ भवा छ ॥ ७७: सक्ष्माक भृत्य किया वादि द्वादम नामान क्यों है ॥-यथा ७ (कम वाग्र नमः श्राहाभा यथा लिअ कामः ॥ ७ नाहाग्र नमः श्राहा ॥ २॥ ७ धास्वाग् ॥ ७। - ऍल्गारिकारा अ ।। ए विकल्य ।। ए। ए अर्थु भूकारा ।। ।। ए छिरिकारा ।। १। ए वार नाय ।। ए ।। ए जी शत्राय ।। न ।। ए क्षीरकनाय ।। २०।। ए माजनायाय ।। १३।। व मालाम्ताय ।। ३१।। रेक का विभाना द्वा भागाया द्वा ॥ १०॥ कुक भारक भूक्य भद्ध सेना मि द्वामण नाया :-रम्भ° कूर्यार ॥ यथा ॥ उँ अक्षर्यनाय नभः भाषा ॥ २॥ वव उँ वास्त्राय ।॥ २॥ उँ सङ्ग्राय ।॥ ७॥ उँ वार्यसङ्गर्ग ।। ८१। उँ भूकत्वाउमार्ग ।। ७॥ उँ वार्याक्ष प्रारंग ।। ७॥ उँ नाक्षारंग ।। ०॥ ज्ञक्रकारा ।। ।। ज्ञाद्वारा ।। ।। ज्राद्वारा ।। ।। ज्रारा ।।। ज्रारा ।। ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रा ।। ज्रारा ।। ज्रा ।। ज्रारा ।। ज्रा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रा ।। ज्रारा ।। ज्रारा ।। ज्रा ।। श्राशा ॥ २२॥ उँ अग्रत्य श्रिष्टि कृत्व श्राशा । श्रिष्टिक्वामि अभस (स्थ अभाग्य ॥ ११ ॥-्र : भून विक्र भे म्हा ॥ भूरका करीं जा ॥ उभर्य भी की भर्ति । ज्या नाराये भी रा अस्य आवादवाभाव्य क्रमभभर्मना सु भवाविक, भ में के ॥ लाश्चिम ॥ तू पांधारी পায় বিশ্ববে বাসুদেবায় ধীমাবি "তন্নো বিষ্ণু: প্রভোদ্যাও ॥ওঁ বিশুবে বৃদ্যক্ত সমার্শ্যামিশ্ব हा॥ वेका अध्यक्ष मेखा ॥ जाजा द्रेज त्याक्षणे भागाभन स्ट्रिकाल भागाभी विकाय वेभा वाला भयाने याभी जि विलि म्मार ॥ नंभ मुख ७ विभ्रम ॥ जिला यागार ग येने या भागी व वा मूर्

प्राथमायं यय:॥ १॥ याथायं देष्याल ॥ १। माद्यसंस्थाल ॥ ०॥ विकार स्वाप्त संस्था प्रस्ति । विकार स्वाप्त स्वाप्त

ारिक समिलि। हा। विकु समिल। धा। अध्यूम् म समिलिए। छिरि क्रमक्रील ॥ ने॥ यायव क्रमील ॥ अ।। श्रीयव क्रमील ॥ क्रा क्रिक मक्रमिल ॥ ३०॥ मक्रमा क्र भील ॥>>॥ मत्या म्य सम्भीत्। ॥>१॥ ध्यायवादि मञ्चम्यका धृमदीम तिरामादीवाः भूक्रियर्॥ रिक्क्रमत्क्रभेष्ट वे मक्ष्रव्य यापाल हिवंद त् यापायायायात्रात्रात्रा ॥१। याप्रतिय ॥१॥ सर्वेत्री। णा अस्तिक ॥४॥ अस्सवायम ॥६। अस्थाकन ॥७। नाताभन् ॥१॥ अक्रक १०॥ प्रताद्वन ॥० उत्थन्य ॥ २०॥ इति ॥३५ ॥ ज्ञीकृष्ठ द्वानीत्ने छत्त्व उत्यानात्राग्नेग्नयः॥११॥ देन्धायनः वर गम त्र्यभ र्मिनामा क्राचार्य नद्वा ॥ वरम दल वाक्ता य भूक भूक भूक छाज्यान उँ विश्वत्व नयः। विश्व भागन्याभी किर भागना कू भठाते क्यार्थ। उठः छाउतः ठव्यान মত্রলোপার তোজন পার্যাণ্যাধান্য শিল্পান্য বিশিষ্টপার্যমাদি অরু° পার্রবিষ্ণ সার্যা

भावभ्यम् था का ॥ उ भाषिवीत्व भाव काः भिशानः वाक्षनभ्य भूत्य १ भृत १ भृत पृत्र बि श्वारा॥ रेडिअर्क न्नात्यकृष्ट ॥ उँ विस्था र्किमिन शक्ष । रेम विक रिक्टाय विश्वानिम् रियम अभूट अभ्र भा महाला श्राहा॥ हेडि अञ्चाला भूम अभिर्मित्व। उर्व स्त्री गुर्मित्वान भायम्भान ज्युत्र ॥ भास्मर् एक्म्यूर्णिशाया । जाना प्रम देखि सर्स्र का प्राचित्र ॥ ওঁঅতোদেরা অবক্ররো ঘতো বিষ্ণু বিভক্ষ। সৃথিকা° সম্ভখা মতি:॥১॥ ওঁ ইন বিষ্ণু বি हक्षा विश्वापि न्रायम अभूर ध्राय मा अवस्थारा ॥२॥ उँ वीणि सम् विरुक्त य विश्वाणी आ अम्राज्यः। अत्वाधर्धाणिधात्रय्न् ॥७॥ उँ वित्यणः कर्याणि भन्याव यत्वाञ्चवानि व्यअवास्त्र ११ ४ । १० जिम्न त्रियाः व्यवध्य व्यवध्य व्यवध्य अस्य व्यवध्य अस्य व्यवध्य । १८ १। उंडिद्याच्या विभन्न वा जाएरा°भः भगिम्ह विस्था र्यट् भन्म भन् ॥५॥ उँ उद्यम् । उँ उद्दायुः। उँ उदाच्या । उँ ७९ भक्ष । उँ ७९ भक्ष । उँ ७९ भूका र्याः ॥ उँ अनु महत्र छिन् एवं प्रशंग दिनामु में वि पक्ष में पकर का विकास से कि से विकास में विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के मार्जिः॥ क्रु क्रमाम आत्मात्का कि अत्या १ शृक अस दूर्वः भूत्राताम् ॥ रेक्न्याकः प्रत्मए॥ उँ यसार्गने अस र्ति र्काली यसना तुरु । यत्से व त्व गत्त्व अस कर्य अभास्ता॥

हेर्नि भारते ॥ आत्मा इयानामि धार्मा इंजिनाला छस्या धन्य हेनि अठ भारते ॥ धंया ्ठं ठन्द्रभा भगस्या पाछ महत्काः भूत्या १ व्याचाश्वर मू नार्वम् भूत्याद्रित् त्र पायव ॥ रेड भारिष्टा ॥ भागाय आवा रेड्यानिशासने मार्क भागा वृत्ती ध्रीवृत्ति आत्माकि ज्ञितियाहिज्यः। वेजाजिः भाष्यार्थः ॥ अज्यानिवन् भावत्यत्॥ जे ज्या व ते म्रह्मका नारायला र कामयुक । रेकार्षि कात्मा भानियहागा सारतः १। भीनादिक भारेए॥ भूज्राख्यु भूनः उँ ज दुक्ता । भया व भाकि॥ रेज्य त्याद प्रिया । वृष्टाक्षि भूष्ट्राज्या न ला नाम मुमाए।। उउ सिकामा हमगछिषु आभाता माई देनात गायिता भूगभू ई नेवार स म्यान्य भीति कुर्याए॥ आर्या नगा यास्त्र ने मूफ्त विस्त मिक्स निष्ठा ॥ द्वामना विदिश्त पर्वारा म्या राजीः आक्रान वा भवाविकार्तान व्यापिकारियाति॥ अया गार्वा राजी विनि क्रियोर् ॥ यथा आक्राना ठात्त्र व विद्या दिला कि की आद्वारी आह्यू एगा पृष्टा । ठत्रु अन अन् क्षा एव चाग्यान् नर्जनाश्चीर्ण कलान्क भनेषा। एवर् ज्नामा नारायनाय श्वारा ॥ केल कालान्य ममार ॥ ७७: मिल्ल ११ दीवा ॥ ए रक्ताय असमिल शर्राय अंग मिल्य: भाग

उँ भ्रम्भूमन भुकाभिल्।। ७॥ उँ विकिथ भुकाभिल्।। १॥ उँ वायन भुकाभिल्।। ৮॥ उँ श्रीसर् भ्रुक्तिल ॥ २॥ उँ क्रिकिंग भुक्तिलि ॥ २०॥ उँ भाग्र नार्थ भुक्तिलि ॥ २०॥ ज्ञात्मान्त्र अक्षाणित्व ग्रावात जांत क्रिकः श्रावा न श्राम ॥ देखि॥ दूरकमात्म व ॥ उँभक्ष्यंत्र अक्तमिल शुत्रत अंगुः मिलः भारात यथ ॥३॥ यठः वाभूत्व ।॥ १॥ उँ छार म्य गाण ।। जे आर्च का का का हा। जे मूक्तायय का गाए।। जे जारशक्ष का गाए।। पंजविष्ट्र का गाण्यकूष का गाज्यक्राह्म का जिल्लाम् का गाज्य हात का गाज्य व्यक्ति स्वाया क्राया क्राया निकार मी क्रिक्य मिला मिलान সায়জেন দ্যাৎ । যদ্বা ওঁ ভু: মুখা কেশবাদি দ্বাদশক্ষিলে প্রব্রে অয় দিল্ড: ম্বারা न भभ ॥ उँ प्रवः भ्रुश किना वार्ति भारत समिल छ इति ७२० मितः भावा न भभ ॥ १॥ उँ भ्रुतः श्रुशा कि भवादि द्वामम कि जिले ए द्वाव व्या जिला: श्वादा व यथ ॥ कुक्कमान्क पू ॥ वं यू:-अशा अक्कर्यनामि द्वापन क्रिलिल गुरुत्व थए लिए: श्वारा न सम ॥ । ए पूर स्था अक्तर्यना मि द्वाप्य क्रिलि गुरंख अंगे विद्यः श्वादा न मन ॥१॥ १ से स्वः स्वशा मक्ष्मिलामि द्वाप्या क्र जिल गुज़रा अंग जिल्ड: भारा न अभ ॥ भूर: भूरशह रोशांग्रांना के श्विष्ठ भंकि: राजामि हाम्या भू विं दा जिला या वता १ में जिला: भाषा ने भाषा । के कार्य में जिला ने भाराक्षत म्यार्॥ ७७: व विम क्राला नक मुद्रा ॥ ल न स्था ना राग्ने श्री वा न यथा दे जिल्ला भाव मुकाए॥ उठः हिल्डिन् महास्कामिना विकूलभे स्का भूक्षभूत्कन ऋषा विभिर्ताः। नाताराने विता आअठार्य जाभूलम् किना महा। अविद्यावधार्ने पूर्णि । इति भारते क्रिक्ष भगभावा केत्राह । वाला विभक्षारेत । ववः चार्याम्य विसार प्रेयांका वास्त्रावि मास न ्रानि प्रदेश । प्रत्यास्या भाविति भारत्ये वार्तिक देश । प्रति भारति प्रसि भा नष्ठा ॥ अवर्तान् वक्तमान् ध्रमक्तिनी कृषा आकाक्ष ध्रमहरू ॥ यथा नक्त १ न्युक वर्ष भ्रतः भर्तः जान् त्थवरंग् ॥ नाताग्रं निलं नाला भूजिन विक्रुभूषि भाषार्थाग्रं विष म्द्रिशा मेखि नायाराम पाल्यभाष्टाः ॥: १। १। १। १। १। १। १। १। क्यः परम्भायान्त्रान्त्रान्त्र क्षा भूमम्यूका नूकीन । यनायिक्षम् साराम । अमस्म सोसा यत्नाक काशृनि रश्य वालियश्याय मिरिला वा आरोगाः॥ यत्ने भक्तिः भाष्यम्पराश यिति सिकार के दिश्य देखि कि कि । ज्या स्था कि सार् ॥ देखि दोशाये व स्था यह यथ भी ज न्यार्था ठाउन गृहीता नातारान वाल छातामः ॥ अथ हादमादि वा येथा ठात्य भावाधनः॥ ज्यागं भारोगाः । एक क्ष्रक्रेग्रभ क्यावादीना अव मे जिक् राह्म

क देलाय का वाकान प्रक्रमा छ खाल है छाल मा आल (द्राया श्राय अक्षेत्र क्रम अवादाः अभावादाव अर्था जर्वाहः कनः कर्वः॥ यवः भवम अर्था वर्षः कनः कर्यकः॥ भारत्यकी एकं प्रविद्धः कनः कर्यकः॥ भारत् भर एकं विप्रविद्धः कनः कर्याः ॥ यद्या विन्य कामध्या ठार्थात्वे ॥ ज्ञा छक् यस् भिष्ठ ठ्याद्या यास्रनो রিমক্রা। তত: শ্ররুপক্ষেম্তে কেশবার্থে ক্ষণ: ০।। কৃষ্ণপক্ষে বু মণ্কর্পনার্থে ক্ষণ:।। या • ७ ७ ६ • ६ • १० ११ ।। यर दाम विमात्रि भक्त भधात् वाकाना नाष्ट्र ॥ कर्ण राष्ट्रिताहम् भाविष्णाणिः धानानायम प्रमाकालो भाषा श्रीनारायण श्रीकर्ण-वक्षीर्ज्य प्रवादा वा वा श्वर का विष्ण ॥ देखिय करण ॥ माना कल जूल भी कर्म् व भिया प्राचन रावते काम । जिया भाम ध्रकालन कृषा। जाना हम्य भूगे शाहण भाम ध्र कालतामक माष्ट्रा सद्र गृशेषा उर्मादी भाक्षण गर्म भूका जुलभी म्ला अर्ड आनम्भानम्यत् ध्रमन् जानभुद्धाः निजलाध्यामः॥ त्यामीस्भीष्णं जवला भ रोष्ट्र श्रीयम्ध्यः निक्रयद् नयामी जि नयमूर्णा ॥ यव आर्क्स शृका कृषा भन्ता विश्व श्रीयम्थ

उभाविक अक्षभूष्य मण्ड वंगवानाग्राग्लिक भन्मिष्वागाय्यादि काय्या महायुः ममार्थान् अभारामायार्थित ॥ यहा मल्लामहार मुहाकार्य॥ छड: अर्तियु भाटायु भाग्रभामि विभिक्षे स्या आएए कक्ष्रभाविष क भारि।विका शायका त्याका छत्र वेन भन्न भाति विके भावितका भाग के कि भी है कि भ त्रम ॥ चक् व्यवम खर्ष इंस्थाय ॰ भा ॰ न ।। व्यवस्थित ।। व्यव व्यवस्था । यक विश्व के असे कार्या या लात्ने बला सक्यां ॥ जनः क्यां मेरि ॥ क्रिक क्र भारत विभाग देन ॥ देन भवित्र में काम क्षा ॥ उं ज हुक देन मू राक प्रिवा ॥ वकार्मनिमालामि॥ (जादावस् भारित्थेस् भाविसन्यन्त्रान् भावत्यत् ॥ वृत्थिष्र् उ ण्ड्य रेण्यू गर्क प्रिया। उण्डा भागताण्य्या हात्य यू मारिकेथ् । रेक्ट आधु ल मिक्ता व्यामिन वन्न हे भारि । कि स्वतं क्षेत्र कि एक्ता वा वा अन्ति । कि म्यूजन कार्यका ॥ इंडिम्लक्ष्य ॥ वयः प्रवेषम् मत्यका प्रामारां भारतिया वर्ष यह वर्षे वका निर्णित्वण कृषा जन्मत्याला धात्मामति व्यात्मस्क कलमा भन्नाक ज्य मञ्जादि अर्वाजिर्था नि जार्राश्वा मूक्सभूत्यन छक्ठ थियंशकाग् नध हेळात्वन त्याङ् लामहादि त्यार्छ ७०

भाय निर्शामध्या त्याकभर्म् स्टिक म्याक त्याक त्याक स्थीयाभाषां एक वेक भ्राक क किन्ता ॥ उद्यक्भः ॥ लगकः भत्रभुकाशास्त्रम ते त्रधानः । अन् अध्ययानाता इ आका मासा गास वर्षि भवान् गमिन् श्राष्ठिक श्राष्ठिको भाक्षाति गमा नग नाउ दूर्वस विकथुलान भाजायः भूक्षः भाक नियं आयु स्थित नियं भावि विकेति यम भाव भावि भावा क्रक्र तर्रक्षम्यान ए अर्थ भीमला वा आओ लाक द्रायव लाक भाउन्या योगा स्थीएउ यम् वाक्षिय स्थान वाक्षिक भूष्यान वाक्षिकिष्ण ॥ रेक न्वाक लावः॥ श्रीषा आहारः न्यराज जीस्मादा भूर्यः। शिक्षामाद ग्रिलह स्वा भूष्य भूज्य शिवि व्यक्षम देखि। - क्रिमानन्त्रमधीया अवि ध्वार्मार्भाष्ट्र ध्वार्माणकः ॥ आमित्के इटिको विल्वेः जाभरें भृषिरी भकी विजय भूषेभार् ॥ अयाका भाज्य थाननः। ल ए नंज भाजू कः जानमाः। भ पाका भन्क गक्तिणाभागमः। त्याविश्रम हाकाभ क्षम । त्व ता भव भन्क गन्नकानाभानन्। । अ अका दिव गन्नकानाभाननः । त्यावि ग्रंभ ठाकाभन्वभा लिय भाउ प्रतास्कानीयम् ।। अ यकः विवृता हिं लाका नायानम्। त्याविय्य - ठाकाभ रुज्या रज रप गाज मित्रू भी हिंदालाका नामानमाः॥ अ यक आजान जाना दिशानी

भानमः॥ त्याचित्रभा जाकाय र्डभः॥ खरा भाउ॰ भाजाव जावा॰ त्वावाभवनाः॥ भ नकः कर्म दिवायाः (दिवयामानयः ॥ त्य कर्मालयान वि गति ॥ त्याचित्रभा ठाकाम व ज्या । जाता भावः कर्या त्याया त्यायायाययाः ॥ भ वका त्यायायाययः। त्यावियम धाथात इवका ॥ एण अवः प्रायाधायमाः॥ अ चक इन्स्यायमः। ज्यास्य प्रका म इंद्रिक्त ॥ प्रत्याक क्रिक्का मान्या मान्या र व्याप्त मान क्षा व्याप्त मान का काभ इंडिश्न । (व रा अब् रैर्थाव याग्याः ॥ अ चका स्वाचित्रम शकार रेबेश । प्रण पक त्रसा ठाक याययाः ॥ भवाष्य रेस्थ व्याययः॥ स्मित् त्रा अवसात्र बेक्या। य त न्यांत, जैकाखा त न्यानावात्रात्राता ॥ यवथः। य त ववः हिर ॥ लामाधासार जिला ॥ चेवमचेमां माळाच में च्या स्थान ॥ चेव व्यानमां मा क्यानम्भाक्तमः ।। चलकाता भग्ने कालायभूभभः कामान ॥ चलः विलायभग आवाधनी काम क्याय ॥ यक्याय माने प्राध्याय में काम क्याय ॥ यह एक से प्राध्या ज्वित ॥ याजावात्म विकर्तत अवाष्ण भवसाभर्। आवस् प्रकला विहात ॥ व विख हिर्ड x ह त्याह ॥ यड ॰ द्याद य उ ना छि सह भा श्वा कहर ॥ कि सह १ भा शामा आ क

মবর্ণমাত ॥ ম য এবং হিদ্ধানেতে আজান ঃস্পূর্ণতে ॥ উতে হোরে প্র এতে আজার भ्रम्प्रेल ॥राद राद ॥ रेक्स मानिष्ट ॥ रेक्स्यू वाक थ जिल्ला ॥ यहि कीर्यन मूतः भर्न भर्क गेक के रेखे। वर धार्त जीय श्रह्मात ये मीक ध्या से वे क्षाण के রা শিক্তারি বন্ধ ডি: সর্ধৃত্বা প্রার্থি ।। ত আনন মারন্দরণ প্রামরণ জানমুর या निस्ता शर्मा । त्यापिस श्रीका जरावारा दिया सीयम्प्रक निसंभरं जमारि॥ उँ एक वका एक विक एक वर्षवा भार श्वाः॥ एक प्राः भव्यक उत्मे भी एव विचया।॥ क्यापि भारते हिंपा शिर्य राष्ट्रिक नमभूता एकं रिस र्ख भाषमा मस प्रा जमा क्या क्यार्यस्थात्रेन गृहीगार ॥ ज्यमद्यः॥ व्यार्यमामून मर्स भाग यानामान अला भारत म्क किय° अ° भारत क्रमजा भारत ॥ भ्र्यादि कामया गास्त्र ॥ त्याक्र ने भारत भारत अ दीलयः त्यायादवयः । यावाः नातम्यक् वियः भ्यालोय अवस्व मिलि गृतीगार्। जान स्न: धन्य जान ना अम्बिनामिति श्वाक्षियो अन्यान मूतः अत जाने नू वक कार्यकारा न्या के किया मूक्त्र वा मूक्षीय ॥ वेष ॥ वयः आस्य मर्म म्या ता की स्था आह व्याक्षात्रक्रिक्षि ॥ व्याक्रमाभाभवमाशाध्यः ॥ व्याक्ष्णक्षेत्रवे क्ष्णवाध्य छिवासव।।

नावारान वर्ष्टि जारायाः॥ > G ग्रान्मः॥ त्याविग्रंभः अकाभव्छभः॥ खरा नाउ॰ भाजावजावा॰ त्यावाभवनाः॥ भ TR. 1594 TATAL TETETET ON TO SELVE - STO

वायांग्रंगं विल जिलामः । १० ॥

क्ण कराना मारको यथा मारक यजीन् यथा मारिक वास्त्राना हूस मान मास्ताना म्रास्त्र मसामिल्य अर्थ (आप्राय ।। देलियाग्य अत्यान् आक्रायान् गृहील आराध्य अ रामा । वेखि ॥ भा भा

भगगार भगार किथि दूरायामि निर्मा । । । । । ।

मण शहन आत्यला छाउदा द्वा गळालि। छाउद्य पित्या कार्य कार्या केरहा दि ्शिः॥।। अवभ्राय्यं श्रीयायाः श्रीमत्या वृति। श्रीक्षिकात् क्रिकार्य क्रिकार्य क्रार्थि।।र - नाम ताम्य अभिन्न समा वभा यथं संकाता ग्रीता म्स्मिभन्न नाम तात्वाल्यन्यत्वन

विग्रमान जाकक वसारि जाकि विष्या के शिक्षक शिक्षक ।।।

ठव्रासिधाना जिक्नुना फाडितम् भूजामिछिः । वकामाना १द्विकर्पक साम् । जिना प्रामिन ।।।।।। मयर ॥ यत्का मिक्ट जल जिल्ह शाल्मे ठ त्था अविक्या ॥ य क्रेकेर भार्किभर यानु क्षीर्छः मार्य्यात्।। ४॥ म्लामः ॥ प्रहीठकक ध्रम्द् ध्रत्येपु वर्षकः॥ द्वा जला विकिष्ण अव्यक्ष का अकीत्रां ।। ।। अमिल्यामि ते विका अतिका भारति ।। ना अचार ॥ अवंत्यका ना ना स्थान सामान सामान ।। अयसः ।।

कुर्मीय भारति। वाक निकास वामिन्यिभाः॥ मिद्य याक जनः कुर्माद्वी आह भारत होत्र ॥ ४॥ याल भी दा लाख मुल्ली उम्म रा भारत वा भारत ॥ भारत सिला दिला सा स वाका मिले क वा जवि ॥ वा अहात्म् ॥ ठलुर्णिवा स्था भारत हुआ विसा भावाराणेः। वकम्खी विम्छी वा अर्क अञ्च विवर्षिणः॥ २०॥ वकाम्ला द्रिश्यात्स यद्वाष्ट्र स्वाप्त्र विवर्षि॥ भार्कणेन विधालन আङ्ग क्रेफी शक्तित्यः॥»॥ नातायन विष् कृषा भार्कन आङ्ग आठत्त्।॥ প্রতাকে দ্রশিক প্রান্ধে তীর্থেপু শি মহালথে ॥২।॥ अश्वस्त्र নাম গোহেল প্রান্ধকালেপু নিত্ত শ:॥ - अक्यामि ॥ अभुम्न बाद्य तार्थि ने भार्यति ज्ञान्ति । ७० कथा प्रज्ञान्यः पूर्ण द्वता म्या दित जिता ॥ २०॥ अथ वाखा खता खाडि भव भा त्या कुम कुछः॥ अक्का द्व भा देत दित वि ल्यान्ताः धकीरिंजाः ॥ २४॥ देन भूशानि फार्नि कर्यक भारति भारति भारति अभूक्त नाम लात्ये कृत्ये यः॥ निकापिकार्यक उर्णार्यन वास्त्र भावा उत्राचा गत्रभाव्यक्तयः । भार्यस्त्रिक-क्रका विल्याद्वाः॥ न भूक्त्व वा प्रविभाष्ठका विलयप्ताः॥ अवर भाष्क्र याखाभवीववा॥ যবাস্ত ভিশারে।। প্রকল্ফার্দি শিশুদানার মগ্রোকরণ বর্জ দেবশাদ্ধবদ্ বিকৃত মিভিবিশাঞ্।। ययः॥ यकाम्ला र द्विकर्षका नातायन विन्धितः। भाकाम्यन छवित भार्यन आक्ष्मायक्ष्य ॥ अड॥ लिशायनामेनको अर्ककामला आर भार्कने क विशेष्ठ ॥ नातायनं विल माम करिका द्वाप

ला र्वि ॥ अय गारायन वालि भार्यना आकृत्मा त्रक मित्रान् क्षान भारक वकामला द्वामला वा द्वी विकाल विकल्मः॥ नारामंत विल् रेखी नार्यल चास्र नाकायियं । नार्याते विल् रेखे छिक्षानं ।। भाका अत्रात् ने विषय वाकार ॥ काल व्यक्त क्रिक्ष कर्ष के खर्भार्य ने आक्र ম দৈবন্ত্রেন তেনেক কালত্বাদেক পাকেন পাকান্তরেল বা তন্তেলা নুঞান মিতি বিশেষ: গ-मिनाक्षमन ज्याः कर्मने भाक्ष क्रियकाम्ला भाक्षने ज्ञामला भाक्षांमने वालः॥ जिस्न अव-यक् সাকের সাকরেরে বা আরাধন ॥ অসং তরে হারোদ্দা বেন্তি তেন: ॥ ওত: প্রতি মাসং মৃত - जिल्लो आयाशन ॥ यदः भवरभवास भेव शिला थाए।। बना प्रम् गार्थ भारत भारति भेरति व वान्य भारत्वेन विक मुक्त ॥ साल के सालियाय के द्रिकाम् वास्य पूर्व मेल ॥ ज्यार्थः॥ यालोभारत वामन स्वर्क ७० भाराः म्यानितिः कार्यः॥ जव यका दाना दानि विश्विकाल भार्तिन याक जलोव विश्विक काल विश्व भूजन नाराय्न वालः ॥ छउः भारा भाभे मेळ के ठकारा नारा लिए र हाम मा हि ठारा धन बिंडि कि छिए ॥ ७० मेडि भाभभा वाधनत्यव न भार्यने भाषिक हो वि वि वाकाल्यां के वि विश्व मिल के भार्यन वरं वर्षन तर माथालियं भारा हात जात मेल में कि में द्या में के क्रा के प्राथम वर्षण विधानाए ॥ ७०० मूर्यामेनात्यत जान्यायक भूथक वात्व भूव ग्रहणाए ॥ निकामेनाक

आताश्वाध्य ॥ अभूय गां भारक व्र खाजद निकादित भूग क दिव भार सकाति भा कींन मार्कनेशमि उवनि किहिए ॥ अधिकाम्ला रिन्न मूर्कशमृत्र नाश्वाणाधादायन পিত্রাকৃদ্দেশক প্রাথিক পার্বেণ ধর্মক আরু কার্যণ ॥ তিথাদি শ্রবণাত্তে এক্ষাতৃত্বত প্রবো মৃত দিনা র ত্রেকাদশে বারি সিতু: ময়ন্ত নাম শোলোল্লে থেন করিছা মাণ মর্ক माह्माद्ममण उर् फिर्कण भार्मणे माइ कितिहा ने दिला शः॥ अकल्म अवसायग्री वाचा शिल यथ वह वार् ॥ अभुन्न वाभ तात्वि लक्षां अमूळाख त् वह वत्थ्य भे कल्ला भूले ॥ বতরদ বিকৃত প্রত্যক্ত হর্ষে কৃতেরের তিল তর্পনির তর্প প্রয়াসি মিদ্ধি:॥ এ প বে হারি প্রক্রক্ষরিধায়ক বছনাতাবাং॥ দ্বাদ্শে হরি নারায়ণ বলি:॥ ডংপ্রকার্মার - तिथाय्वः ॥ नातायणे विला अध्यक्ष कर्णका द्वाम्ला दिन । कृष्या वित्थवार्थता सूष्टा भाग् म कार्याययार्ग ॥ आत्मो ब्रुष्टा कू जायह या कार्वितः भभा वितः ॥ ४७॥ यजीन गूर्विभान मायून् वा निमक् द्वादमा वदान् ॥ अचार्ट गस म्स्मात्म मार्के द्वादमानामाछः॥ ३१॥ भाषाक रहा नात्रत्र मिकिशो थे नियमराए ॥ याग मुना हिस्ता के भाषा भाभी किल क्रिय ।। उपना रिक्रुं धणा ज्या च्या व्या माना के नह रिक्षान ।। नमार भूत्र भूत्रं न्य अभ न्यामिक°क भाए॥ २०॥ वस्ताल के त्र को मित्र थे भारत अनामराए ॥ डेकि थे-

1611 orannomme In

माज्ञिक्षा प्रमा मर्जानाशीर्य एउला ॥२०॥ पूर्वः भ्रः भ्रशायूके स्टिस म्माक्ति वर्ग। - व्यम्बर्गित्र सर्वात्र वास्त्रायं माद्रम्य ह ॥१३॥ यहरूल लायात त्व यः दाताति यातः किया । रेजि॥ त्यांचक मा त्यांचरका र्व ध्वक्यांचे वासायने वालि प्राय ॥ १२॥ ठात्याना इन्कार अर्था हा अने विक्यान कि ॥ में कि या वह मार्थिय वह अर्थिय में वि कार्यकारा विकार ।। रहा। यवीया व्यासिया मूर्या भव्यक्ष (याक्षर्या किली ।। न्त्रकाम अधार्या अपना राष्ट्र कार्या ।। श्राम्या अराल हात्य मार्थ व्यानिक स्य गार्ड ॥ त्रेक्य क्षा विकृ धूजारि काक्षि वाक्षा छ जाला व्यविष्ठ शिद्धः भूत्रम्स र्यक्षित त्रकेष्ट, जाग्रं म, देवा क्ष्यं जाक्षरीत एक प्राप्त श्रीतंत्र पात्रात्त स्रेते क्ष्यं कामना विद्यान् अ व्याका ले लव द्वाममा जिल्हान मुकार ॥ क्षा किक की शायन क्ष्णामार् ॥ हारमाप्रमेळ काला मन्त्र धारमार्थः कुरामुन कालः ग-त्वय कि रेष्: प्रांताला विवरीयमा ज्यवा ठाकार स्वर न्याः न्यायास् यात कान्-भाशी अभन्तर प्रशासि। विलाश: ॥ यथः ॥ द्रभाष भूखः प्रथाए भार्सने भिन्य यह वर्ष। भारा प्रशासिक प्रमार्थने भिन्य यह वर्ष।

ठक् द्रुवाय मूल्यन लोक्षणे कु स्थाउमा । कमराये नीया छ नाया ई द्रुया उथा ११। दालम्य वाक्षणेन् लाज विद्वार्थ वू महा म्या मार्क नाक करावामाः क्रक मक्षर्यनाम्यः ॥१४॥ यव कृत्व विधात्वन भावाग्रेगे वलो हिषः॥ विश्व लाक भवात्माचि स्कत्व नायभ्रभगः॥ रह॥ के।। अथ द्वाम्ला र्ड्डियाद्वन वाठावाउए छकादाः नागव्यातः॥ দ্বাদশা বে যতানা থ পারাধন মতা ভরে ॥ শ্রীয়ের ভদ্যরে কৈব সর্যেন্টি মুর ভত্যা ॥৬০॥ শরাৎশর প্ররু থের কেশবাদীন স্বনাম তি:।। প্রকার্থে ততুরো বিপ্রার কেশবাদীন সুশতি ्रा।७३॥ अ॰ भूक व्याप्तान् स्त्रः ।अभ्य कक्ष्नामिष्ठः। मामकाअथ वा सासुः अभ्यागातास्य ठ ्त्र ॥ रेखि भृजात् रठि ठकादार रकाष्ट्र माजा क्राक्षिकास्त्र प्राच्या प्राचित्रास्त्र क्रिक्ति प्राक्षिम् स्व वष्ट्यार ॥ अर्थल ठव्र रेडि छक् सम् कार्टि नामासमार्थ सिंहिनामासम ठव्र रेडि सिंहिना यास्य त्यात्केक ने । एक भारत्य एक इं ने वा ॥ आक्ष मालक एक एक प्राप्त कि के प्राप्त कि के विकार में दिनी त्यं ठकातं देखित्यमः। छक्षयात्व भंतार्भत्यं प्रति विश्याती विश्वत्म धदाठार्थ छत्वीति न्याधरह। किमानामीत् अवः अङ्ग कृष्क भक्षिणा दिकान ने । कन्या अर्थाद भी कर्येक ये ये अन्यात व विक्तः श्रक्रिक भोताने नामान्य उत्यक्त प्राणाम पूकः॥ अनिकृति যতে: প্রাে যদি মু লিত্ নাশন ॥ ধৃত্বাতু বলন মাত্বা শ্রহ্মান্তা যভি সংক্রিয়ামিতি পিতৃ

> 00

त्यथ मङ्गार्ड अ अग्रेड वात्का अय ममभग शिकार्त्र भाय मत्रजार ॥ अशिकार्त्र भ भामकः কুজ্বা তরপ পদান ত বিধবায়া: সধবায়া: শর কুজ্বতরপ মিতি বিলেয়:॥ অসাক্রিকৃষ্ট म्यामि विसरा विलायः॥ निर्णाभ मङ्गलो ॥ अभिन्न कृष्टे लहर मूयः भिन्न वार्याः भिष् खना । यह रवृष्टि विस्थ ।। भ्राष्ट्रा वानन पूर्व थे खद्भाष्णान् जनवस्ता। म्नाका भाव कूर्ण পু নারায়ণ বালি ভত ইতি॥ অস্টার্য: ॥ দেশান্তর গত: দ্র্যো প্রস্কী হত্তস্য শিতু: মির্দ্ধি वार्जा॰ अप्या वामन म् वर्षक आया आठात आरडि म्यानामि द्या दान भ विकृष्ण कृषा यकाम्ला व्यार्खनामि आर्चिक्छ यदाचिक्व क्यारि॥ इन क क्राया क्ष भूति यदान। सक् व्यक्त जू ত জুবলে বসার প্রার দূজনাদ্ বিকৃত ॥ তঘ দ্বিতীয় দিন মার্থ্য নারায়ণ বিলি কালাদ্ र्वाम यमि खुकू मनाधा भाज अमा जव्येय वातायण वाना कृषा । यकाम्ला र द्वि भार्कने क्षाम्ला १ व्लाया शाया विषि ॥ देन भूय व्येष ॥ न श्रायादः ॥ जहा तक भूनः भूष प्रदर्भाए ॥-भूकाधिकारित्वता भगि उर्राज ॥ भूय भर्मा रिकार्य भारता भणक कृष्वामिषि भूशि छित्रकः॥ वर्षेत्रक्तिः रूपः मूर्यक्षित्रहारः॥ अन्यव्यथमञ्ज्ञानिया॥ एया रू ॥ ्रालोठ° न ठ लाक भा तांचिताल यत्वेश्ल ॥ मृत्यू मृजाि कि कार्य भूक्षार्थ भा जीव्यू छि:॥

उँ श्रीयव्यवसः॥ उँ श्री गलनाय नयः॥ अथा अज्ञात्रीना अनुस्राले सङ्गाति विकास ॥ चावकेलांत मिक: भोषेत, जांच अम्यवं: भोषंत्र केवी जालाग्रामार काणांव. वेवी।।-उँ देशिको जिल्हा तासिन देशिको सूक्ताउम । देशिको कमनाका खेला का महान क्र ॥॥ विलाका टिक्क ध्रामि त्व श्रीनाथ वित्रम उवम् क्रिये । खाड: अध्यार তব প্রীযার্থ প্রীবিষ্ণু র্যামা মর্বর্থ থিয়ে। শ্রী বিষ্ণু র্যামা মর্বর্থ মান শ্রীনাথ বিঞ্জে ন হরেন্ত রাকান । সময় ভির্ক্ষার কলি ভামাদ্র গা নিমামার অবক্ত প্রন্ ॥१॥ ওঁ মমুদ্রবলয়ে पित्र प्रक्रिक स्थित विकित्र विकित्र विकार कारिकाम्, क्रित्र ।।।।। अहिम ज्ञाजा एक किन्द्रार्यका नमभूक ॥ त्योठ पर्वे धारमादिक क्षा ॥ त्योठ घर्षः ॥ जें देखिकी यः সুরা সর্বে মঞ্চরাক্ষম অল্পণা ময় মূহ দুরিসার্থ স্থার দেহি বাসুকরে ॥য়॥ দন্ত হার্বর ॥ वें आरे किल जत्मार्किक भाजा मधू रामूनि ठ इंक भाजा के काशा के जत्मा विक् रामे माना ॥ क्षिमत्यन रखिशायम् कृति॥ तत्तात्मे क्षिन् अति कार्य कार्य सकान्ताष्ट्रम । त्र सानाग्राम कृति॥ १० त्या ल्या मक् माला विके क्षिर भेराक, विरक्षेतः। म चव हवरंपकान असासी याव म्यू आंता करिका

भूग इत्न जन्म कर्म विवादन कान विवाप विधाप विद्या माना प्रक नाता प्रक भी रेषि भरिषा धराशिविभूत्य भूग्रायत्ञ्चले फल्प विभक्ष यूगे विशास खानत्व कामना वार् फल्पन फल्प वि भक्त । ज्ञान्त्रम् १० कृषा ज्रम्क्वाला विवादः भृष्ठिकालामः कृषा अवर्गद्रवग्रः निमक् । সানবের শক্রপুত্ররা বন্ধবন্ধ পুনা কলে বাছুপুলস্থা অভিন্দ্রিভি: ফিকেনের বার এয়মান্ত किक आर्थ्याणा दिशायम भागत्म जिलंक क्रमें में में में के समान ने कर में प्राणित कर में एत हिलक, विशान ज्ञाना नाम के देवी वू इक्षित्रसमस्यन वार संग्रे में केत् वू लाखा प्रसं मस् । जें याके त्वर भक्त । जेंभक् थान्त्रम् यक । जें रेखि बील क्षिर्भागित्र ॥ ७० केमभ शत्र भूमा सम्मा । जाजा मता ब्लामित क्र्यार ।। स्थाय अर्थ भी सा रेडि मत्स्र भी भागागर।। दिखः उँ देखि भारता मियाय दार्मशा नत्यभूला दादनाशा समित्राए ॥ नत्य लाएं व १० द्राष्ट्रां जस्यया वृं देखि मास्त्रने मत्त्रायाक वायंत्र, मन्दर्भेक्रा वायं गंत, त्यान नेत्र गंता ने प्रथा में प्राचार मेंत्र भूलमर्थातः भक्षमिन् भक्षभक्षां चिलि सिलः ज्वातम् कर्णाः । म्लाभात्य गत्रक्षकः म् मार्क वार्वायक अभनां व मृत्यक प्राप्त प्रता अयक प्रता निवा क्रिक्त । ने विन्द्याला

ত্রঞ্চ করা ॥ ওঁ ইরিশ্বাদ্যান্তি গল্পেন হার্ম বন্দর প্রমান বিধার:। ওতো বন্ধা বিশ্বাদ্য कृषा आगाराय के विशय शाननाश अने वाल मिल असिल अस्पना यूका स्वत्रम्म अन्य सिलियोर्ड केक नामार्थनं मत्तासा त्यात्रा वस्तात्रा वस्तिक प्राम्त्रीयक मत्त्रीक प्रमित्रस्त्रीयार्थशाना नाम मक्सान्ता प्रमा खिलय, रेखी माबारीशार्च विश्वारं विर्वित्र क्रिक् गत्न गत्नि गत्न मार्थिए यम म्हिमान्त्रेश। मायसिक् । यमकः । यह म्हिमारं । म्यादिमान्त्रेश शासंग्रह ॥ त्या प्रधान्येश्वा आक्शन स्नामाशास्त्रा विकारं। लक्ष्यात्र क्रिक्यात्रा क्रिक्ट्॥ मगाठ्ने स्वाद्यात्रात्र लक्ष्रिक आ नमः। १ द्वाः प्राप्ताणाकाता जन्मनी जा नधः। १ वेशः भूगोत्वात भक्षमाना नभः॥ उर्द्राः भः अकार्यात अवाधिकाना वयः॥ उ कावानात कविनेजान्यः॥ उ अनानात क्षेत्रका र्रिक्राच्याः पद्मः॥ चवः अर्गास्य ॥०० र्रेश्वास्य ॥००० र्रिक्रास्य ॥ विका अस्वारिकामः रेक्ष ॥ यू ज्ञानवकाणिक्या ज्ञाना अस्वतंत्रमः। ध्यवित्र ॥ श्रीका भागंका स्वी द्रमः अवधः॥ इदि व्यवधानात्ववार्यवधः॥ दक्ति। क्रिल क्रिल विद्या वधः॥ वाग के एक दे, आक्ष राज्यतः। त्रक्याक्ष में, कि विवाद्यांत्र नद्यः ॥ विवाद्यक्षित् व्याक्ष्यकि विव

absorbant abilities a sale that

The state of the second second to the second second

त्यामः॥ जलाकानः॥ अं विकृष्णाम् कितीराभम् वन्य नम् कल्म शासां म्ताख्वि त्यानी पृष्ठः भ्रवाका भनिकत् भश्रद्धणाशिक्तित्र १ दक्षिय ठक मञ्गायुक् गप्यथल भेक कोलायवामा विकार्यम् भूकिक्त कर्भन्य नाम्म भाग्न नामा भारति ।। रेडिकाया ॥ जलार्म न्या अस्रे एउ गड व्याका मेलायत वारं तरं, । चर, त्र, य, थ, थ, ल, लालमच्ने वारं तरं, लिएक । , वयः त्र थारं न वारं यतं, क्रिम् क्रिकार ॥ व्याख्यात्यम् अर्क स्कायर क्रिकार ॥ सालाग्राम व्यक्तमा क्रिकारमे क्रिका कायाकि भमाकत ॥ विव लाक्स क्रांस अंच अंचा नेस्स नम् नम् हाकाक क्रोक्सा नाधियातई শ্রে বস্ত্র বিধায় দ্বান বিধায় দ্বানশয়া প্রণবাতি মান্ত্রিত দলেন বস্ত্রমতি হিচ্চ প্রবর্গি দ্যাত र्मा कुर्याए प्रस्वर ॥ छक्: अय किकी वस्त विशय घारे गार्कि किला मुक्की व ॥ ११:॥ ्ठाः कुमाना प्रत्न भिद्रा ॥ उँवाभी मामाः भूभन्यः धर्मा थाना भूभक्ता । य नद्रा कृष्ठ क्रवाः भू सु नमामि माजानन ॥ य क्याग्राग्र धर विक् मानिवर् छत्र्वंष धमन वमन भारार मक् विद्या भारत । जैस्त्रमुडी नय स्ट्रेंड प्रतिकास सिमित । विमार से कितिकासि भिहिने वर्ष अमा ॥ उं अरु र्वका अरु विष्टू अं क र्मा वा अह् अर् । अक्रवि वा वे अक्ष विषय शे अर्वा शे वार्व

- animination - 1 41/21 1 | 9 an 1

तम् अमन्य वामक, आप्रक कर जैंच नया भया क वाम अस. पारे सर मर्गिय वा भीच्या भाग्य निका मानकारा प्राक्ति प्राक्ति प्राथ वार्ष प्राथ वार्ष मिका वार्षिक कात्रभन्यभाभाष्ट्रस्त्रे अञ्चणभागला भि ॥ ४ जात्री निव आला विकूथला यक्षा अकामाणिः। जाता वाम्छोः नाकिन्छ ज्वः शक्षे भहामतः। जला वामः मकत्वेत तमेष् भमा छिशः भाषः। तमाविना स्वामः मन्त्रद्भक्तत्रठार्य यव ठ । जा क्षेत्रामिकालायू भण्याति । अग्न देशान् ॥ उत्यादकामि का वक्षायमा अभ्यमं पर्वका वन्न अविका नाम राक्यः। वहः आयम महिक्येर ॥ प्रमिति-विया कृतालाका त्मिति वि विकृत्यक्ता । विकि धारायं भाग निक प्रिय प्रस् ठामन ॥ विकास ক্র অত্তা অত্তাতুরিশ জিতা:। তেত্তা বিশ্ব কর্ণার মে প্রজ্ঞ নিরাজ্যা॥ ওঁতাসমন্তিতু তারি পিশাতা মর্কভোদিশ । ভেষামান্ট বিরোধের প্রস্কৃতর্ম সমার তে ॥ওঁ পদ্মামনায় নম:॥ ने जा आरत में भूष्म गांक्षा मत्त्रत्व । अथवा आध्यक जल्यत भू जांग्रेट । रेखि आअत स्विद्ध कूर्याट ॥ मित्रामि उँ यक्तादिशक्तानभः। प्रक्रिनेभूत्व गण्यान प्राच-पाउत्य नभः। नामभूत्व द्रव्यात्येनभः। पिकिलेका त्रित के एक्य ज्ञालाय तथः। वासका न् विस्थित्र स्थाल व्या जा लो ज्ञाला त्र नमः। क्रिनिकाकी विन्या ज्ञिनश्राद् ॥ २०: ज्ञानायण केवाकीत्म वृथ्वंतं त्रें वरं ज्ञाना ज्ञाना ।।

मान्यथा अलव जल्मने मक्ति नाभ या वाम् विराण । यव वामनाभगावार् वंग कूर्या । उठः भ निर्वित कर्तानाधन भया गाम राख कूर्मुतारिधानि तक्ताल भव मक्त राख । मून राध मुक्षे कूर्मु ्यारिमान्यसाम्, तर्, रक्षरम रेएक । जर्, मान् यसिमा यसिनाम । जर, रेएक । जर, रेएम यक्षाल्यान्यानुगानु । यव ७० न्यक्षा प्रदेशिशाल मार् करीकाल मनमा प्रमा क्रिक्श ववः सम्पत्र भक्तामि सकारं विशां वर् सामाग्रामः विशां सम्पत्य कानक नगः केन्द्र । विशः स भावन वाम रसामुक्रमारुणः नाकिलरसामुक्षे मार्चन धलवनग्रमः विशाग । वाम रसम् वार्थन भायका लाई ब्याक्राक वर, संस्थ्य रशका। तर, थात्र न्यात्रक संस्थ्य न्यात्रक क सप्रवन्त्र मान्यक ॥ र्वेष्ट्र क्राम् देर्म् ।। तता यात्र द्वार्षेक्ष्ये क्रिक ना ना ना हि है ना ना ता रा ना ना त्नमः भैमामि अक्व, ॥ ईका पक्षिमार्केक अक्व, विक्रम चर, वाम रशिम भैम मका पिर्व असिर्य मृलाम् यमर्थात् यू इन्यास् ॥ ज्यामिक्ति न्युस्य ॥ वर मान्त्रा यह न्यास् ॥ जला वा नक यंग विशय ॥ ज्ञानामाम क्षिर ॥ अश्रमाम क व्यासी क्षिर ॥ यथाई मृः अप्राचात क मुक्का अधियः। ने ि प्रकेश प्रवर्षा भर यश कृषा क्रयानिकाय ॥ उ वः प्रक्रिक स्मर विधार ॥ শক্ষ দুদ্দে কুর্যাণ। মূলাধারে ওঁওঁওঁ নম:। নাসেওঁ অওঁ নম:। দ্বদি ওঁওওঁ নম:। ললাপ্তে

त्र मत्र्यमः। वस्तरस्य ००० प्रः। चरु वारं चरं, देग्रि। जीया वैस्टि तता भैष्यासास्य उँ उँ नमः द नल दल्लामाधा । उँ उँ नमः ल भागिकाकात मन्त्र दल्लामाधा । उँ उँ नमः द धा কাশাস্ত্ররে পুঞ্চাকলণ্যামি। ওঁওঁওঁ নম: য° বায়াস্ত্ররে ধূনা কলেগ্যামি। ওঁওঁওঁ নম: র° প্রামান্ত্রনে দীপ কল্পায়ায়। ওঁ ওঁওঁ নম: বং অমৃতাভাৱে নৈবেম কলেয়ামি ॥ ওঁ হিদান্তার জ্যোতিকে স্বাহ্য 11 এবং নাঠো ওঁ অর্ণ্ড বং দল ক । ওঁ লণ্ড নহা: স্থাহ্যকাজনে গল্প ক । ॥ उँ रूप्रें नयः नणकामा ज्यात मूक्ष्णका। उँ यूप्रें नयः नायुक्तात धूमा क ।। उँ तप्रें नयः অক্সান্তানে দীশ°ক ৽ ॥ ওঁবওঁ নম: অমৃত্যতানিবেদ ক ৽ ॥ ওঁ হিদান্তানে ক্যোভিকে স্বাদ্য ॥ यर° क्रम्य । यर° ललारि ॥ यक्षरास्त्र केल् मक्ष्यात म्क्रांत्र १ पक्षरास्त्र उँउँ अमः द॰ ज ल॰ कल्मराशि वेजिविलाकः ॥ वेजादि व्यक्ष मुद्दा १ क्षा हा निया महान्य मनिव क्षा ॥ मक्रीकरंग, राक्ष वाका क नामुकी। त्रामाक्ष त्रान्य स्थितं स्थितं स्थानमा का का विवारं । त्राम् याय कत्र अव्याय व्याय कत्र अव्यात्में क्र क्ष्रिया अकादि गांत्र क्षांनाचि विशाय । देनमा शत्र सूचा ध रेक्ट क्रिक्य एक कार्य कर के कि ॥ जना में कि विदेश रेक का आ आ क्रिक्ट कि सांयान्कान निर्शः। अथासः॥रेडि॥४४: धार्मरकान । यथा उँभूत्वात्रक्रभ॰कान विस्ट्रस्य भ स्य । किम्भ स्थान कार्यात्राधारि कार्ति स्थान । द्विष्ट स्थाया भ्रे आक्राकारिकारिका

मिक छिन्यभाषाभाष भाष स्मानी निकाभः॥॥ ए इन्य क्रम्भार्क नीमराद्वसभार् अन्वयं यं यह की व्यात्रिमिल श्रित्र मया । वृति एक निवलाए अर्क्ष वृत्र स्वातः अर्कृत्मि अत्र आदि काराल यः अभूकः॥रेषिकाष्ट्रा॥ अथ छनेर मस्यी॥स्था उँ तारास् भू विभाद चरवारास धीर्थार् । जन्नः नद भरताद्याए उँ ॥ः॥ रेजिक्षेण्त्र गाउँ अउँथक्षिम् ॥ प्रभागमान्य ॥ अथकम एन् (माधन भर्ने ॥ यथा उँकम एला भाराजीर्थ चितिन भगता हुत:। भरा अपि भराकुक् मेंक्मानक अधारंगं। साथ स्थारिष्ण्य दे देशव क्षेत्र, भरा । लयस्यार मैर्यक ষ্ঠবন্ধ বৃত্যাদিনা শান জলা অগ্নি: করে অগ্নি বৃগ্নির প্রশাত সারিক্ষা ত সারিক্ষা প্রথাবেন শুদ্ধিতব कभल्या । अनंतम कामगवारं जन आक्षित्र ॥ वेष ॥ वषः श्रायम भातिः भारो ॥ उँ मास्ता थियः मा॰ प्रकाः भारता ज्व कुर्यथाः भारता श्रेका पृष्ठभाषिः भारता विकूर्कक्रक्रकारः। उँ नत्मा बक्षाले में मास वार्या द्वायव अकक बक्षािम द्वायव अकक बक्क बक्क विकासि अक বদিজামি সক্ত বদিকামি তন্যা থবতু তত্বকোর মবতু অবতুমা থবতু বকার ওঁশারি:শা सि: गार्सि: ॥ रेकि॥ ३॥ अस्नावन्यू अद्तो पून्यू अद्वीर्य कत् वा विद त्वप्रिता अवशी ज भक्त भा बिविदिशावर्ते ॥ जमान्तिः ७ ॥ २॥ जि य महन्यभा भ्यत्या विनयं सम्भ महरेन्द्रा

अक्त भेवार भम्नर्व मार्यात्म प्रधंग अर्थान्य आर्थान अर्थान अर्थान आर्थान अर्थान अर्या अर्थान अर्थान अर्थान अर्थान अर्थान अर्थान अर्थान अर्थान अर्थान भाग ॥ ज्यान्ति: १७॥ ७॥ ७ अङ् वृक्तभा विविध कीर्छः पृक्षे मित्र विव के भिविधा वास्त्रीय अभ्व भाम्य प्राचिन्न भूर ठर्म अर्थाया अभ्ताकिक ने जिनादका दिमानू वहन ॥ उनाहिः १०। । य म्बर्भनः म्बर्भिनः म्बर् पूर्वार पूर्वभूत्रात । स्वीय म्बर्भाम्य म्बर्भायात निकाल ॥ प्रभा ব্রি:18 ॥৫॥ তুলাকার্যক গ্রহাঞ্চাত্র বাফ ভালে এই ক্রি: ত্রাত্র সক্রো বলামিন্ট্রিয়াত্র হ সক্যাপ্র মঞ্ विकामनियम् । मार् वस्म निवाक् थी भाग वस्म निवाक्ताम निवाक्त भाग निवाक्त प्राप्त তদাকানি নির্ভে য উপানিষ্পু ধর্মান্তে মার্ম ক্র ভে মার্ম মক্র ॥ উলান্তি:॥ ।।।।।।। তবার্থেম মনমি প্রতি িক্তিতা মনো মে বাচি প্রতিষ্ঠিত মাবিরা বীর্মা এখি মাধার বেদ্দম ম আনীক্ষ্: শ্রুত মে মা প্রহামী রাণ নাধীতে নাৰ্বারামান্ ম°ন্ধামূত বদিজামি সতত বদিজালি তন্যা মবত্ তত্ত্বজার মবত্ব বতু মা মবতু বজার ॥ प्रमातिः॥७॥१॥७ उद्द ता १थमि ता ७३ नमः ॥० मातिः मातिः मातिः ॥ ৮॥ व्या क्ष्यिः र्वेगाम त्यान्य नामम नक्ष्य र्याः सिंदे द्रि स्वाल्य सर्वे विक्षाम (मर्ग रिष थमा यू: श्रुष्टिन रेखा रुक् या श्रिक्ताः श्रुष्टिनः ध्या रिम्म रिमा रिमा रिमा स्विके स्विके स्विके स्विके स्विके स्विके

त्या श्रम्भाउ र्माजू ॥ जंगारि:॥ ७। २॥ ७ त्या यक्षाने विस्थारि मूर्य त्या ते त्या अधार ल्मां उद्या उद्ध द्व आखा युक्ति खका मा भूभूक ते भारते भद्द खा भारते ॥उभाकिः॥७॥३०॥ र्ण नाया यक्तादित्या यक्तियमा अण्यम्य केल श्राक्तिमा अले ।। ए भया । ए भूं जि ॥ आया यह ना हि:॥ ज्ञाता थिय रेडि मिरिया अम् ख ज्ञाया असले नम स वाता प्राय शक्स असाभि द्वारा व खळक वंक वार्षि अव भवार्षि अञ्भवार्षि । अञ्भवार्षि । जन्मा भावी वह कात । वारी ह भावी ह कात उँभान्ति:॥७॥ अव्यद्भक्षभ्वर्षर । शेष्ट ॥ अथ प्रश्नुल ॥ उँ अस्डला निहास्ति जनाविस অসক্ত ি স্বতিয়াতোল গভের্মা, বন্ধ ক্রমম্বন্দ, ক্রম, ।।। সাত্র পদান পাঠারি খিতাপ ক্রম न भः संग्राट भर्षेता. वयर बाक्र तक वन्म अवा नायं ।।।। त तक्षायं नहा न नक्ष शायान এক্ষণ: নুরা: কণ্ট ভিত্তা বিনির্জাতী ভক্মান্সাপ্প লিকাবুক্তী।৩॥ওঁঅহা ওঁঅহা ওঁঅহা॥ १६ ज्य भर्ति का अस्ता ।। १० भ अख्या भूक स्व अक एक भ्रम भारति अस्त ॥ ३॥ १० थर विकासी डियनः।।रा उँज्यमञी जिया ।।७॥ उँ ज्यातिक विज्ञान थ आज्ञानक वाट्या विभू अया। रेजयर्स।। क्षा जें ज्राम रहा का रामे त्या रामे त्या रहा की के 11011 जें भर्म या मा प्रकास मन्य भावादित्य भ यकः गर्ना।। ए वर्ष के मार्थ मिल सार्थ।।।। ए साला रिम्स सकावा वस्त रेक गर्स।। ए।। ए सकान

বন্ধ বৃত্তি প্রস্তু: ॥ ১৫॥ বৃত্ত প্রের্ড প্রস্তামান্তি নার্দ্র ।। ১৫॥ পুরুত্ত প্রস্তু পর্বু প্রস্তু প্রস্তু

भक्रम वाठा भविमा भवल अस असला १ कळ प्रकारण मू १८ भवाता १ वर्षणांता १ वर्षणांता १ अक बनावानि अक बनाय अ: अक्ष भरा पूजानि अक्ष भरा पूजानि शिक्ष भार भेक महा द्वायात्मकिक दिशा विचक स्वादारकेक छन्न विचक भू माई प्राण विश्य रेवत पृत में अकातात्रात्रमः अक्ष क्षेत्रं अवति॥ भागा सम्बन्धिः विक्रम विवाक्षेत्रं । अकात्रामा अवादानाः নি প্রাণপত প্রমাপতে ।ওঁতাওঁ মগীকৃত সাক্ষমহা সুজাবি চৎ কার্যাগুল মর্কে বিরাড়িক্স ফতে भेका तः। १ दे ९ दे प्राच्यकी देख व्यक्ष भन्न विवादि विद्यार्थि कि भारत नियक विवादि विवादि विवादि विवादि विवादि अस् हेक्रावाद् । नवदर्भका असीत्रभावानः करालाक्ष्मभावाद्यः भागाविष्म असात्रकः सकायं भाव संग्रिक्षः। वर्ष्याच्याच्या ख्याः। चळ्ट्यंत्रेत्र्ययः॥ व्रुक्तव्रेत्रिक्ष्यंत्रीय संग्रे ने भाष्या कार भाष्यक शर्म कृष भिष्ट छहन । अल् कार्न ने ल्या ने तथा कार्य । अल् कार्न ने अल्ला कार्य कार्य कार्य মদ্মর তিরু ন্যাতির নামি তিরা তিরু কুত ক্তির বিরবয়ন ন মাবয়ন নোত্য কিন্তু কেবল

বক্ষাব্যকর প্রামান্যকে, সক্ষ্ লক্ষাইক প্রামোনসংগ্রেথ বিঐং পারন্যক্রমাবস্থাক্রসঁ স্তি: তর্সস্থাতি মান্যাত্রা প্রাক্ত:। এত হের্য়ণ মকার: অকারো ধকারে ধকারো মকারে মকারা: ওজারে ওঁকারো ধ্বমান্ত্রা সাক্ষী কেবল ভিন্যাত্রসূর্মণ্য নাজান । ৬৩: কার্যপ কিন্তু নিজ্ঞ क्र युक्त भूक भका व्यवसानम् । इस वार वार्क्ष राष्ट्र भाष्ट्र अर्थ व्यक्षा भ्यो क व्यक्त नाव स्वान भया थिः य रा नहारी, जेंकार त नहा भावारिक स चकः। विवैश्वामा। लई, तसार्था। लंग भावातिसः। भारती रामा । भारताच्या देगावाक मिन् भर्वण। यादव द्रावन भूय यमभूय एम चित्र। आन्यादव ए दिस्वाम् त्या अविभिवामे शि अशव आव्या अखर्णाम् भृवः। भाष्तान अस अग्रमाव्या अत्सवामि ক্লাক্তমা: ॥ • ধৃতি লক্ষ্য পর্যতি সগাক্তি ।। ই:॥ অত্য মরাবাক্যার্থ প্রবোধ প্রকার কাক্যাম্যায়:॥ তথ্বমুমীরি সৌম্য মর্বাক্যায়িতি। প্রথমণ নিষ্ঠা প্রান্তি প্রান্তারে।। তের তথ্বমুমাতি অমিন্ বাক্যে গ্রীলি শদারি তবন্তি তথ্ত অমীতি उर ठाक्रम द्वावर्ण वात्या लक्षात्म जिल्ला भागा भरण थंक वायार्थः। उत्तव भागा विनिर्म् भव जानानमानमान्य सुरुष्ण वक्ष लक्षार्थः॥ व यमभगि दाराले वात्या लक्षालकि। भून সূপ্য শ্রীর হয় শরিবেঞ্চিত তেতন্য গভার্থ:। স্থল সৃষ্ধা শরীর হয় বিনিমুক্ত প্রত্যক্তেতন लक्षार्थः ॥ ७९५ थामि किथर् ज्यामि ज्युमभीका मि मत्त्व हागार् करोता दोत्वा वासिल

मिल भेषार्थ भेषावित्याः कथामकाभिति वित्राशभूत्वनः जत्व ॥ छत्व पद्म पद्भक्षनेशा त्या रंगः प्रमण देवत्व गमा व्यम्भ वर्षकाल भार्यकात्मात्यकात्म त्यम् श्रम्भायक তবে । তদ্যত্ত কথামিত্যুদ্রান্তে ॥ বিদাজীয় মদাজীয় স্বাসত তেদ্রাইতত্ত্বার্ অম্প্রে॰-বিদারীয় তেব্রহিতমিতি। নিজ্যপঞ্চ মদারীয় তেদ্রহিত মিজাজ্যতাদা পাস্থি॥ স্বাপত তেদ্রাহিত মিল্ডেকর্ম° মেশ্বর অনবাহিজান অন 'কিন্দ্র নিজ শুরু মুজ মক্ত মুখার°। यिक्ति, युवेवंत्रक सक्ताव सवस्ते वंते विश्व में एक,। लामक, माक्ष्यान न्यानवार्वेत नांवे अस्मित्र भाष्मि । अर् वक्षाभीज (अस्वावभानः भमाधिः॥ यरः भग्याकार्यः भमा भारता भूकि র্ফবাতবে । জরভি শোক মাজাবি । একা বি ে আমাভি শর একা বিদ্যাক্ষিব তবভি। ভালোভ भन्यम् अविर्वाश्वतः शहिलाद् अष् भन्त ज्व भूर्य त्यकि शका भूका वासद्वा अकः काराज्यात्वा देवारि काल्यः। देल्यित्यकार्यः भाषान्यः ॥१६:॥

মারা সমারে আরে ব্রাপ্ত প্র ক্রান্ত্র হিল । ব্রাপ্ত সমারা সমার্থ সমারা মর্থ প্র মার্থ প্র মার্থ প্র মার্থ প্র মার্থ ।। ব্রম্বর প্র মার্থ সমার্থ প্র মার্থ ।। ব্রম্বর মার্থ সমার্থ প্র মার্থ মার্থ ।। ব্রম্বর মার্থ সমার্থ প্র মার্থ মার্থ ।। ব্রম্বর মার্থ মার্থ মার্থ মার্থ মার্থ মার্থ মার্থ ।। ব্রম্বর মার্থ ম

अन्मान्यक स्वावास् स्वाका समाध्यक एएः॥७॥ आत्मात्याध्यका सभीतात्या रास्त व्यक्ताभन् ॥ अस्तिक राज धारमाना अयक्कार्य रहेला अवर ॥ अयक्कार्य सम्मानिक रहेला छि मिन । अय देकारक ॥ अय भारत सिन देका मिन द्वारा अपनि मिन ।। ।। ।। या भारत सिन देश राष्ट्रः अकालिकार्य ॥ एक: अभन्दर अ्य लिश्र अर्थाकार अर्ए॥५॥ जवः स्नुताति वृत রি সঞ্চতেত্যো বিরাত্পূর্ণ। পথটাকৃতানি সূতানি সূতানী কুচতে পুষ্টে: ॥१॥ স্থাদিকাদীনি ज्ञान आकरः विजान विशा ॥ अरकरः जाममामागं कर्का विजान भूगः ॥४॥ अरकरः आग (भक्षिम् पृत्व भ तमास् क्रियार् ॥ जनमहाकाम पृष्ठके जागाः भक्षां वर्गति हि॥ व अभ्भे जाग नातिका । अवद्य (युव याष्यार ॥ आकाम जागा महज्जादा वा गामित्वृव याष (यर्॥ >०॥ वायुादि जागा मञ्जातः आकामादि (याजरगर्। ज्यकीकत्व त्माउर्भणिकानु স্তুত্ব বেদিন: ॥»॥ সংখ্য কৃতানি সূতানি তি কার্যাঞ্চ বিরাত্ সূত্। স্কুলাশরীর মেত্রেসার্ শরীর স্চ তাতান:॥ সং॥ অধি দেব মখা ধাতা মাধি সূত মিতি তিয়া॥ এক এক বিতাশেণ প্রমাদ্রাতি নতত্ত্ত: ॥ ২৬॥ ইন্দ্রিয়ের্থ বিজান দেবতা নু প্রবাদ্ধিত: ॥ শক্ষাদি বিশ্বয়জন जिल्लागारिक भेकारक ॥ १३॥ त्याज मकाव्य मिक्क त्यांवरा अस्त कर्न ॥ शिर्मि द्व विमिक्क मिम स्याधि दिवड ॥ २६॥ जुग का द्वाधि (द्याप्त द्यक्ति अधर्म लक्षन ॥ प्रसिच्छ ।

क्रिक्क यात्र स्वासिक्यक ॥ १८ ॥ प्रक्षंयकाष्ट्राकितः सक्र्यः सम्बन्धः। ।। लाध्येक विस क्रूक आदित्वा याचित्वेर छ ॥ ३१॥ जिल्लाकाका शिंड त्या कथि प्र ेत्या प्रस्ति ॥ यसती (मेयरा सेव हिसागाशहित्यक, ॥१९॥ लेख शकाव्य शिकेश लावक, शसक्तक, ॥, लाही श्व विविक्त निर्मिक त्रासि देशक ॥ > ।। वारा कावा हि। हि। छः वककः अद्यानकानः।। भाषित्र के क्षित्र के भाषी मिल्य ।। ५०॥ देशायका वा विकेश शामान के अगित निवर ॥ अधिशृष्ण छिन्त्राक्ष विक्रम्य वित्रवा ।। २३॥ भाषा यकांचा विद्युक शक्य विव भद्धति ॥ अधितृष जिन्तृष विद्वाश्वाधि देवन ॥ ११॥ भागू सकाका भिक्रुक विभूका क्य यस्वर ॥ नाइनिक, शामकित, भेकिश्वास प्रावत, ॥ १०॥ कुलार्थ खिंत मताया, स्थिता धापने वायक, ॥ অধিতৃত তদিকুত প্রক্ষা তথা বিনেবত ॥ ২৪॥ মানা ধাতা মিতি প্রেক্ত মন্তক্ত মন্তবংগ অধি হত লাদিত্বতে তল্প প্রবাধি দৈবত ॥ হত।। বৃদ্ধিরখাত্তা মিতুক বোদ্ধক ভন্ন মন্ত্রিবং ॥ लाइरेंक, विष्केद्ध, लाहएपर, र्रकामहः ॥ १८॥ लाईलाय सेता कावा मई, यक्षा पादा আর্হ বিত্র প্রাম্ব করে প্রমান ক্রিয়ের মার্থ ॥ ১१॥ তিও মহ্যাক্র মিকুটে তেতার্য় ভক্ত মন্ত্রের।। अधि शृष्ण अमिक्रकः एक प्रकाशाशितेवल ॥२४॥ असा १ भावामिति एसकः विकात् भूव गहति।। थासि पृष्ण जिम्कू अभिवता भासि दिवल ॥ २०॥ वाक्तः कत्लित्वरः दिवल त्या त्यावितः ॥ भ्राभ्य । विक्रंग विकास (बल्हामाद्येल स्टार्क ॥ १०॥ इस जागाविका वन्ता सवीत क्रियास्था ॥

यशु एम वाल्याची अगर विभा रेल जियायल में जी विभा विभा से काराने माल है एक निनुगर्य ।। जात्व सिमावि अत्येष व अशे कार्या सिमावि ह ॥ ७२ ॥ खाय पुक् नम्ब जिय्वा खाल भिक्तिम प्राथपक ॥ वाक् प्राणि प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त ।। वाक् भारता वृक्तित्र विकास विकास किए कि कार्य के भी भी भी किला आकार कार्य के विकास के किली ॥ ৬৪॥ অভিয়ানাতাক শ্রন্দ হউনার: প্রকারিত। ॥ খনুসন্ধান ক্রী শক্ষা চিও মিকাভিয়া यत्व ॥ ७७ ॥ भारता १ भाग सुथा काव डेनाना का स्थित ॥ अधान त्या भारति भारति वा सीर्धि তাঃ মান বৃত্য়:॥,১৫॥ মান বারীটোরী শ্রিভরো বিজ স্বীয়াপ্র ভারত ॥ সাহিচাকাল ক্ -भीषि लिअ भूर्यकेक दिनः ॥०१॥ अट भूका महीर भार भारिक छात्राखानः॥ स्वरण भवाम जायर भ आवा व्याधानर ॥ ७४॥ याच याचकका भन्तन भूतन भ स्र डेकरत ॥ आउमानी जामा र्यस रहे ज्याः भाइकि लिएः ॥७२॥ विद्वभ शर्जकामन रहे प्रभा छिन्दार्श पूर्वः ॥ १०७ क जास्य छिष् भारति इयं कात्रणे ॥ ४०॥ धाव्याकान ७५ क ত মকাকৃত মিতার্ফতে। ন মন্ত্রা মন্ত্রা শি সদ্মত্ তিরা তির ক নাজন:॥ ৪১॥ ন মতা ग न निर्माण य ठाअू प्राक्त भक ॥ अकारकाक विकास क्षिण विकास के भाग । फानामा भूमाभ शाला प्रकः कात्रनेजा क्रिकः॥ वहेवीर् वहेल्छ्य भूष् श्रित्राज्योग्राज ॥४७ ्यानियानी उत्यार्थिय भाक हेका विधीयत ॥ प्रमार कार्यन तत्थने भाषाजामा विधि खाग्र ॥ ३४॥ विन्ध रहेप्य भो धुस वितारे भूषाक्षताजानिः॥ विजिन्नं हेव भे भागर-यक जियु हिना कि ॥ १८॥ विका दिक यम येशा दे हा जा विका कि ॥ यक एवं देव भ आकाम का नाव हास्रहारा ॥ ६८ ॥ व्यक्ति मार्कात । युन्त्र हात्वाति व्यक्ति, ॥-বাফ্র বাচ কতা তেন্ত্রে দেনারু পলাজিত:॥ ১৭॥ অকার্মাণ । বিশ্ব: ম্যাসুকার স্তৈ দুমা:ম্যত:॥ आका अकात वेलिय भात भागाए कामण्य ॥ १४॥ अमा विकालाए आलाय विविधिय छ यञ्च ॥ भूगभूका कवाए भक् हिमान्यनि विना आरंग्र ॥ ४२॥ श्रकातुः सूक्षि विभा भूकात अविणा भारम् ॥ उकात लेजभ भृष्या भकात अविणा भारम् ॥ उन ॥ अकात कार्न सार्क विमान्निन विचानात्यं । विमान्नार्व निक सङ्ग्रीक पूर्व भूकः भमान्यः ॥६३॥ মরমানক সন্দেখে বাসু দেবে ইমোজি ছি । জাত্বা বিকেতক তিও তে সাক্ষিতি বিলাম্থে ॥ ৫ हिमाळाचि विलीच एकं ए जिक्किं न विहाल होए। मूर्ण वाशा जाना और पूर्ण हल अधू सुन् । एक এব° সমাবিতা যোগী প্রাক্তাততি সমবিত: ॥ সিতে ক্রিয়ো জিত ক্রোধ: মাল্যদাতা নমস্বরণ ।তঃ আদিমধ্যা বসানেসু হু:শ্রু সর্ক মিদ থত: ॥ তস্মাত্ সর্ক মার্কিক ততু নিষ্ঠো তবেৎ শ্রু ॥ এ गः अक्षित अव्यात आस्य शासकात्या समाध्या । न त्वन किश्विनां छ । जात कथन निकाल ॥ ए० कृष्णकृत्वा जलिश्विता जित्रन्यूत्का जत्तर् अमा॥ कमाक्ति श्वरशांदाभि देव यस्ति भन्गांव ॥७० त्वायाचा काजिताकर्त न भागाजि हिमानुसाए॥ किन्छ भागाजि बिल्पेन मिड्शार्यन्द्र विज्ञाग्वर ॥००

ক্রিমির্ম ত্রেমারের ত্রেমারের । ত্রুতার্মর ত্রির্মির্ম ক্রির্মানির । ক্রিলার ক্রির্মির্ম ত্রির্মির ক্রির্মির প্রান্ত ভারতির প্রান্ত । ত্রুতার ক্রির্মির ক্রির্মির ক্রির্মির প্রতিষ্ঠিত । তর্ম তার্মির ক্রির্মির ক্রির্মির ক্রির্মির প্রতিষ্ঠিত । তর্ম ভারতির ক্রির্মির ক্রির্মির ক্রির্মির তর্ম ভারতির ভারতির ভারতির । তর্ম ভারতির ক্রির্মির ভারতির । তর্ম ভারতির ক্রির্মির ভারতির । তর্ম ভারতির ভারতির । তর্মির ভারতির ভারতির ভারতির । তর্মির ভারতির ভারতির ভারতির ভারতির । তর্মির ভারতির । তর্মির ভারতির । তর্মির ভারতির ভারতার ভারতির ভার

প্রায় দেখনর চার্ফ বিরচিত পশ্লিকরণ লিফতে। তথার ॥ তথাযা।।

অর্থের সার প্রশ্ন বাসু দেবা ক্ষরতা ॥ ইতি স্পান্তি কিতা মুদ্দো বদ্ধ প্রান্ত থাতবে ॥ ১

অর্থের সার প্রশ্ন ন চার্প প্রশ্নণ: পৃথক্ ॥ ইত্তের সমুসাসীত প্রান্ধণো প্রশ্নণি স্কৃত: ॥ ২

অর্থের সার প্রশ্ন নিশ্চিত চিত চিন্তিত ॥ চিদ্র সাত্বাদ মস্বাদ্বাহাত্বাৎ প্রয়ন্ত: ॥ ৮

সর্বো সার্বি বিনির্মৃতি চৈত্য ক নির্দ্তর ॥ তব্রশ্বাহ্ মিতি দ্বাত্বা ক্ষণ বর্ণা শ্রমীতবে ॥ ৪

. चार् असाम्मा त्या त्यम अ अर्थ च्यालिष्ट्रम् ॥ या भूत्या हिलाख दिया व्याद्या (कृषा चरविद्धि भंटे॥ ত। তাতো সাবৰ্মকোস্মীকু পায়ে যে বিদেৰতা ॥ বস্ক বেদ করো ব্রহ্ম স দেবামা থথা স্তঃ॥৬॥ পর্যাত্তা ব চাম্পেরিরবার্° ব লোক প্রকৃ ॥ মাছিদা বন্ধরামো १३° বিভাগুজ মুখাব্বান ॥१ 'आळात' अन्न अका अथाक विद्वंति त्य ॥ न (न्धा म्थ्रून किलि म्थ्रून व्यान वास्त्र ॥ प আজান পদত বৃদ্ধ মতাব্য বিশ্ববিংস্মা। যদাতাসেন চন্ডাবো তবেছুমার কীঠবং ॥ क्कन अक्षात् अभीति थः कूर्णामाळा ठिक्कन ॥ जिन्यदा भाजक दक्ति ज्याः भूर्णिम् यं यं ॥ ३० অভানাৎ ব্রহ্মাণাপাত মাকাশা পুরুদ্দেশমা ॥ আকাশাৎ বায়ুরুৎ পারো বাংমাশ্রেদ্ সত: প্রা:॥ >>॥ अहा न स्थिवीजान जान वीहि यवान्यः॥ स्थिक मध्य भाषा वाह्ये वाह्य विद्यान अप्रकार्णा । । लिए । प्राकृत्व कट्ट अति आका आएवं श्रीः ॥ अवं निकृतवं निकृतवं विकृतवं विकृतवं कर्र ज्याका विक अविष्ण हिन्तुं भारत्य ॥ अञ्चाता १ धन वाह भारत्य । ॥ ४५ श्रानामा १२ आत्मा १२ आर्जा १२ अभ्राता १ अग्र इ०॥ जिल्ला ६० जितिकाल्या १० जिल्लाहा ६४ क्यां॥ अद्याभारत्याचन्त्रत्ताः क्ष्याक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्ष्याः ।। भ्राक्ष्यक्षाक्ष्याक्षः भवाक्षः भवाक्षः ।। अनायर अञ्चित्रांत्रच त्वरहेत्व अर्वत्यिक्यः॥ आर्मिश्चरात् भूत्वार्यः नवाका १३ क्वाउन ॥ ३१। श्रूयाचं किर्युक्तः अववाक् न अभाराः ॥ आस्त्रवाक् व अभारी भूत्का १ व शिकिटावत्यर्गंभ १३ थांगक्षरम् जाराशिष्ट् याराधारायार्थमाजाहार्॥ कार्याशास्त्र भारतेस्वाद्धकार्था प्रकार्थार्थः॥

मण्वर्भात अमा जाआर असा छेक भवा भू गार् ॥ याच प्रमिव अमा जाआ प्रमित मू एक जाता है। रण। नार्णप्र न ह माला विख्यानिख्यक। न श्वास्थ्य न श्रीक्षिक द्वित विश्वभर् कृष्टि॥ १३॥ बार् एशी ब अलिल न ठ वार् अथा जिलाः ॥ व ठाकाला व मास्यह व ठ मार्ग अथा वंशः॥ रा। नार्णाका न क्रायं न भागार् न न भण्भाजिः॥ भमा आक्षे श्रुक्त श्रु कित श्राक्रिक वणः॥ १७॥ आरोपर भक्त अला आर्थ असि भक्त साहित्रिक ॥ असि अस् लग्ने गाहि वि इसा अप देशहरेगा। १४॥ असिरका १ व्यवस्था १ व अर्दियाः असी माकि शान् ॥ थाननः अक वास्ता १ वृश्वि अकान् छिन्द्रनः ॥ १६॥ अंग्रे, ज्ञेश का शिक्षिय सक्य, तक्षा वं शक्तं,॥ अत ज्ञान, विचाखा ग्रेंचवा जै अवज्ञा ॥ १० अक्सियार् न अभावी न हार्अकाः पृथक्॥ नार् प्रश् न का प्रः क्यलार्र्भनाजनः॥ रशा अञ्च ते ज्यान्यसा व्यानाइ न अल्लायः॥ यक व्या दिनीयः वस्त त्या शि किस्ताह। শ্রামৎ পরম ব্স পরি গ্রাদকাচার্য শ্রীম জ্ঞরাতার্য खिराष्ट्रिक लक्क्षीक्यंग, मर्रियाक्याम् विवयंग, में र्सेट्

উত্তম্ব ॥ শ্রীরাম:বৃরি:॥

अथ को तक्यों विश्विः ॥ विभागी आहार्थ कोतः॥ आयाही कामकोतः॥ अह भनी विश्व क्रम को तः वा कार्यकी क्यान्त्रभ को तः । त्योकी व्यवकोतः । का न्युकी व्यवस्थानः ॥ वर कोत स्राप्त भाव ग्रहण भिन्ति ॥ स्रायंग्य भावग्रहण नमस्रात भावसाराण प्रदेशिका नमस्रा साम् राज्य में शास कारी कर, अ, स्थेक रहें का मध्य पर्यंत ॥ विषया, भू माना ध्री शास ध्री शास त्वं यथावर आधिभा भ्राष्टा वाध्यन काग्र अध्वान अभवाधान अभन्न त्य॥ ४॥ अमनास अवशानि कियल अईनि अ भंग मासा १ मा भिष्ठि आ भंग क्या सुक्रसायमार रेडि अक बरा स्क्रीत अयुक्त अअवाध क्षमा आर्थार्श ॥ आर्थार्ग मिडि॥ ज्यामो स्क्रोत्रिक्षिणे अस्तिनियः॥ जि श्रु हूर्णाहिक अर्ता ग्राक् स्क्रात स्थानर्याः। अंग्रे मेंक प्रात्तः का हि में बेंक् के शक्षाः ॥ भा विद्या केंच व हि यो के मिक सिक्स करी है। रूज विद्धाः न रियारः मर्सकोत् अधानात्मः॥ २॥ विश्व कि भूर्क भाष्ट्रभूर् के वांभक॥ जिथि कर्य दिनम्पि भूक आकृ भनेकिछः। १०॥ भूषूर्व दिन्यं त्वा त्वल्यादिन्ः त्यात् कर्मान । जिसूर्याविकासान् त्मान भारता हि वानास्त्र ॥ ४॥ लखाइात स्कू की एका ताए भूर्याद्वा यार्षः। तिवाए झात्यु त्योत् विव्यं अयू अव्याद्वी यू वाभारत् ॥ उम्र रेडि वार भहात्राम्। अंबु अस्ति भोर्वभाकाः भक्षत्र अस्तिवायायात्। अपू अकाविताल व कोर्निमाश्चि कम्हन ॥७॥ यहिश्यीयात् ॥ त्मोर्नियायाः अवृद्यायाः यहिः त्कोत् छ कांतर गर्॥ अहर विलय काञ्ड भन्निमन् दिवस्य यहा ॥१॥ भीष्रया अहर कोत्

भति भिर्दित कार्तरार ॥ सूर्व विषयम किन् यदि मृत्तिक ति छाउ ने वि ।। । वित्य सत् शाहि ॥ 'अधियात्या यमा विश्व जमा स्कोत इसे जत्वर ॥ आसहत्यन सम्यय आस्मिकन जमा सत्। विभू हुर्णा विक आहर भक्ति स्थाने स्थाने सा दिनि । अन्या भिकास्य विभू हुर्द ति भू मु প্রত সর্প্রত ॥ স্পের্ণিমাস্যা তদাতিক: সঙ্গব স্প্রানি বাসয়ে ॥ যানি দ্বিযুহুর্তাদি বিধি পরাণি বাক্যানি তানি সর্কাণি দৈনিক কর্মা পরাণি কৌর ত্র মানুষণ কর্মা ওস্ট ত সপ্তর: कालः। अनः अश्वरा अश्वान राभारार। रेकूक विश्व हुर्जा विकामिनि ॥ भावि पूर्वाह विवास क्षित्र र्रापि विश्वास कानि वहनानि जानि आसूनिकिः धाकिसानि निर्मुणानि भूक्षाक र छन विद्रासाए अश्ववकाण अवस्था भारतिलापाळ ॥ थळ द्विसूर् पार्नि भारत अनुकल्भ भारवामि जिस्क जमि दिविक कर्य विसंग अ प्रत्कारा विसंग ॥ यानि ठ पूर्वभी व श निस्म रहनानि जानि भूण यान्स् रूके द्वा दिश मास्त्रम अर्किम द्व विस्थाद्वन को (त जम्म ध्रमण्य जावाळ निर्भूष्णानि ॥ क्षेत्र ॥ (कोत्र धकातानि ॥ कत्का अम्बान क्रियु अक्रियु वायरम् ॥ व शीत्रृष्ट्व जिकात्यत्र जिक्दः अक्षत्वर् क्वाइर ॥ आमणा नः यातः त्कोत्याककः यक्षावादिणेः। आद्यक्त क गृह्यानाः क्राकात्केवान्यः विना भ याणः मध्य काल्य ठ देशः काल्य ठ ग्रह्मायाः। अकल्यानत्यं गृत्यम् वाः श्री मृहालीः मिलामत्रं ॥ के

रकोत्र मन्त्रः॥ श्रह्मा भाषा भाषाका क्या क्या विश्व ॥ तकोत्र मानामिकः मार्का ल क्या का था अष्कारा ॥ १॥ जोत्र भाषा भित्रक छः कारान अम् नखत्। आह्रक वाल्यरण घजार् अवाकः (भोव भाउंत्र ।। ।। अन् श्रां पुन कि कि कि कि कि कामिलाई।। को तथार अक्रीं क्तिम अभ अपनामा विश्व । १४ वामाना कृत्व कूर्याए किमानिया १ वामान्य ॥ कुत क्रीतिक व सिन युमा हादण अध्यापा । । प्रकाल अर्थि अवर्ष भारत जिसी हिया । आजि अस्य हि चिष्यात पादान अकर्यक्याचिः माना आयुधानि । अर्दानि कालर्यर भूकियण्डः ॥ कृत्याम्। यं जादंग अन्त्रधाद्या विश्व हे ॥ २०॥ कामिकिका अकियामा पूर्वाकिन अवली भारी ॥ शूर्वजान वाद्याम केला व्याद्य द्वारा विवास विवास का भागा जिल्ला को दक्त किया किया किया किया किया विवास वाद्या । म्यांक्राभ्यायाति थाल्या जिल्ला क्रिक् । भ । कार्यस्य ए ए क । कलाम् राभाजीस वि विकित्यर ॥ प्रणाममं १ हरवा अवा धोयान भ्राय भाय भारत । १ व कि स्क्रिंग विभाग सः॥ भ्रामीविशिः ॥ वि वर्षातः नियकाथ छीत्। याका भविन्छ । यद्रायाः भावत्या भृत्याः विष्ठ्व त्र विनिद्धिकार ॥ अमे वका नार्थ हिसा शाहियात क्रिक्ट एका ॥ आवा प्राचा शाहिक प्राच मित्र क्षानिक भू रं कि । विश्वर्यात कियकाभू आर्थियार भून कता। विश्वर्यात विवासक भू ज्या की मन अभ्यां॥ १४॥ वस्त्र के कि भून के कि भीन का का वादाना मा वाई: आहन प्राप्ता

रास्यानि अभाउत्स् ॥ २१॥ भारके कामनायांत्रक अभागाउग येवुउः ॥ ह्यानायाः । छकः कू र्यास्थारिः स्मार्म्य अन्यम् ॥ २५॥ विअर्जस्य करणा त्योतः राष्ट्रसान् कात्रार भूवः॥ एए मा श्रिकाक्षान (क्षोत्र भ्रान्ताम महार्व ॥ । भ्रान्य भ्रान एए: कृष्ठा सुर्वापीन् भ्रापकार भ्रानः॥ राक्ष भाष्मक भीषा भरे के छाउँ लान्याणः॥ तेषि कोई ग्रान्यमाछः॥ अय त्यानि धमण्या थिवरहन्। ठवूर्विया जिन्द्रकः आएक्डीहरू राष्ट्रमको। द्राः मत्राद्रभ नह त्या यः मनहार्भ ওতথ:॥>॥ বঞ্জ ঢারী সহ্প্রক্ত বান প্রস্কৃশতা নিষ্ঠ। ব্রঞ্জণা নাক্ত কোট্যস্ক মার্ড য়েকো বিশি काल ॥२॥ आकाष्ट्रिका कृषिरित्था नशस्त्राम् भूताभूतिः॥ वर्णयतिः समस्य अ भत्यदः त्या श्विष्ण्यः॥७॥ (म्यजा धाउया मृद्धा याज मृद्धा भामान्द्रमः। नयभात् यक्तीत्या तो अव° न सक्य अल्ल ॥ ३॥ विकू शति लो ॥ अर्तिशा आय्याना छ अग्राभी देश मायाभी। अयस य नग्रम भग क कि भाग गर्न विक्षितः ॥६॥ विक्षीकोः भवशक्षाः भाका सावायां वा भारः॥ यस भण्या सं विक विक स्मिन अ शृहितः ॥ अक्षेत्रकात्र म स्वतं नामा नावा सामा ।। नम्या जाल जासन विश्व किमी भारत यहिः॥१॥ यहि वृक्ष प्रण मकार जिले मकार भूनप्रण । अमञ्जामक्रिक्षक्रिकार् अप्रतिकार आगारता भग्ना ॥ जिकास्क्रिक्ष्याच् ॥ जन्या ॥ श्राभार्त हार्यक साक था या विका स्वयक्ति। समूरिश नवंक था जिल आरमन जरकारि॥

इर्लि वा अर्ब्हरा या को निमा न काइएएट। यही वा रवे इस मास न त्रक था हि मासका भी थार्ड ईस गाउ प्रकाश का वार्षा यात्। अयः अनी मार सूछः कू ला वा का वि अपि। अ (अर्था हिस । कीर्य मा के आबा मार्क मर्थ का भार्य न प्रथा। आसिक अफिक वास काला मिस्टे" भश्रापश्"। अवभए जिस् खणानि वस्तिसं भरामात्वर् ॥ अ। भराभगः॥ अञ्चादारसन क्रिक्रक कार्त्रेस अस्त्राकेत.। कर्जिस के क्रिकाम, त्रमीः भश्यक प्रतास ॥ अ। व्यक्त (मय द्राक्षकः केव कर्मा खनाजनः। नार्ने के क्षांध कर्म कव्नास्माद्र भावस्थान ॥ २०॥ विभक्त कि विभाभक भगीम, यदमधं हता। यार् मेला ह आकृताः विकासावा ध्वर्ताद ठ गाउधा धार्य छिम् टिका विनर्पात्स ॥ ३३॥ चित्रा सम्भागिक वर्ष सम्भागिक भा द्वित्र । भाभ वर्षे जार्गस्य अर्थास्य आर्थ । १८ । अर्थास्य अर्थस्य अर्थस्य अर्थस्य अस्य एकोर् किर्धिनः । दीर्श्वारा भूजामन् अवद्य वर्षा स्वर्ण । १०११ तित्व वर्ष अव्यक्ति आर् आर्युक्त्यक्ति। आनश्चिमाधिकार्थिकार्यिकार्यिक सूचिक सूचिक कला ध्रद्ध ॥ १४॥ सिल्य भरत्र सूखी ॥ ला अमृष्टि यह मामी ठाजा भारिक अरथेन छ। अमृशूर ह भारि जिला? वान नार विनम्पियार ॥३३ थका गाता शक्कि नह झासकी ह सुश्रुचिका। मन्त्राद्यपे खक्ति सुशिको के नत्तामक ॥ ३० ु क्रिया भाषा व क्राय नक्ष्यायक वर्यरांता श्रीतातिका निवादका मर्देश र्विक वर्षि ।

जन्रे विक्रो जाक थावक गिन्या यशि। शिकियापात म्या के स्वीय यानव त्यावकाः ॥ ११ कमा हिन्मुकू आत्था जि जिमिन वर्षसम्बद्धः। भाकिनो मिन स्वक भाए भरा भागे मिन गर्भः नार्यः॥ अर्थक ह मिनवश हजू मिन राजभूता । प्रकामगरार्थभातः जिका रार्ज्य अस्ति॥ माकिता दिन(अक' आए मार्डा धृति दिन द्वय'। दिन द्वरा मार्खना के माकिता दिन(अरह ॥ १६ मस बीचका रालका दिनयमं भूमात्रक । जा अका अस्तरहाल अकः को गर्धावर ॥ जूमात्र अगर भाषे नगत् अता एरंग्ले अङः ॥ मा ।। रेडि ॥ अनुः ॥ अअ अजा भूषा कवा मकत्यकी मातिक (जल। जन्न अयानिक क्र्यां न क्र्यां माजिता या ।। मिख वंश्वरायक ख राष्यः भाष्य श्वर्म हर्यः। अंतु कु भा तकः शास्त्रा कृष्टोत्क अभागातिकः ॥ राष रेषि॥ विश्वागृत्व विश्वयत्त्व विभाविष्ण॥ ४० कार्याभारत विवासि विभाषि॥२०॥ विकाभवत दिनानि॥७०॥ मूस्मावत दि०४०॥ जिन्त्वा काकार्ति ॥ रेक्क कथ ॥ या मूत्र भाविता यहा त्या भूषा त्यह दिन्यानिता त्यो ह उत्र स्रवस्त्र यि शर्नि ना ना कि मन्ता । रागा मना राजा क्रुनि भूल भाभा क्रुद्ध नरह क्रूठि ॥ द्वा जा सम जित्व लाइअल्डियाम क्रव्यक्षेयाए ॥ २०॥ अन्याल वर्जनताम्लाइ मिल्डव धन्तवीयीए ॥ (अस्मा (मुरुद् अन्यान्यः म्यमाकः।) रारभनिकः॥ दीकामातं विवाद् र भूनति वन व्यक्ति। विश्वाचार्य मिर्गभात यछि जिका॰ नकार्यं ॥ कार्यं यजा यमभूट: भजावान नअभग्रा।।

चित्राचाः॥ आश्कत् अभिक्ष धार् धानीष अभाष्टिण ॥ 'आर् कालिक' (छाधा भरा' खिकामक विश्वकार ।। अनः अ॰कारादिकान् गृशन् वीन् मकामकता। अस्टान्य वत्त यञ्चाद्यकरा शिविभ्रमुष्ठ ॥ ॥ असिता कार्यमार धारम् यर खाचित अफि अप्युक्तः । 'उर भाक् भागे जिल्लार् अभवान्यायाचाः ॥ रा जिक्काटन असूम्यामार् अत्यवाणि वि मस्ति । अग्राहित १९ विद् १६ (याद्यक अनु अर्थ विश्व ॥ । प्रमञ्चात गरंगर (याद्य विश्व त्रियाक्षां ति । जाएकानिक भिष्ठिकाण जन भ्रण ति भूभूकृताः ॥ हम भिक्कं भन्न जनक जलजानी ज रानी श्रेष्ट ॥ एम मान जामजान भेनता त्याक का किला ।।। ।। विभक्ष विशासिका ॥ श्रीति॥ जिका मर्श्वविशाक्षणः त्याचा व्याच्याच्याः॥ सामात्यक स्वराण वामिन्र्यम् मिकिमाभुगार्॥ जन्मक ॥ गिरिमक विशाजिका स्वर्णि भव्छीछछः। अविद्धाला मि रेवाचा विर्धि के भरी क्षाता ॥ ॥ ता का का ॥ (स्थान विवा न्नामि ज्याद कुछिए॥ त्राकु। न्नामी ज्यान्य के कमाछि द्वा भारता ज्याद ॥ गा विस्कृ ि द्वि व क्रियाशि क्रम् आप्ति मैं अब्स्ता ॥ अवः लवाय, वाज्ञाग्राहिकेः मीज्ञानावायः ॥ ९ भताञ्च वर्षन्तात्य जिथु जिथु ति जिथु । भवाञु विभूत्य जिथु: भव जानभवा कुग्रह ॥ विभूत्य रेषि स्वान नाम अधुक्त विरासिक शिका कर्न रेषि

कृष्ः॥ अ व्याधिक भूभभावा न्भ दूर द्वारा । दिन । एत अस्का न भ कारे का आ व कताक्यं "। भगाहिन वाया लाज (जाजना ह्याम्य जवार ॥ नियानिका थया मीमा अर्रेश, य त्रका मार्गता भा बाहा ।। आकास विस्थ काक्यं ।। मना ।। महात्रामार्वे वाना के वृद्धाना मिर्धादाणिका । यकास्त्र वृत्वाका रिक्ष वक्तकेवन दिस्त दिस ॥ ३७ मुफील्म विकृत्मा (याभी नृमाला विकत्पत्तियः। भूष विषयाक वाषा भद्गी त्या उक्षा वारति। जीविन के ग्रंथा मिला त्यार ब्रथार रेज्युजः। लिभ्यूज न अ भात्मन म्या मधा मिला ज्या ॥ १६ वालाभूय मूही भाजा वा मिर्द्र कर्याणा । व वायू: अमर्भाषायां वा जा पारास्वी या अही ॥ ३७ क्त भायादि॥ वृद्दान्णक ॥ अथ जिका ठ प्रे थवं नी जि ॥ करे वाका । । ठेवू प्रवास्त्र । -का क्रिक् छर्छ ॥ न्यानि न्याकानायः क्रिक्ष विश्वयर नामीग्रह नाम भाषानार्थ ॥गग्रा। त्मी अधः॥ वृतिः शायक यथाः छ०ण जिल्लावा जलक्षृत्री । शायण छ०ण अथा जिक्कृ जिल्लाकृति मुर्हि गृर्हि॥ भाष्रभण जरार भाषि स्तिन निक्र गृहान हेर ॥ भ॥ विश्वेन पूस्ति हत्वे पूर् मक्यमाहमनकर्ति ॥ त्योनकः॥ भानि भाव ह्यां व्याभीन अकृद्धिक माहरत् ॥ जिस्रेन् त्रुका रुद्दान् त्रुकानारधा ना द्यान ज्या ॥>४॥ त्योग्रज्य त्योनक वद्दारा वाद्यान विकल्थः ॥

निशामिन रेगं रियो ठाअत्य र में लाह्य का भारतिया त्याल्यात्वा त्यात्मात्य न्यानि नाय हर्वर सा पाणि पाय हत्न् विकूर्मण अ (यारा अअव:। यावद्वा का वर्ष वाव विक्षे व्यव एक विक् . जिस्त म्ह्तणे कृषा थ अरहेण भ्रामभाष्ठ दाए ॥ आस्कृते । जिस्ता धाण्या ॥ गास्कृत भागिभाव यजीनामुखरमाराम ॥भ। माध्कत्वर्भ छन्ताम कत्रामाय जलेगवह ॥ हत्वे मुन् मास्त्रे मास्त्रे अक्रक धक्र दी ॥२॥ जवानि नव जिक्न भी विचा धर्म कल्प ह ॥ किंव यक्ति वै वर्ग जिल्ला वे अनु त्वित्। भेड में अथर्थः ॥ आधुकरी हालास्त्रिका वाकाना भ्राव्या ॥ न हाम वर्षा किसे माहिलार् गर्वे कि॥ ॥ अर्थे विष्यामान भावां स्वातां से अतं स्वेदः॥ रव्यासि अभिकारः मूमान क्रिन भूष ॥६॥ विकूः॥ न जिक्रा विवासना न ह जिक्स प्रहि यात्। (आअकाव अभा िका ए आ ५ र्वं र काल्ल ॥८॥ आवार नः॥ विकायायुक्तीनाय अर्व भाषा स्वीतियो ॥ अवश्वा ह शृहा ह (आसमान असा भारत भारा विकारादी निदास ती जिकारनेय शत्येत्रः॥ त्यायितास १० खंडिका बैठधात १० तस्तिः॥ तायावात्ये श्रांद न्यान, त्रियासी स्विधा काल । अश्रांसाः शालान, चेल, आसासामा लिला त्रा ॥ िकान अक्षाकक अविवानि मूलं मूल ॥ अविद् र्यः क्नाला आजिआज अयमूल ॥ रे लियं किस्मी शर्व किसार किसार मा शासा क्षेत्र मा मारा में कारही सामा में जा

स्माका केक प्रार्थियात्। वालिनामः ॥ प्रवेदाश्चला भेटियाके प्रवेशकी वार्मित्र त्रमान्क कात्त्रने नार्य नास्त्र ॥ ११॥ युकायूकाम युक्कीन निर्माणी याष्ट्र मना॥ रीज समुक्रफान्त्रनामिणिकाविषिः॥ जिकार्यो प्रावित्मम्यास निन्धीसूली जू वृद्धिमान्। प्रात्म क्र खुर्भ अस्तानात्यः प्राविधार्ये क अध्य द्वण ॥ १० ॥ द्विष्ठीय अञ्चल पाञः पार्विधार्या राष्ट्रान रहेर ॥ जाठक मामि अक्षान आसीराम मन् भारत्। गात्ना जिल्लान दिन्देनात म्पूरान दिला ॥ उकी दिनस्न कृषा अर्थित प्रसा ॥ २६॥ अ०भूक स्रात्वनाथ जिक्का भारत पथा विश्वि । जाभुता छिभू त्या पृष्ठा मं भारत्य अवभा कृति ॥ भ । दो त्यसार्थ भन्नति ঞো: সাধুমাধুকর শুচি। আন্যিক্যানি তাপন্ তক্তিমুক্তি প্রদায়ক ॥ সাল সকেনা দায় পাছত मण्डल मिला न ल् ॥ रेडि॥ व्याक्रन नाम यथा॥ पेरा स्तम जू र्स्त्रन कर्यक (आक्रन जरहर्ष) व्यक्ता वित्तन व्राप्तन कर्षक अपन (वाक्रन गाम अ अही कृत्वन व्राप्तन कृष्ण अक्र कर्म जात् ॥ श्रेष्ठ प्राचारामात्व ॥ जित्योच जित्रमानिक मूचारेषेत जिन्हमा ॥ध्येषा द्वापण मं एद्द् प्राचामार्थी सुदेशक्। বাচ বিস্তা চাতাঞ্চাত্রিরেড় বিনিশ্চয় ॥ ১२॥ বিধ্যে সন্ত্রসুমণে কপারে পুরু বর্জনে॥ কালা भरात्युपृथिक चिकारेणेभथाहाद्वरार्गा अधिभ दिलागा। आविक्य विदासम्लाह विकाल र्णू वर्ष्माताए ॥ अवाव्छ विलक्षाति तार्व लिया वृत्व अत्यर ॥ २३॥ व्यक्त प्रत्रतिक्ष विकर

C. 3670

स्निक्ती: किष्ट्रमित्रः॥ न किक्रासि किष्ट्रम्लास् न सिसं, वालंति किष्टि। १९॥ एमासीर्वत्रा माकश्चा अक्षामा (अव वा ॥ वक कावा माडीएक ए प्रमीतन दिना यातः ॥ के ॥ कवाताक न स्थिति स्वर्शना मर्गनाम्याउः॥ अध्यक न रहत्वत विकामानार्थ भूरायः ॥२४॥ न कू क्षाना नेकान्त्रेव न शकार्यय केल्मणंद्रा मिक्रिक र्रेशनं ब्लाचा में नेसिर्रेश निर्देश के रेजि॥ किका प्रक्न विशि:॥ यथा अधा पमात्ना रामि पृथः मूक्म व न वाशक । एम आध्कती তিক্ষা মানদীত স্বাধিনাই।। ২৬। দৃষ্টা তিকা দৃষ্টি পূতা দাবু ক কর্মান্তিতা । দশ্রক দক্ষিণ মিজে তেত: স্কুরার বার্না ।। বুরু সাইরো ক্র প্রত দক্ষিণের করেন্স: ।। রে।। সাম্বরাসকরে কু कारक्षसम्मक्तिन्तु॥ अकारा अन्या होत नाताराम अन् भारत् ॥ रूम आणिक अने स स्थित सिमक अर्थे ॥ वृद्ध ॥ व्यक्ति मिल्डा स्था स्था स्था स्था स्था प्र अर्थे द्वा १० १० महिन्दि त्या मिला कि के में में कि अंच त्या कि कि कि कि कि कि कि कि मा मार्टी असे 11 है - 11 -विकृ धूताला। जिक्कान्ति अन् जिल्हाः अलिल न् इलोकतः । न्या जिका ध्या व्यक् भाटा अक करत जिल्ला १६४॥ अकार्यको ज वस्त्र अकारत थडा भागवाः॥ विदेशका जिल्ला मिनिया सम्प्र में में ति विद्या राष्ट्र ॥१००॥ वहारी अकारत माय मनाह मंत्र माय वाह म मेर्स्ट्रियाः स्राच्येषु क त्या, रावेत्व येव्ह् । १८३॥ राष्ट्र यक्ष्यायु १ स्रवास्थ्री

शिया ब्रिको ॥ अत्यात्र सम द्वार् युक्ता हालायने हत्त्। एट॥ अकृत्व तिश्व (तियू जिल्हे ति गृक्शामात ॥ पेक्वारिक्शामवार्थ । जक कर विमर्प्ताय ॥ ७७ ॥ तिकामात १ कृति वन स् जिर्के: आत्याकामाहिक ॥ यहि विके केव त्यात हिना का का मिरा मिरा मिर গোধারিক্রি:॥ মার্ক্য নাত্রি, সার্কি মার্ক্ মার্কি নাব্রক্রথে। স এফ স্কৈত, দরী ইঞ্ছত, রাত্র स्माद्व ॥ ७४ ॥ ज्येत ह गृर्भ्य निवाला जिस्ता गाउः॥ वूक मृण जामा वीज अर्वधामार्थ পদ্ধতি॥ ৩৯॥ খাবতো দ্র দ্রুর্ডিস্সাতাবন্ট্রেক্ষ সমা চরেए॥ মিক্ষম দ্যাবিক ভিক্ষুরা দ্যালা - अपन्य था: ॥ ४०॥ न्यकः अस्य भागानिक जिस्रा भित्क कियानिक । त्यात्म भाग भाका की - নিট্রান্ডো ন সুনার্বিশে (॥४॥। খোলিয়ার ন তিন্ধেত শ্রদ্ধাততি বিবর্জিত ॥ বাদ্যস্তাদি গুর্ ভিক্ষে দ্রন্থাতাজি পুরস্কৃতে ॥ ৪২॥ অভিসংখিতায়া ॥ ওদতামাসুভা ভিক্ষা পুরস্কান প্রকা দিতা ।। তোজা প্রদাসতির্বেনে অসি ধুমকুত কারিণ: ॥ ১৬॥ দ্যাত্রেয়: ॥ কুতে দেশ তাদেশ प्राया त्यवामा द्वाभारत कृत्य कर्षा त्र कृत्य कर्ता द्वी जाका दे के ले त्यम् प्रति ॥ १४॥ देकाम् नम् आराज्य न दिलाभवित्मर कृष्टिर । प्रमण नान्धान्तर न रहन आयेखर भून:॥४६।-সক্র হ দেলাবার স্থির নেধের মোর্থাও। মার্যক্ররসংক্ষের কর্মান্তর্গ সর্কর্ ॥ ৪৬॥ সাতার্ लाहार दिस्क छिकडिका कर्सा है गः॥ स क्यों छह् हमा साल साल साल मान कि कि है।। ४० के आमान्यं : ॥ देना वृत्वा देवा देवा देवा माम् भवा जिर्थ कर्म ॥ सकान्य दिस् दिल देक

व्याच विश्वीराजा ॥ वेडि । कामः ॥ व्यक्षार्जी व्याजम के किए आर्डमूला को नमाव्हिनः । इत्रोक्षा सो खरेच नामा स्मर् भर्थना ईंडा माला ॥४४॥ त्येका माला गुन्म गृह् ना यथा मण्यतः मध्यनगरि । याषुधानाः भिणा ४० १४ आक्षभाः भूतकमिनः। द्वाञ्च त्रमभन्ने अध्यक्षने तिविद्धिण ॥॥ प्रेंचालास्य अत्यामान्य अत्य भाक्ष्यमानित । कवृत्य वित्तानेता वर्षुल वार्श वस्त ॥ कर्ष र्णामानु भूतिने वाक्षनानियु अध्यन्निति। अन। वक्षाविकुण्य अवधी र्वायान यवह ॥ मत्त्रकार्के का कि कार के प्राप्त के प्रकार के प्राप्त के प्रक्षित का के प्रकार के प्र ल । श्वित रखन थः क्येर्क्स युक्तामि लिसं रहिए।। अशः मर्ग लाकन ह अएउपार्थ जियात्व। धन्य लाक्ष्म । क्षेत्र भावकार्य भावकार्य व्यवकार्य । प्रायम প্রোক্তি পার থতে: মাসুনর বার্দ্ধিক । তথ পার থাতিনা ভাষ্টে ন সুকাত্ত কর্তন ॥ ৬১ विमोर्ग अलग धाया भाषा भाषा भाषा अव अति। अया आत्रामाणि पुर्वे करता मिन्द्र प्राक्ति। गा जिल्ला आ कारते हा गाया के कि कि कि ग्री तिया के कारति हिंदी तिया के माभिन ॥६५॥ भक्षण वठाकी मुण्य कुछी जिन्द्र काविमात्रक त्रश्च वल्ली यम स्मिली गर्य भय कार्याम भागे जान वाराम पास भूगारा भर्ष मुक्त भागी भरा मिलाभगादि विन्दिन भाषा नि विश्वायाक भावाति अकानिजान भि भूरं खकानास्त ॥ वृक्षादक ग्रेशेवा थया विशिधानार भाव लाकाणि भक्तानि स्वामिक्त विश्व क्षेत्र स्वामिक स्वामिक स्वामिक

ञ्चलव (भाक्तिक नाज गाव: म, भेगरं मक्ति में वर नात, मार्थ मार्थ, भेसम् थिरंखा अपनी है। रसामकर्म जाय्यकः भागायदा र अरुक्ष । यह भाग गाव्य माने सामन सामारा स्वाहर्य है अन्मर् माथ ग्रीषाषु धाष्मता दिशि मूर्यकः। कर्षका जिस्ति धावपूर्व मूर्विका ॥ ए ५ नार्यक्रिक, भोक्रव्यथा। व्रमायामुचं अँचेव भीक्र त्रक्रिक वाथकः। त्राये शक्त हास्य ह्यात कामा मिकल भेव नारंशि ॥ २०॥ उस्य नवनायि ए आक नाव ग्रिक । वसक क नव দ্রক্ত তদর মাণ্সমূত্রতে ॥৬১॥ শৃত হালি তোজনাৎ প্রাণ্য্রত গ্রাক্ত ॥ লৈঠীনার্ম:॥ লবন ক सुन्न त्यात मुक्त लिल जलेवर । (लक्ष प्रमुक्त विविध व्यम् न जकार्य ॥४०॥ जितिक॥ स्मिन्नव नरने थळ पळ आग्रिकि केंजल । भवित्य भविताक्रल भक्ति प्रकार भिक्तिका ।। १५० असरमिति लिया: ॥ मुर्शादमं भूषः ठात्रं लयने कस्त्रन जमा। असर्वाः छिन सर्वे नर्थ न पू न्या कपाठन ॥ ४८॥ इस्रा प्यंस्य महार पर्या क्ष्यं न र्या क्ष्यं । यह प्या प्राकालो श्रीयं का श्रीयान्य अत्यक्षत्रा ॥ ५६॥ अकार्मावृत्वा जिक्ः भन्त्रार् त्यम हिमात्र्य । दर्भ भून भग्न भुक पिर्व भूक प्रा उथा॥ ७४॥ भाकादि वस्तृन भाग ग्रुन् छिकू न द्याछि॥ ४१॥ यथा विक्रम् भावित्यसाग्यमः দ্বিষট্বার প্রাবাতি মন্ত্রিত দশের পাক্র পার্যিত্য পাক গৃল্বো র্যান্স গীলাফার্য প টেए।। ইতি।। ততঃ শ্রী বিষ্ণবে নিবেক প্রণবেশ্বাক প্রকারেণার প্রান্তর ইস্টোদ্ক মাতিমন্ত্রি ज जिल्ला विकृभ्याल ॥ उठान वमन कृता अका जातन गारीएः॥ जाक आका मुणित्यन्

भक्ति स काल कामित्वः॥५४॥ जैकात भूकी भागता असा सि सुर अभा ठत्वर ॥ विवा युकीः अन्वाम् (थाभी म्ट्याक्रेक्ण कमाठन ॥४२॥ न श्वामर्ग म्यूम ७ व जिस्त्रा धर्मातर क्रिट ॥ प्रात्नन विधिना बुद्धा अर्थे शाना बुकी गर्डि: ॥ १.॥ त्यस तोस्वर्य आक्षा क्रिडर्य अपि याजनार ॥ येति॥ अय्यक्षा विच रेकात्मनज् ॥ अत्र अक्षत् । आ विकृ र्जाकात्मवा अव्यक्षत् । यव शाचा दिला पूर्वक व्या र त्र पार्स र्व लिम्बरण। १२॥ रेजि। आम्बर्स थिकि। यथा त्रभ्य न जाना जिसा सामा बुडी यु छ। त्वा क्रिक्षेभण्यतान्त्र सुर्वेन्त्र रहन यथा॥ यथः॥ त्याक्षित्र भनावत्वेत् बुक्यकाचिकादिश्व॥ मातीर खनेर भाग्यम् अक वर्गान भरत ॥ गणा भारक क्रम अभीरा उने छने। अनेत ॥ अखा धोत्वन वा पूर्वक अ पूर्वक क्रियणाभृज ॥ १४॥ अख र्जानू वचा कृषा वाङ्क भारते क्या पूर्वि॥ আজন হি সমাদায় ক্রিছ: সককরণতু ॥१८॥ দক্ষিণেন করেলৈর চিন্ময়েশান্তরাজনা ॥ খানান্ अ ट्राफ्न दूर्णिक्यावन् । व्याज्व । १४॥ (शेशां गृतः ॥ ट्याफ्न व्यन मान भूभवातः श्राङ ग्रवः। ज विद्वान्त्राकार्या क द्वित्रकान अग्रण। १९॥ आत्मा १ मन विधि कृता भाश भाषा द्राहि गानकः संचः। एक आसि भैना सन्धारी, क्षिती ग्रामक वर्दक्रकार ॥ वन्। त्रामी, शैरिय रेतर्दिनः डाक्यांतामने त्यारेतंता य मरेलार सक्रवित्य उद्धाला वसं क्रिया मान्ता य मार्याय मित्रा राशि न लामा अपना अमृत्यर्ग विना भूतिन नामीयान नित्र कि स्मा कर्मे ॥४॥ अभैन गरि लिए असे वर्ग प्राचारंग, एखेंद । लाके श्रंथ भुधाराया एक, व्यक्ता नरा। र

339

न दिन थः भ श्रेष्धादानाश्चन्य थादाः विवर्षन्य ए । याक्किता मिक यार्पाद स्वीयूर्य स्मृत्व विवर्षः শংলা সব্তথারাত সসম্পদোষোৰ বিষ্ণতে। সভা। সংক্রার স্ত্রে পণ্ডির তেন্ত্র। আভাদান ; গাত সংস্পর্ণা ব্রিস্থাসাৎ সর তোঁরাও। সর্শর্যা সনাস্থানাও পাপত সংস্থাত নুপাতী वः॥ এক শাফাসন পতিতালও পতিতার মিশ্রবাণা যাজনা ফাসনে যোকি সুত্যা বসন ভাজনে ॥১১ नवधायकतः त्योका न कर्यका ११कि: अव। व्यातिः भाग किल कर्या तमन ७एकका भ जिलेशन (छाड़ ॥ नरा। प्राक्तिक अरहेक भारत अवामिछः अवह अख्न प्राक्ति। एउ ज्वास्त्र स्वा शाभन त्या जिः अश्वत्यः अकृष्ठ । आत्मक मञ्जाना ग्रीयाए अभ्यूतिः भुज्ते ग्राम ॥-यभः॥ उम्क १० पृतं अभा मातः भना जत्यात्र । अजित्र क्रिण कृष्टा भौकि (मार्था न तिक्रले। यक गण्डा व्यक्तिया अविद्याना अव् त्याप्तता अत्व का नि करण भाव लास्यत व व्याज्ञास् ॥वेषि। देखितका कि से अभ्यू होः सना मूहिने ते दिषः। देला कर्षनी स्थान भक्ष गाक्षम द्धारि ॥ अथ काज भक्तिः॥ यहि भक्ति यम् युक्त भूवकी ठक्म छन ॥ निर्धारात्रात्त्व, देक्षते मामांत्रात्र पानवतंत्र, ११००।। प्रिट्याक, न प्रान्याता स्थिते व्यन्तिकः अर्। म्थारकार्नुक लायक नूका हासाम् गण म या ह धार्मिका जिसा ते वा एक किला विश्वाका विक्रीयाम् द्विषा ब्राह्मांग्रे हर्वे । श्री अश्रीता क्षित्रिमी स्क्री अन्वर्वे क्राय्ये क्रमा शाची जून र्ष वा म्दीत्वा मृजायानि ॥ ७। उन्कार क्रांकि एतं दिनातं गृह्ताति। आकारम हा गृत्य हात्र मियर्थ कान्यिक ज्या॥ ॥ दिशादि कथीन क्रांकिक व्या मिलक्र म्यान्ति।

बाए भन्ना अण्डानः काहिए क्रियः भूत्वा विभा वा गृत्व ॥ वा नानीया उनांपृत्व िक्र व यन् दा नारंग करहर। जक रीमाजू पानाही श्रुकता वस्तु विक्रिता ॥७॥ जमत्र तेन टाफक जूका ठाता भण ठावर । शु धर्मार धर्मा या वे भूक्षा त्यापिला जिया ॥१। अयोता अ जमान्क्र मा जिला अहि विगारिकाः॥ पृथक् कृषा ह धार्किका ख्रींबा आर्पात् अधरकेः॥४। वार्किताभव्य स्थका छ का (मामन्वा अति भी कृषिया प आकाम धल्यास पर अपक्षिण १००१ आखिका निर्मिण व्हर्ग जानुनी रफ्तिसम्याजिः॥ वकात्रभ्यूयान्यक जात्र विक्रोपि मृधिक ॥ १०१ इन कार्क तोराकः अकास व्ययन काम । जिल्ला पूर्वी याचि त्याचार आस्थानक अमा हरत्। ११। प्रकार याचि नात्रम्, ताल्या त्वितित अत्र त्य तायता, य तारक, रेखा प्रायात्रक, एखंद ११९॥ साम्रह्मात्र, অবিফ্রিকা তার্ নামত প্রদেশে। প্রফলানিত ছবারি র্থকার: অকার্ত্তি:। স্থানের। শিব লোৱত করি থার এবোর ।। বিপ্রবা মাহিলাল্য বিশ্বা হাত্রারাল্য হরেও। (সার সারস্থ (में छाजगिव)॥ श्रुकाक गर्मां कृषि कृषि र्युक्त र्वान वृशुमा ॥ हालालेगः व्यक्तिः अवृष्टे याजः नारः विभ्रय्यति। र्वतात्मिल माध्यति भर्वति भर्वति भर्वति विद्याताः ॥भा विद्याद्वाः नात भः अनुके यातः नाय विमर्प्रायए॥ म लाग्ने य गाय प्र प्रम जाता विशेष्ट ॥ ने मि िका इक्सेश् अमार गांवं: ॥

শাত হয় দাত তার সম্ভক্ষোল দাত আয়:। তাক্র দেশ দাত বারি বিমা দার প্রক্রিমান ॥ ।। वायु भूताल ॥ ना कार् भूगोरुल विद्यान् एक निर्धाय वळ गर। भर्गक माभवक्यामि भ पूक यामि राज्याप्र ॥ र॥ द्वाराजी यद्यायीति पूर्म प्राणासुन्य व । एका ए अर्क ध्यारज्ञ वासुन्य वर्त्रत्यम्यानः ॥७॥ जामुलान्यस्वत्थेव काथ्य भाव्य ठ त्यान्व १ कृषा त्यान्य वात्राहिक्यः स ग्रामकामि विकृषिक ॥ है॥ मिरा अध्यक गांत्र १६ किया क्लोक्स वा वा वा विक मा क्लोक - क ग्रेशना॰ माल नामि यहे ॥ दा शिष काम:॥ म्या श्री भाष्य मासान अध्यासिक लाहनाए। विठात्रम भतिकाभान्यकिः अक्षत्र भृक्षिण। विश्वता क्यून्कात्मका अस्ता क्यून्किति॥। यादिक एर्वेद्धात्मात में की कर्क स्थित करिता कार्ता ।।।। मिस्तर आणा नाराय वा एटा में के विस्तर कितिय यस मनाभी नराक अवविक्षिय ॥ म। भूगे भक्षां व्यां मुक्त वभाग वभा न गरे माठिरियायू त्या पूरक्ष ७३० कृष्ट्र विथिशत ॥ ना ने कि काउन मकामीन ॥ आयान क ॥ দিবসফাইথেতালে যদামন্যাত রাহি:॥ তমুজ নজমিতাত্ম ব নজ নিশিতোজন"॥) जास्त्रमा क्रिया क्यां यमा समाया दार्यः॥ रेडि॥ जायात्मायतात्र। यत्क पश्चिताः॥ जिन्न देशा रक्त प्रत्या सेन्या विवेदता हिलाः ॥ एकोक्ता ग्रेडनरंग काना ह्या कि हेर्स्य ॥ र अय धारा कि ण अक्त वर्ग ॥ काणिलः ॥ अला श्री अब् अं काला श्राजी विभवस सम्भए ॥ श्रान्त

अस्य इंक्ट्रजी हाम् नामानं में कितंत्रा ॥ ग्रा किलः ॥ ग्राम्सिक्टि हामारम्य विचा सीमः भ्रम ठात्र । यानमाना पिक कर्ना धाषाभण अभाठात् ॥ ।।। यक् ठ माति मिल्डे ॥ प्र क् मू जिल इक्षे विवासन क्राष्ट्रत्यह ॥ १॥ वास्त्रं क्रिक्ष रेवल तक के वे वासांत्रन । देवे वा वास रेविय त्यात्रेय, त्या भंत मार्ट ए १ मेरिया क्षिक्ष वे त्यात्रक ने वैक्षी प्राची मंग, प्रथं १ क्षेत्र प्राची स्व भीग्राम नूष्ट्वा यथ नास्ति पि ॥ आर्ड कृष्ट्र एमा जिक्कः कूर्याए समूर्य आवानः ॥ उ॥ आमर्प्य निविका भन्य, में से रेस वाम वष्टा अवद्रे, वा वंज, प्राप्त भ्रायं के प्रकालतः मता ते अभिनेत्र कुर्याए धोना मांचा मिल् ॥ प्रामायक अभाक्ष भान पृत्वी दिल प्रमा कांक्रेक ला धनस्य धानागामा सुकामणः॥ अफानाम र्यायेक्ट धार्गिकिय विशिग्त ॥ ॥ ठाकुल मन क्रिकें बार्क विन्मान स्मवह । मानस्म जिन्मानि वा नि भावस्क खान सन् ममार्॥ न॥-किन्धार्य कारण में के कि सारी सार प्राप्त मा अने स्वितंता में

कर् सार्माः॥ जात्म कर् भरेष्ट्रण गाहितः। जर् शिक्षाः। नत्य शिक्षिः॥ जात्महित कर्षिक्षां प्राणाः। कर् सार्व क्षेत्रक्ष्यां, कर्मकार्य गाहितः। जर्द शिक्षां भावति श्राणाः। कर्षे

CC-0. Mumukshu Bhaxara Bollection Digital Cove Garagin

